जनवरी-मार्च, अंक 5

वर्ष 2025

A Peer reviewed Journal

वितस्ता विमर्श

हिंदी भाषा,साहित्य, संस्कृति व समीक्षा को समर्पित

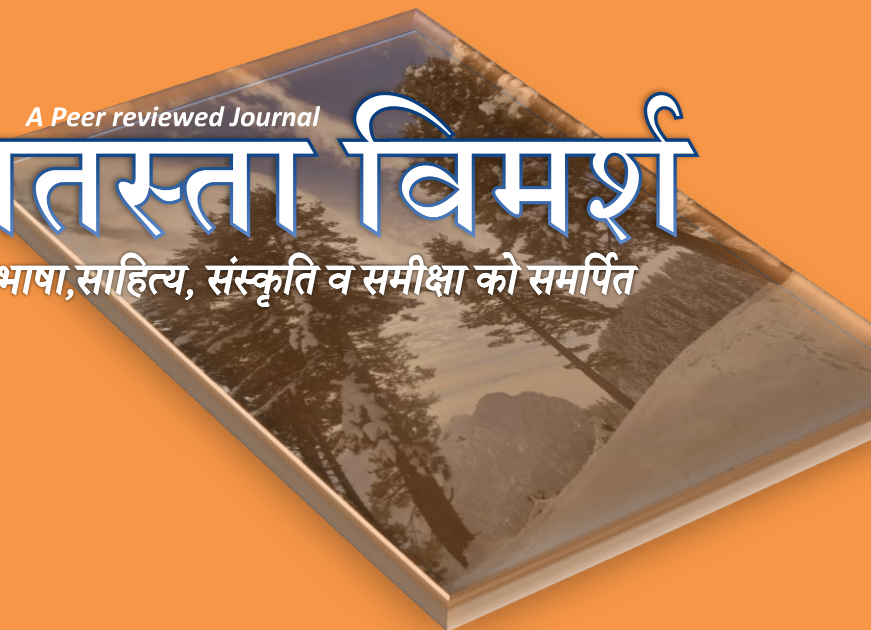

सम्पादक

डॉ. अमृता सिंह

वितस्ता विमर्श

हिंदी भाषा, साहित्य, संस्कृति व समीक्षा को समर्पित

संरक्षक
डॉ. सतीश विमल

सम्पादक
डॉ. अमृता सिंह

वितस्ता विमर्श एक अव्यवसायिक त्रैमासिक ई-पत्रिका है।
वर्ष में ४ अंक प्रकाशित होंगे
१-१५ अप्रैल तक जनवरी-मार्च अंक
१-१५ जुलाई तक अप्रैल-जून अंक
१-१५ अक्टूबर तक जुलाई-सितम्बर अंक
१-१५ जनवरी तक अक्टूबर-दिसम्बर अंक
प्रत्येक अंक के लिए रचनाएँ भेजने, दिशा-निर्देश तथा अन्य जानकारी www.vitasta-vimarsh.com पर

© *सर्वाधिकार सुरक्षित*

वितस्ता विमर्श अहिन्दी भाषा-भाषी क्षेत्र श्रीनगर, जम्मू व कश्मीर से प्रकाशित होने वाली प्रथम त्रैमासिक ई-पत्रिका है। अतः इस पत्रिका के साथ जुड़ें और हमें सहयोग दें। vitastavimarsh1@gmail.com पर अपनी रचनाएँ प्रेषित करें और अपने सुझावों से पत्रिका को समृद्ध करें।

वितस्ता विमर्श पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं व आलेखों की मौलिकता का दायित्व स्वयं रचनाकारों, लेखकों का है। रचनाओं व आलेखों में व्यक्त विचारों से संपादक व संपादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी प्रकार के विवाद में न्यायक्षेत्र केवल श्रीनगर, जम्मू व कश्मीर होगा।

सम्पादक

डॉ. अमृता सिंह

श्रीनगर, कश्मीर

email: amrita.ku26@gmail.com

Cell: 9622911777

सह सम्पादक

डॉ. मुदस्सिर अहमद भट्ट

श्रीनगर, कश्मीर

email: mudasirhindi@gmail.com

Cell: 9682593408

परामर्श मंडल

प्रो. ज़ोहरा अफ़ज़ल

प्रो. ज़ाहिदा जबीन

प्रो. कहकशां एहसान साद

श्री अनिल शर्मा जोशी

प्रो. संजय एल. मादार

प्रो. मुहम्मद मेराज अहमद

प्रो. विनोद कुमार तनेजा

प्रो. रुबी ज़ुत्शी

प्रो. मुहम्मद आशिक अली

प्रो. जय कौशल

प्रो. करण सिंह ऊटवाल

प्रो. महबूब सुबानी

सम्पादक मण्डल

डॉ. शगुफ्ता नियाज़

डॉ. नाइरा कुरैशी

डॉ. नरेश कुमार सिहाग

श्री विशाल कुमार

डॉ. सुशीला आर्या

डॉ. सब्ज़ार अहमद भट्टू

डॉ. रेखा सोनी

इस अंक में

सम्पादकीय-

वैचारिक खंड **08-18**

अंधविश्वास व पाखण्ड से मुक्त होकर कबीर की तरह निर्भीक व सत्यान्वेषी बनने में ही है वास्तविक आध्यात्मिकता- सीताराम गुप्ता

डॉ. भीमराव अम्बेडकर : महान युगदृष्टा एवं क्रांतिकारी समाज सुधारक -गौरीशंकर वैश्य विनम्र

इतिहास/विरासत खंड **19-25**

कश्मीर : एक सांस्कृतिक विरासत- मधु रानी

बदलता कश्मीर **26-34**

जी-20 की अध्यक्षता से जम्मू-कश्मीर का विश्व को सन्देश -विवेक मिश्र

विमर्श खंड **35-44**

समकालीन हिंदी कहानी में चित्रित विघटनशील समय -डॉ. शुभम् मोंगा

कथा खंड **45-55**

शन्नो का फैसला-पूजा गुप्ता

काव्य खंड **56-63**

राजकुमार कुम्भज की कविताएँ

महाराज कृष्ण भरत की कविताएँ

वितस्ता खंड **64-87**

मेरी कश्मीर यात्रा : एक कश्मीरायण- प्रो. प्रकाश शंकरराव चिकुर्डेकर

कश्मीर में शिवरात्रि- डॉ. शिबन कृष्ण रैणा

सम्पादकीय

भाषा केवल अभिव्यक्ति का माध्यम नहीं, अपितु संस्कृति की संवाहिका होती है। यह मनुष्य की बौद्धिक, भावनात्मक और सामाजिक अभिव्यक्तियों की वाहक होने के साथ-साथ समाज के समग्र ज्ञान और अनुभव को भी सहेजकर एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुँचाने का कार्य करती है। सभ्यता यदि किसी पुष्प के रूप में विकसित होती है, तो संस्कृति उसकी सुगंध होती है जिसमें उस समाज के श्रेष्ठतम मूल्य, सौंदर्य-बोध, जीवन-दृष्टि और नैतिकता समाहित होती है।

हर भाषा अपने भीतर उस समाज की स्मृतियों, परंपराओं, रीति-रिवाजों और मूल्यों को समेटे रहती है। लोकगीत, लोककथाएँ, मुहावरे, कहावतें और साहित्यिक कृतियाँ, यह सब एक भाषा की सांस्कृतिक संपदा को संजोए होती हैं। जैसे-जैसे भाषा का क्षरण होता है, वैसे-वैसे संस्कृति की जड़ें भी कमजोर होती जाती हैं। अतः भाषा और संस्कृति का संबंध परस्पर पूरक और गहन है।

संस्कृति किसी भी सभ्यता का आत्मिक पक्ष है। जहाँ सभ्यता भौतिक प्रगति और सामाजिक ढाँचे का प्रतीक होती है, वहीं संस्कृति उसमें निहित मानवीय मूल्यों, सौंदर्य-बोध और नैतिक चेतना की परिचायक होती है। इस संबंध में प्रसिद्ध आलोचक नामवर सिंह द्वारा जयशंकर प्रसाद के कथन को उद्धृत किया गया है-"संस्कृति सौंदर्य-बोध के विकसित होने की मौलिक चेष्टा है।" यह कथन संस्कृति की गहराई और उसकी मानवीयता को स्पष्ट करता है। हालांकि इतिहास में सभ्यताओं के संघर्ष (Clash of Civilizations) की घटनाएँ मिलती हैं, परंतु संस्कृति का स्वभाव मूलतः समन्वय और सामंजस्यकारी होता है। विभिन्न संस्कृतियाँ एक-दूसरे से संवाद स्थापित करती हैं, आदान-प्रदान करती हैं और एक साझा मानवीय विरासत का निर्माण करती

हैं। भारत जैसे विविधता-प्रधान देश में यह समन्वय सहज रूप में देखा जा सकता है, जहाँ अनेक भाषाएँ और संस्कृतियाँ मिलकर एक जीवंत राष्ट्र की रचना करती हैं।

भाषा और संस्कृति एक-दूसरे की अभिन्न सहचर हैं। भाषा के माध्यम से ही संस्कृति जीवित रहती है, विकसित होती है और आगे बढ़ती है। यदि हमें अपनी संस्कृति को सुरक्षित रखना है, तो अपनी भाषाओं की रक्षा करनी होगी, उन्हें प्रोत्साहित करना होगा और अगली पीढ़ियों तक पहुँचाना होगा। यही हमारी सांस्कृतिक उत्तराधिकारिता का आधार है और यही एक समृद्ध, नैतिक एवं संवेदनशील समाज की ओर अग्रसर होने का मार्ग भी।

सम्पादक
डॉ. अमृता सिंह
श्रीनगर, जम्मू व कश्मीर

कबीर जयंती के आयोजन की प्रासंगिकता:
अंधविश्वास व पाखण्ड से मुक्त होकर कबीर की तरह निर्भीक व सत्यान्वेषी बनने में ही है वास्तविक आध्यात्मिकता

-सीताराम गुप्ता

शिक्षा के व्यापक प्रचार-प्रसार के बावजूद आज पूरे विश्व को अंधविश्वास व पाखंडों ने बुरी तरह से जकड़ रखा है। तथाकथित आधुनिक व उच्च शिक्षित समाज भी इसके चंगुल से मुक्त नहीं। इसका विरोध भी कम नहीं होता। कुछ लोगों के लिए कर्मकाण्ड और अंधविश्वास बहुत अच्छा व्यवसाय है अतः वे किसी भी क़ीमत पर समाज को इससे मुक्त नहीं होने देना चाहते। जो लोग समाज से अंधविश्वास की समाप्ति करके समाज को नई दिशा देना चाहते हैं उनको अपनी जान तक से हाथ धोना पडता है। इसके अनेक प्रमाण हमारे सामने हैं। कबीर ने मध्य काल में अंधविश्वास और पाखण्ड का जितना विरोध किया वह अद्वितीय है। कबीर न केवल एक महान संत, कवि व चिंतक थे अपितु एक प्रखर क्रांतिकारी समाज सुधारक व आडंबर के घोर विरोधी भी थे। इसके लिए उन्हें सत्ता व मठाधीशों का कोपभाजन भी बनना पड़ा। धर्म-अध्यात्म के नाम पर प्रचलित आडंबर का कबीर ने डटकर विरोध किया। उन्होंने हिंदू व मुसलमान दोनों को उनके पाखण्ड के लिए फटकारा। उस समय के अनुसार यह एक अत्यंत क्रांतिकारी क़दम था जो आज भी संभव नहीं लगता। बोलकर तो देखिए किसी धर्म अथवा मठाधीश के आडंबरों व ज़्यादतियों के विरुद्ध। कबीर ने मूर्तिपूजा का भी स्पष्ट रूप से खंडन किया है। कबीर कहते हैं:

पाहन पूजे हरि मिले तो मैं पूजूँ पहाड़,
उससे तो चक्की भली पीस खाय संसार।

लेकिन विडंबना तो देखिए कि जिस कबीर ने मूर्ति पूजा का खण्डन किया आज लोगों ने अपनी स्वार्थसिद्धि के लिए उनके मंदिर बना कर उनकी मूर्तियाँ स्थापित कर दी हैं और उनकी पूजा भी करने लगे हैं। साईं बाबा के संदर्भ में भी यही बात कही जा सकती है। स्वयं कबीर के बारे में एक ऐसी भ्रांति भी आज तक जन-मानस में प्रचलित है जिसका किसी ने खंडन नहीं किया। पोंगापंथी तो खैर क्या खंडन करते विद्वानों ने भी नहीं किया। सब जानते हैं कि हिंदू और मुसलमान दोनों उनके शिष्य थे। हिंदू उन्हें हिंदू तथा मुसलमान उन्हें मुसलमान मानते थे। उनकी मृत्यु पर हिंदुओं ने कहा कि वे कबीर का दाह संस्कार करेंगे और मुसलमानों ने कहा कि वे उन्हें दफ़नाएँगे। जब उनकी मृत देह से चादर हटाई गई तो उनके शव की जगह पर फूलों की एक ढेरी मिली। हिंदुओं और मुसलमानों ने उन फूलों को आधा-आधा बाँट लिया। हिंदुओं ने अपने आधे फूलों का दाह संस्कार कर दिया और मुसलमानों ने आधे फूल दफ़ना दिए। ये बात अपनी जगह दुरुस्त है कि कबीर साहब हर बुराई के विरोधी तथा हिंदू-मुस्लिम एकता के पक्षधर थे लेकिन संसार का इससे बड़ा झूठ क्या होगा कि उनके शव कि जगह फूल मिले। यदि इस प्रकार के चमत्कारों का खंडन किया जाए तो दुकानदारी ख़राब होने का ख़तरा रहता है। इन चमत्कारों के बल पर ही तो भोली-भाली जनता को बेवकूफ बनाकर अपना उल्लू सीधा किया जा सकता है।

किसी भी दृष्टि से ये बात उचित प्रतीत नहीं होती वो भी एक सत्यान्वेषी के लिए। ऐसे चमत्कार सुने तो जाते हैं देखे नहीं जाते। यह संभव ही नहीं है फिर क्यों ऐसी अनर्गल बातों को साहित्य के ज़रिए प्रचारित-प्रसारित किया जाता है? इन बेतुकी बातों का खण्डन क्यों नहीं किया जाता? जहाँ पर मृतक का दाह-संस्कार करने की प्रथा है वहाँ दाह-संस्कार के बाद अगले किसी दिन फूल चुनने की रस्म होती है। फूल चुनना वास्तव में उन अस्थियों के चुनने को कहते हैं जो जलकर छोटी रह जाती हैं अथवा जलने से बच जाती हैं। उन्हें किसी पवित्र नदी या सरोवर में

प्रवाहित या विसर्जित कर दिया जाता है इस आशय के साथ कि इससे मृतक को मोक्ष की प्राप्ति होगी। हो सकता है कि उनके अस्थि-अवशेषों को जिन्हें फूल कहा जाता है हिंदुओं और मुसलमानों ने आधा-आधा बाँट लिया हो और हिंदुओं ने अपने आधे फूलों अथवा दग्धावशेषों को किसी नदी में प्रवाहित कर दिया हो तथा मुसलमानों ने आधे फूलों अथवा दग्धावशेषों को दफ़ना दिया हो।

जो भी हो कोई शव कभी फूलों में परिवर्तित नहीं हो सकता। इस प्रकार की अनर्गल बातों से आप समझते हैं कि कबीर का रुतबा बढ़ेगा? कभी नहीं। कबीर तो वास्तव में वीतरागी हो चुके थे। वो राग-द्वेष, लाभ-हानि, सुख-दुख व जीवन-मरण से ही नहीं मोक्ष अथवा बंधन से भी निरपेक्ष हो चुके थे। कबीर का जन्म काशी में हुआ था और वहीं रहते थे। कहते हैं जो काशी में मरता है उसे मोक्ष की प्राप्ति होती है। लोग अपने अंतिम समय में इसी तथाकथित मोक्ष की आकांक्षा लिए काशी में आ बसते हैं। कबीर अपने अंतिम दिनों में काशी छोड़कर मगहर में जा बसे थे। उस मगहर में जिसके बारे में प्रसिद्ध है कि वहाँ जो मरता है उसको मुक्ति नहीं मिलती। कबीर इस भ्रम को तोड़ने के लिए ही अपने अंतिम समय में मगहर में जा बसे। अपने इस क्रांतिकारी कृत्य के द्वारा उन्होंने जो संदेश दिया क्या हमने उसे आत्मसात किया? क्या आज का शिक्षित वर्ग भी उसको महत्त्व देता है? यदि नहीं तो कबीर पर शोध करने का भी कोई औचित्य नहीं दिखलाई पड़ता।

कबीर पुनर्जन्म के लिए नहीं, वर्तमान जन्म में सुधार के लिए चिंतित व प्रयासरत थे। उनकी मृत्यु से जुड़े चमत्कारी प्रसंग उनकी जीवन भर की साधना को निरर्थक व उनकी महत्ता को कम कर देते हैं। एक सत्यान्वेषी का मूल्यांकन करते समय सत्य की उपेक्षा कैसे की जा सकती है? कबीर के साहित्य की चर्चा करते समय ही नहीं उनके जीवन व मृत्यु के संबंध में चर्चा करते समय भी हमें अत्यंत संतुलित, वैज्ञानिक व व्यावहारिक दृष्टिकोण का परिचय देना चाहिए। कबीर जो सैकड़ों वर्ष पूर्व कह गए वो आज भी हमारी समझ में क्यों नहीं आता? यदि हम

आज भी अंधविश्वास और पाखंड में लिप्त हैं तो ऐसे में कबीर के दोहे रटने का कोई औचित्य नहीं। कबीर जयंती के आयोजन की प्रासंगिकता इसी में है कि हम न केवल कबीर की तरह निर्भीक व सत्यान्वेषी बनें अपितु कबीर को ठीक से समझकर स्वयं को अंधविश्वास व पाखण्ड से मुक्त कर स्वयं में वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास करें।

सीताराम गुप्ता,

ए.डी. 106 सी., पीतमपुरा,

दिल्ली - 110034

मोबा0 नं0 9555622323

email : srgupta54@yahoo.co.in

डॉ. भीमराव अम्बेडकर : महान युगदृष्टा एवं क्रांतिकारी समाज सुधारक

-गौरीशंकर वैश्य विनम्र

डॉ. बाबा भीमराव अम्बेडकर आज भी हर उस प्राण में बसते हैं, जो सामाजिक शोषण की व्यवस्था से दमित है। हर वह वर्ग, जिसने सदियों संताप झेला है, चाहे वह शूद्र हो या नारी, वे बाबा साहेब के स्वाभिमान को हृदय में अंकित किए रहते हैं। प्रायः यही श्रेष्ठ माना जाता है कि इतिहास में लंबे समय से चली आ रही कुरीतियों और सामाजिक विभाजन जैसी समस्याओं को सुलझाने के लिए नेतृत्व का उदय समाज के भीतर से ही होना चाहिए। इस दृष्टि से डॉ भीमराव अम्बेडकर को आधुनिक भारत में उभरे एक ऐसे नेतृत्व के प्रत्यक्ष उदाहरण के रूप में देखा जा सकता है।

डॉ. भीमराव अम्बेडकर का जन्म 14 अप्रैल, 1891 को मध्य प्रदेश में स्थित महू नगर सैन्य छावनी में हुआ था।वे पिता रामजी मालोजी सकपाल और माता भीमाबाई की संतान थे। महार (दलित) जाति में जन्मे अम्बेडकर को अपने प्रारम्भिक जीवन में ही जाति व्यवस्था के कारण होने वाले भेदभाव का कटु अनुभव हो गया था। उनका बचपन का नाम 'भीवा'था। पहले आम्बडेवकर उनका उपनाम उनके 'आम्बडवे' गाँव से संबंधित था। बाद में एक देवरुखे ब्राह्मण शिक्षक कृष्णा केशव आम्बडेकर, जो उनसे बहुत स्नेह रखते थे, वे उनके नाम से आम्बडवेकर हटाकर अपना सरल अम्बेडकर उपनाम जोड़ दिया।

अपनी मेहनत और लगन से बम्बई विश्वविद्यालय एवं तत्पश्चात अमेरिका के कोलम्बिया विश्वविद्यालय से उच्च शिक्षा प्राप्त करके जब वे भारत वापस लौटे, तो रूढ़ियों से जकड़े भारतीय समाज एवं सदियों से उन रूढ़ियों का भार ढो रहे दलित समाज के उत्थान के लिए वे कृतसंकल्प थे। जाति-उन्मूलन के आंदोलन को एक नया आयाम देकर, आजादी के बाद भारतीय संविधान के रूप में भारतीय जनमानस के लिए एक प्रगतिशील संविधान की नींव रखकर, वे राष्ट्र निर्माताओं की प्रथम कोटि में पहुँच गए।

राष्ट्रीय एकता के पक्षधर

डॉ. अम्बेडकर सदैव देश को एक राष्ट्र बनाने हेतु आपसी सामंजस्य की बात करते रहे। उनका मत था, आज हम विभिन्न खेमों में बँटे हुए हैं---, मुझे विश्वास है कि समय और परिस्थितियों के आने पर संसार में कोई भी इस देश को एक बनाने से नहीं रोक सकता है और एक दिन हम लोग किसी न किसी रूप में संगठित ढंग से रहेंगे। उनका मत था- "सभी भारतीय यह भावना पैदा करें कि हम सब भारतीय हैं। यही सबका ध्येय होना चाहिए। अलग प्रांत की बात तथा धर्म और संस्कृति के आधार पर देशभक्ति का स्वर अलापना मेरी दृष्टि से अपराध है।"

उन्होंने राष्ट्रवादियों को पूर्वाग्रहों से मुक्त होकर एक राष्ट्र बनाने का सुझाव दिया। उनके राष्ट्रवाद में जाति, घृणा, शत्रुता की भावना तथा संकुचित मनोवृत्ति हेतु कोई स्थान नहीं है। उनकी मान्यता के अनुसार "राष्ट्रवाद मानवता के लिए लाभदायक या हानिकारक है, यह केवल जोर देने की भावना पर आधारित है। "उनकी राष्ट्रीय भावना दृढ़ और गंभीर थी, इसलिए कुछ लोगों ने उनको राष्ट्रविरोधी कहना प्रारम्भ कर दिया, परन्तु वे अपने सोच से डिगे नहीं और उन्होंने अपनी राष्ट्रवाद की भावना का उदय, उन लोगों की आस्था के साथ किया। जो निर्धन, शोषित एवं अछूत थे।

महान समाज सुधारक

डॉ. अम्बेडकर स्वतंत्रता संघर्ष के समय से ही इस तथ्य से परिचित थे कि एक सुदृढ़ राष्ट्र के निर्माण के जातिवाद, साम्प्रदायिकता और सत्तावाद से मुक्ति आवश्यक है। वे सामाजिक-आर्थिक विषमता के उस विषैले स्वरूप से भी परिचित थे, जिसके कारण विभाजनकारी शक्तियाँ विकास में रोड़ा बनती हैं। उनका स्पष्ट मत है -

"दार्शनिक दृष्टि से राष्ट्र को एक इकाई मानना तो ठीक हो सकता है, लेकिन सामाजिक दृष्टि से ऐसा नहीं हो सकता, क्योंकि राष्ट्र अनेक वर्गों का समूह है, यदि राष्ट्र की स्वतंत्रता को वास्तविक रूप देना है, तो उसमें रहने वाले विभिन्न वर्गों की स्वतंत्रता भी कायम रखनी चाहिए, मुख्यतः उन लोगों की, जिनको निर्धन, पतित एवं अछूत माना जाता है।।"

एक समाज सुधारक के रूप में अम्बेडकर ने कबीर और ज्योतिबा फुले की परम्परा को आगे बढ़ाया। छुआछूत के उन्मूलन के लिए संस्थागत एवं व्यक्तिगत प्रयासों ने उन्हें क्रांतिकारी का कलेवर प्रदान किया ।वे जीवनपर्यंत अस्पृश्यता के विरुद्ध मुखर रहे। उनके द्वारा अनेक महत्त्वपूर्ण कानूनी प्रयास तो हुए ही, जनसमूह में इस विषय में पर्याप्त जागरूकता उत्पन्न हुई।

दलित वर्ग में राजनीतिक जागृति का प्रयास

दलित वर्ग में राजनीतिक चेतना जगाने एवं उन्हें संगठित करने के प्रथम प्रयास के रूप में ही 'बहिष्कृत हितकारिणी सभा 'की नींव 20 जुलाई, 1924 को बंबई में रखी गई। वहीं से पहली बार यह नारा बना- 'पढ़ो- पढ़ाओ, शिक्षित बनो, संघर्ष करो, संगठित हों।' इसके अतिरिक्त 'मूकनायक', 'बहिष्कृत भारत 'नामक पत्रिकाओं का प्रकाशन प्रारम्भ करके उन्होंने समाज सुधार कार्यक्रम को और विस्तृत आयाम दिया। वे न केवल जातिवाद से घृणा करते थे, अपितु साम्राज्यवादी इतिहास द्वारा 'बाँटो और राज करो 'की नीति का भी विरोध करते थे।

कविवर विनोद दास ने अछूतों के साथ किए जा रहे दुर्व्यवहार की पीड़ा को इन शब्दों में व्यक्त किया है-

"उसके छूते ही चीजें बदल जाती हैं
अकस्मात्
पेय जल बदल जाता है अपेय जल में
घूरे में फेंकने के लायक हो जाती है
स्वादिष्ट रोटी
जब गलती से छू लेता है वह कोई बर्तन
पड़ जाती है उसे राख से माँजने की जरूरत"

डॉ. अम्बेडकर ने समाज के शक्तिशाली वर्ग द्वारा पोषित इस सिद्धांत को चुनौती दी कि शूद्र आक्रमणकारी आर्य जाति द्वारा पराजित जाति थी। इस प्रकार दलितों में राजनीतिक चेतना एवं उन्हें संगठित करने का स्वाभिमान जगाया और समाज सुधार के अनेक कार्यक्रमों द्वारा विचार- क्रांति की दिशा में भी भगीरथ-प्रयास किए।

दलितों की आधुनिक शिक्षा-दीक्षा पर जोर

अम्बेडकर ने दलितों के लिए कानून द्वारा शिक्षा पाने पर बल दिया। आधुनिक शिक्षा-दीक्षा और विश्व के श्रेष्ठतम संस्थानों से प्राप्त अनुभवों से अम्बेडकर के मन में आधुनिकता के सकारात्मक प्रभाव के प्रति अत्यंत सम्मान उत्पन्न कर दिया था। उनका मानना था कि एक स्वस्थ राजनीतिक तंत्र में कानून के सकारात्मक हस्तक्षेप द्वारा ही सदियों से शोषित समाज को शोषण से मुक्त किया जा सकता है। इसके लिए उन्होंने अनेक सरकारी समितियों, जिनमें 1918 से 1919 के बीच साउथबोरो समिति, वर्ष 1928 में साइमन कमीशन सम्मिलित हैं,तथा 'महाड सत्याग्रह 'जैसे राजनीतिक कार्य भी जारी रखे।

प्रथक निर्वाचन की माँग

तत्कालीन हिन्दू समाज के एक बड़े वर्ग के सुधार-विरोधी दृष्टि से खिन्न होकर ही अम्बेडकर ने शूद्रों हेतु 'पृथक-निर्वाचन 'की माँग रखी, जिसे वर्ष 1932 में अँग्रेजों द्वारा मान लिया गया,किन्तु महात्मा गांधी के विरोध और अम्बेडकर से अनुरोध करने पर उन्हें अपनी माँग से पीछे हटना पड़ा। इस संबंध में 'पूना एक्ट 'पर समझौता हुआ, जिसके द्वारा दलितों को हिन्दू समाज के अंतर्गत ही 'तय-प्रतिनिधित्व 'प्राप्त हुआ।

महान युगदृष्टा

जातिवाद एवं अस्पृश्यता के विरुद्ध अम्बेडकर समाज सुधारक के रूप में अनेक मोर्चों पर डटे रहे। उनका बहुआयामी व्यक्तित्व क्रांतिकारी था, साथ ही वे सम्पूर्ण समाज एवं राष्ट्र के हित में निरंतर सोचने एवं प्रयासरत रहने वाले युगद्रष्टा भी थे।

प्रगतिशील विचारक ने दिया भारतीय संविधान

डॉ. अम्बेडकर के प्रगतिशील विचारों का सबसे प्रत्यक्ष उदाहरण भारत का संविधान है। उनके नेतृत्व में संविधान सभा ने अपने समय का सबसे प्रगतिशील संविधान निर्मित कर गैर-बराबरी आधारित सामाजिक ढाँचे को नष्ट किया एवं एक समतामूलक समाज की स्थापना के स्वप्न को साकार किया। भारतीय संविधान ने न केवल विश्वभर के लोकतंत्र। मानवता तथा अन्य उदार मूल्यों को अपनाया, अपितु

भारतीय सामाजिक व्यवस्था के अनुरूप उन्हें नवीन रूप दिया। प्रख्यात राजनीतिशास्त्री ग्रैनविल आस्टिन ने भारतीय संविधान को प्राथमिक रूप से समाज के स्वप्न को समर्पित एक दस्तावेज माना है। भारतीय संविधान ने तमाम विविधताओं और भिन्नताओं के बाद भी भारत को एक सक्षम राष्ट्र के रूप में उभरने में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उन्होंने संविधान रचना के समय ही स्पष्ट संकेत कर दिया था कि स्वयं संविधान अपने आप में कुछ नहीं कर सकता। उसकी पालना करने वालों की गुणवत्ता पर सब कुछ निर्भर करेगा। इस दृष्टि से आज मंथन की आवश्यकता है कि क्या इस देश में संविधान की शतप्रतिशत पालना हुई है? राजनीति या बौद्धिक चर्चा के समय ही नहीं, अपितु वोट देते समय भी बाबा साहेब की याद आनी चाहिए।

व्यवधानों पर विजय

बाबा साहेब को अपने कार्य में अनेक व्यवधान भी झेलने पड़े। विश्वभर के संविधानों के प्रावधानों की समीक्षा कर उनमें से अनेक को भारतीय स्थिति के अनुरूप संविधान में सम्मिलित करने पर उन्हें पश्चिम का अंधभक्त तक कहा गया। दूसरी ओर हिन्दू कोड बिल, जिसे आज हिन्दू समाज में हुए सुधार में सर्वाधिक महत्वपूर्ण सुधार माना जाता है, प्रस्तावित करने पर अत्यंत विरोध का सामना करना पड़ा था। हिन्दू कोड बिल के विषय पर उन्होंने पीछे हटने की अपेक्षा मंत्रिमंडल से त्यागपत्र देना अधिक उचित समझा।

आधुनिक भारत के निर्माता

अम्बेडकर के कई अन्य विचारों की झलक हमें आधुनिक भारत में देखने को मिलती है। वे कृषि को भारतीय राज्य की प्रथम जिम्मेदारी के रूप में देखते थे। उनकी दूरदृष्टि ने भारत को खाद्य उत्पादन में आत्मनिर्भर बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इसी प्रकार भूमि सुधार, निम्न आय वर्ग को आयकर से बाहर रखना, स्थिर मुद्रा एवं मुक्त बाजार, जनसंख्या नियंत्रण आदि से संबंधित विचार भारतीय राजनीति एवं अर्थव्यवस्था के आधार बने।

तुष्टीकरण का किया विरोध

डॉ. अम्बेडकर मानते थे कि तुष्टीकरण की नीति ऐसी प्रक्रिया है, जो राष्ट्र को समृद्ध बनाने के स्थान पर कमजोर करती है। वे राष्ट्रहित में सही और पक्षपात रहित निर्णय के पक्षधर थे। इस नीति से कमजोर व्यक्ति या समुदाय को अन्याय का शिकार होना पड़ता है। वे कहते हैं- "तुष्टीकरण की नीति का अर्थ होता है अतिक्रमण करने वाले को खरीद लेना। उसके अनैतिक कार्यों में सहयोग देना और उन बेगुनाह लोगों की उपेक्षा करना, जो उसकी बातों के शिकार होते हैं।"

वे आरक्षण को वैशाखी मानते थे और दलितों को योग्य, कुशल एवं सम्मानपूर्वक जीवन जीने योग्य बनाना चाहते थे।

हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने के थे पक्षधर

डॉ. अम्बेडकर के अनुसार "भाषाओं की भिन्नता ने राष्ट्रीयता को आघात पहुँचाया है। इस भिन्नता ने आपसी भेदभाव, घृणा तथा अन्य राजनीतिक बुराइयों को बढ़ावा दिया है। यह स्वाभाविक है कि व्यक्ति उसके साथ मिलना- जुलना पसंद नहीं करते, जिनके साथ वे बात नहीं कर सकते।" वे मानते थे कि एक भाषा लोगों को एकत्रित करती है, वहीं दो भाषाएँ उनको विभाजित करती हैं। यदि सभी भारतीय लोग एक होना चाहते हैं और एक सामान्य संस्कृति का विकास भी करना चाहते हैं, तो उन सबका कर्तव्य है कि वे हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाएँ।

डॉ. अम्बेडकर के राष्ट्रवादी विचारों की प्रासंगिकता आज भारतीय राजनीति के लिए कितना महत्व रखती है, यह सभी जानते हैं। आश्चर्य की बात यह है कि अम्बेडकर की इस अवधारणा के विरुद्ध सत्ता के शिखर तक पहुँचाने के लिए आज अनैतिक और भ्रष्टाचार में लथपथ व्यक्तियों को राजनीति में खोज-खोज कर सामने लाया जा रहा है। वास्तविक लोकतंत्र की स्थापना हेतु राष्ट्रहित में उनके सिद्धान्तों को हृदय से अंगीकार करने की महती आवश्यकता है।

6 दिसंबर, 1956 को भारत के इस महान सपूत एवं दलितों के उद्धारक का निधन हो गया। उनकी उपलब्धियों एवं मानवता के लिए समर्पण को देखते हुए भारत सरकार ने वर्ष 1990 में उन्हें मरणोपरांत देश के सर्वोच्च नागरिक सम्मान "भारत रत्न "से सम्मानित किया।

प्रसिद्ध दलित कवि ओम प्रकाश वाल्मीकि ने डॉ भीमराव अम्बेडकर के चिन्तन को निम्न काव्यपंक्तियों में सजीव चित्रित किया है-

"यदि तुम्हें
पुस्तकों से दूर रखा जाए
जाने नहीं दिया जाए
विद्यामंदिर की चौखट तक
ढिबरी की मंद रोशनी में
कालिख पुती हुई दीवारों पर
ईसा की तरह टांग दिया जाए
तो तुम क्या करोगे?"

डॉ. अम्बेडकर एक सच्चे राष्ट्रवादी, क्रांतिकारी समाज सुधारक, कुशल विधिवेत्ता, लोकप्रिय भारतीय बहुज्ञ, विद्वान अर्थशास्त्री, समर्पित राजनीतिज्ञ, उत्कृष्ट लेखक, शिक्षाविद्, एवं महान युगदृष्टा थे। उन्होंने अन्याय, छुआछूत. शोषण तथा ऊँच-नीच के विरुद्ध जीवनभर संघर्ष किया। उनके महनीय योगदान को भारतीय इतिहास कभी भुला नहीं पाएगा।अम्बेडकर की विचारधारा पूरी मानवता का कल्याण करती रहेगी, उनका जीवन हम सबके लिए अनुकरणीय है। बाबा साहेब की पावन स्मृति को कोटि-कोटि नमन।

-गौरीशंकर वैश्य विनम्र
117 आदिलनगर, विकासनगर
लखनऊ 226022
दूरभाष 09956087585

कश्मीर : एक सांस्कृतिक विरासत

-मधु रानी

संस्कृति के अन्तर्गत किसी भी देश या समाज में परम्परा से चले आ रहे आचार-विचार, रीति-रिवाज, खान-पान, रहन-सहन, जीवन पद्धति, संस्कार, नैतिकता, ज्ञान, कला, संगीत, वास्तुविज्ञान, शिल्पकला, दर्शन, कानून तथा समाज में सदस्य के रूप में मनुष्य द्वारा अर्जित अन्य क्षमताएं सम्मिलित होती हैं। संस्कृति हमारे मनोरंजन एवं आनन्द प्राप्त करने के साधनों में, धार्मिक कार्यों में और साहित्य में भी दृष्टिगोचर होती है। भौतिक एवं अभौतिक संस्कृति के दो प्रकार हैं। जो विषय हमारी सभ्यता और भौतिक पक्षों जैसे हमारी वेशभूषा, खान-पान, रहन-सहन से संबंद्ध होते हैं वह भौतिक संस्कृति के अन्तर्गत आते हैं। हमारे विचार, विश्वास, भावनाएँ, आदर्श का संबध अभौतिक संस्कृति से है। डॉ. देवराज के अनुसार, "सभ्यता का आन्तरिक प्रभाव संस्कृति है। सभ्यता समाज की बाह्य व्यवस्था का नाम है। संस्कृति व्यक्ति के अन्तर के विकास का नाम है।"[1]

सभ्यता के आदिकाल से अपने नैसर्गिक प्राकृतिक सौन्दर्य, सुरम्य, भौगोलिक स्थिति, झील-झरनों, सुन्दर शालीन लोगों एवं सांस्कृतिक विरासत के लिए कश्मीर देश-विदेश में प्रसिद्ध है और हमेशा चर्चा का विषय रहा है। यह क्षेत्र इतिहास, संस्कृति, सभ्यता, कला, भाषा, साहित्य और दर्शन की दृष्टि से समृद्ध रहा है। शताब्दियों से कश्मीर कवियों, साहित्यकारों तथा कलाकारों के आकर्षण का केन्द्र रहा है। विभिन्न धर्मों के परस्पर मेल के परिणामस्वरूप यहाँ मानवता और धर्मनिरपेक्ष संस्कृति का विकास हुआ। कश्मीर की सांझी संस्कृति के विषय में बीसवीं सदी के महान कश्मीरी कवि गुलाम अहमद मजहूर का कहना है, "सिंधु नदी में स्नान कर मानसबल झील में ध्यान कर हरमुख पर्वत पर ईश्वर का दर्शन कीजिए।

आप सभी कश्मीरी एक ही धरती के हैं। संस्कार कभी एक-दूसरे को अलग नहीं करता। मुसलमान दूध है तो हिन्दू चीनी हैं। दूध और चीनी को मिलाकर स्वाद लीजिए। हिन्दू नाव नियंत्रण करें और मुसलमान पतवार चलाएं। इस तरह हमारी नाव आनंदपूर्वक तैरे।"[2]

कश्मीर भारतीय उपमहाद्वीप के उत्तर-पश्चिमी भाग में स्थित केन्द्र शासित प्रदेश जम्मू-कश्मीर का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। यह उत्तर भारत में हिमालय पर्वत श्रृंखला के सबसे ऊँचे हिस्से में विद्यमान है। अनिर्वचनीय शब्दातीत, मुग्ध करने वाले अप्रतिम प्राकृतिक सौन्दर्य के कारण कश्मीर को 'भारत का स्विट्ज़रलैंड', 'धरती पर स्वर्ग' और 'पीर वैर अर्थात् आध्यात्मिक गुरूओं की भूमि' कहा जाता है।

जम्मू-कश्मीर पहले एक राज्य था और इसके तीन संभाग थे। जम्मू, कश्मीर और लद्दाख। इसकी सीमा 6 देशों से लगती थी और यह राज्य सामरिक और सुरक्षा की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण रहा है। किन्तु 5 अगस्त 2019 को भारतीय संसद ने जम्मू-कश्मीर और लद्दाख को दो अलग-अलग केन्द्र शासित प्रदेश घोषित कर दिया। इसके साथ ही जम्मू-कश्मीर को विशेष दर्जा देने वाले भारतीय संविधान के अनुच्छेद 370 और 35ए को भी समाप्त कर दिया।

वर्तमान में जम्मू-कश्मीर में मुख्यता दो संभाग हैं- जम्मू और कश्मीर। दोनों क्षेत्र भौगोलिक पृष्ठभूमि, रीति-रिवाज, संस्कृति, वातावरण, धर्म, वेशभूषा, खान-पान एवं भाषाओं की दृष्टि से भिन्नता रखते हैं। ग्रीष्म ऋतु में जब जम्मू में अत्यंत गर्मी होती है, वहीं तब कश्मीर का तापमान ठण्डा रहता है। सर्दी के मौसम में तो कश्मीर के अधिकतर जिले बर्फ की चादर से आच्छादित रहते हैं। दोनों संभागों की भाषाएं भी भिन्न-भिन्न हैं। कश्मीर में मुख्यता कश्मीरी और जम्मू में डोगरी भाषा बोली जाती है। साहित्यिक दृष्टि से भी दोनों क्षेत्र समृद्ध हैं। जम्मू-कश्मीर सांझी संस्कृति और राष्ट्रीय एकता का विशिष्ट उदाहरण है। उर्मिलेश कहते हैं, "कभी यहां संस्कृत और प्राकृत के रचनाकारों ने अपने सृजन-कर्म से समाज को प्रभावित किया तो कभी यहां सूफियों-

संतों की वाणी ने लोगों का मार्गदर्शन किया। बौद्ध-दर्शन और चिंतन की एक समृद्ध परम्परा ने भी कश्मीरी समाज और इसकी मनीषा को नया परिप्रेक्ष्य दिया।"[3]

कश्मीर की संस्कृति से तात्पर्य यहां की परम्पराओं, सभ्यता एवं संस्कृति से है। कश्मीर की बहुआयामी संस्कृति मध्य एशियाई के साथ-साथ दक्षिण एशियाई संस्कृति से प्रभावित है। यह क्षेत्र अपनी सांस्कृतिक विरासत और प्राकृतिक सौन्दर्य के लिए विश्व भर में प्रसिद्ध है। यह हिन्दू, मुस्लिम, सिख एवं बौद्ध दर्शन के मिश्रण से एक संपूर्ण संस्कृति का रूप लेती है जो सहिष्णुता और मानवतावाद के मूल्यों पर आधारित है। इस संस्कृति के सम्मिलित रूप को कश्मीरियत कहा जाता है। अशोक कुमार पाण्डेय लिखते हैं, "इतने लम्बे इतिहास में साथ रहते और आक्रान्ताओं का अत्याचार बर्दाश्त करते दोनों कौमों में एक विशिष्ट तरीके की सहजीविता विकसित की थी जिसे कश्मीरी राष्ट्रवाद के उभार के दौर में अक्सर कश्मीरियत कहा गया, एक ऐसी स्थिति जहाँ कश्मीरी अस्मिता प्रमुख हो जाती है और धार्मिक अस्मिता गौण।"[4]

कश्मीर में निवास करने वाले लोगों का विशेष प्रकार का पहनावा, कश्मीरी खान-पान, उनकी भाषा, सांस्कृतिक विरासत, नृत्य एवं संगीत, पश्मीना शॉल की बुनाई (भौगोलिक संकेतक प्रमाणित) विशेष किस्म की कालीन बनाने की कला एवं सूफियाना कश्मीरी पहचान कश्मीर की संस्कृति के महत्वपूर्ण तत्व हैं।

समाज और साहित्य का अन्योन्याश्रित संबंध होता है। समाज के नवनिर्माण में साहित्य की पारदर्शिता महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। साहित्य में समाज का प्रतिबिम्ब दिखाई देता है। साहित्यकार सामाजिक प्राणी होने के कारण सामाजिक परिस्थितियों से प्रभावित होकर साहित्य सृजन करता है।

प्राचीनकाल से कश्मीर की धरती संस्कृत भाषा एवं संस्कृत साहित्य की प्रमुख केन्द्र रही है। मूलत: संस्कृत के अधिकतर प्रसिद्ध विद्वान इसी भूमि की उपज हैं। परम्परागत रूप से कश्मीर का साहित्य संस्कृत में था और इस पर शैव दर्शन का विशेष प्रभाव रहा है। कश्मीर संतों, संस्कृत विद्वानों, आचार्यों, साहित्यकारों, नुंद ऋषि

और प्रसिद्ध कश्मीरी कवयित्री ललेश्वरी की उद्भव भूमि है, जिनके प्रेरणास्वरूप यहां साहित्य सृजन की उर्वर पृष्ठभूमि की स्थापना हुई। विष्णु शर्मा, चरक, कालिदास, नागसेन, भामह, आनन्दवर्धन, वसुगुप्त, सोमानंद, रुद्रट, मम्मट, क्षेमेन्द्र, अभिनवगुप्त, कल्हण जैसे महान विद्वानों का संबंध इसी क्षेत्र से है।

ललद्यद को कश्मीरी भाषा की प्रथम कवयित्री माना जाता है। वह निराकार शिव की उपासक थी। "ललेश्वरी शैव योगिनी कवयित्री थी, जिसने अपनी व्यक्तिगत अनभूतियों तथा सामूहिक जीवन के बारे में प्रभाव तथा प्रतिक्रियाएं, भाषा के रचनात्मक प्रयोग द्वारा प्रकट की और कश्मीरी भाषा की रचनात्मकता को एक नया आयाम दिया।"[5] इसके अतिरिक्त शेख नूरूद्दीन (नुंद ऋषि), खवाज़ा हबीब, हब्बा खातून एवं कृष्ण राजदान आदि कश्मीर के प्रमुख संत कवि हैं। कश्मीरी प्रेम गीतों की जननी हब्बा खातून को माना जाता है।

चौदहवीं शताब्दी में कश्मीर में इस्लाम धर्म का आगमन हुआ जिसका यहाँ के साहित्य, भाषा और समाज पर प्रभाव पड़ना स्वाभाविक था। इसके परिणामस्वरूप कश्मीर में संस्कृत एवं कश्मीरी भाषा के साथ-साथ फारसी भाषा भी प्रचलन में आ गई।

यह क्षेत्र खूबसूरत और अद्भुत हस्तशिल्प कला के लिए भी जाना जाता है। पशमीना शॉल अपने कपड़े, डिजाइन, कढ़ाई और गुणवत्ता के लिए विश्व भर में प्रसिद्ध है। यह शॉल राजसीपन का प्रतीक है इसलिए इसे बहुत पसंद किया जाता है। इसके अतिरिक्त कागज की लुगदी, टोकरी बनाना, लकड़ी की नक्काशी, अखरोट की लकड़ी से बनाया गया फर्नीचर एवं चाँदी के बर्तन आदि कश्मीरी हस्तशिल्प के उदाहरण हैं। कश्मीर सदैव पर्यटकों एवं सैलानियों के लिए आकर्षण का केन्द्र रहा है जिसके कारण सरकार द्वारा हस्तशिल्प उद्योग का विस्तार किया जाता रहा है।

घाटी में लोगों की आय और जीविका का प्रमुख स्रोत पर्यटन, कृषि एवं फल उत्पादन है। लगभग 80 प्रतिशत ग्रामीण आबादी कृषि और उससे जुड़े

व्यवसायों पर निर्भर है। प्रदेश की कुल आय में 37 प्रतिशत भागीदारी कृषि क्षेत्र की है। चावल, सरसों, मक्का, ज्वार, बाजरा, अलसी, कपास, गेहूँ और जौ यहां की प्रमुख फसलें हैं। फलों में सेब, बादाम, अखरोट, नाशपाती और खुबानी की पैदावार होती है। कुछ क्षेत्रों में केसर की खेती व्यापक स्तर पर होती है, जिसका प्रमुख केन्द्र पंपोर है। 2020 में कश्मीर के केसर को भौगोलिक संकेतक दिया गया (GI Tag)। शॉल, कालीन, हस्तशिल्प एवं कृषि निर्यात के कारण प्रदेश को विदेशी मुद्रा की प्राप्ति अच्छी मात्रा में होती है।

कश्मीर के अधिकतर लोग पारम्परिक वेशभूषा में रहते हैं। यहां की जलवायु परिस्थितियों एवं समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को दर्शाती है इस क्षेत्र की पारम्परिक पोशाक फिरन। ज्यादातर लोग मौसम के अनुसार ढीली-ढाली पोशाकें पहनते हैं। पुरुष सिर पर टोपी पहनते हैं और महिलाएं सम्मान के तौर पर सिर और कंधे ढक के रखती हैं। कश्मीरी वेशभूषा वास्तव में उनकी जीवनशैली और संस्कृति का प्रतिनिधित्व करती है। इससे यह ज्ञात होता है कि अभी भी भारत अपने सांस्कृतिक मूल्यों का पालन कर रहा है। यह वेशभूषा न केवल यहां की कलात्मक उत्कृष्टता को दर्शाती है अपितु पीढ़ियों से चली आ रही स्थायी सांस्कृतिक विरासत का भी प्रमाण देती है।

धर्म, जातीयता और भाषा की विविधता के बावजूद यहां हिन्दू, मुस्लिम, बौद्ध और सिक्खों का सामंजस्यपूर्ण मिश्रण है जिसने सदियों से इस क्षेत्र की सांझी संस्कृति को परिभाषित किया है। उर्मिलेश के शब्दों में, "झीलों, झरनों और नदियों की अप्रतिम घाटी की तरह ही कश्मीरी लोग भी बेहद काव्यात्मक सुंदर, सभ्य-शालीन और सहिष्णु रहे हैं। सदियों से यहां कई धर्मों के मतावलंबी एक साथ रहते हैं।"[6]

कश्मीरियों का प्रमुख खाद्य पदार्थ चावल और मांस है। ब्राह्मण होने के बावजूद कश्मीरी हिन्दू भी मांसाहारी और शाकाहारी दोनों प्रकार के भोजन का प्रयोग करते हैं। कहवा, शीर चाय या नून चाय पेय पदार्थों में प्रमुख हैं। हेराथ (शिवरात्री), लोहड़ी, बैशाखी, ईद-उल-फितर, नवरोज़, टयूलिप त्यौहार, हेमिस त्यौहार, सिंधु

दर्शन एवं डोमाचे कश्मीर के लोकप्रिय त्यौहार हैं। हस्तशिल्प की दुकानें, बहु-व्यंजन, चित्रकला में भागीदारी और पारम्परिक नृत्य इन त्यौहारों का अभिन्न अंग हैं। इन त्यौहारों के माध्यम से लोग कश्मीरी संस्कृति को उजागर करते हैं। कश्मीरी परम्पराओं में इस क्षेत्र का भौगोलिक वैभव और इतिहास दृष्टिगोचर होता है।

कश्यप ऋषि, शंकराचार्य, ललद्यद, नुंद ऋषि जैसे संतों की भूमि, धरती पर स्वर्ग कहे जाने वाले कश्मीर की परम्पराओं, मूल्यों एवं हिन्दू-मुस्लिम की सांझी संस्कृति को आतंकवाद नामक ग्रहण ने झकझोर कर रख दिया जिसका प्रभाव संस्कृति, साहित्य और यहां के अस्तित्व पर पड़ना स्वाभाविक था। अपनी सुरम्य भौगोलिक स्थिति एवं प्राकृतिक सौन्दर्य के कारण चर्चा में रहने वाला कश्मीर 1990 के बाद आतंकवाद और हिंसा-प्रतिहिंसा के लिए सुर्खियों में रहने लगा। 1990 में फैले आतंकवाद के कारण असंख्य कश्मीरी पंडितों को घाटी से निर्वासित होकर विस्थापन का दर्द झेलना पड़ा। कश्मीरी पंड़ितों के विस्थापन के साथ ही अनेक मुसलमानों को भी इस त्रासदी को भोगना पड़ा। "कश्मीर में आतंकवादियों के कारण न केवल हिन्दुओं की बल्कि मुसलमानों की भी दुर्दशा हुई।"[7]

सन् 1990 के दशक में देश में आर्थिक संकट से निपटने के लिए भारत सरकार ने नई आर्थिक नीति के तहत नए आर्थिक सुधारों की घोषणा की जिसमें उदारीकरण, निजीकरण और वैश्वीकरण का आरम्भ हुआ। किन्तु दूसरी तरफ सन् नब्बे का दशक जम्मू-कश्मीर के इतिहास का काला अध्याय माना जाता है, कारण है आतंकवाद और उसके परिणामस्वरूप विस्थापन की त्रासदी। राजनीतिक अराजकता और अव्यवस्था के कारण इस दशक के आरम्भ में अनेक नरसंहार, हत्याकांड, बलात्कार हुए, विकृत परिस्थितियों के कारण आतंकवाद का उदय हुआ और घाटी के मूल निवासी कहे जाने वाले कश्मीरी पंड़ितों को अपनी जन्मभूमि व जड़ों से पलायन करने के लिए विवश होना पड़ा।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि कश्मीर की संस्कृति बहुआयामी है जिसका प्रत्येक तत्व यहां की समृद्ध विरासत का प्रतिनिधित्व करता है। पारम्परिक वेशभूषा, संगीत, कला, भाषा, साहित्य, लजीज व्यंजन, जीवंत परम्पराएं एवं त्यौहार आदि मिलकर कश्मीर के सांस्कृतिक ताने-बाने को विश्व भर में प्रसिद्ध करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। कश्मीरी (कोशूर) भाषा यहां के लोगों की सांस्कृतिक पहचान का अभिन्न हिस्सा है क्योंकि यह भाषा केवल कश्मीरी मुसलमानों और कश्मीरी पंड़ितों द्वारा (कश्मीर में) बोली जाती है। अत: संस्कृति निरन्तर परिवर्तनशील होती है और यह लगातार चलती रहने वाली एक मानसिक यात्रा है।

सन्दर्भ

1. डॉ. देवराज, भारतीय संस्कृति, पृ. 20
2. सं. प्रो. कृपाशंकर चौबे, भारतीय साहित्य में कश्मीर, पृ. 12
3. उर्मिलेश, कश्मीर : विरासत और सियासत, पृ. 18
4. अशोक कुमार पाण्डेय, कश्मीरनामा, पृ. 184
5. रतनलाल शांत, कश्मीर : साहित्यिक संदर्भ, पृ. 7
6. उर्मिलेश, कश्मीर : विरासत और सियासत, पृ. 12
7. सं. प्रो. कृपाशंकर चौबे, भारतीय साहित्य में कश्मीर, पृ. 12

मधु रानी

शोधार्थी (पीएच.डी.)

हिन्दी विभाग,

जम्मू विश्वविद्यालय, जम्मू - 180006

मो. 6006084105

ई.मेल : madhurani751@gmail.com

जी-20 की अध्यक्षता से जम्मू-कश्मीर का विश्व को सन्देश

-विवेक मिश्र

16 नवम्बर 2022 को जी 20 बाली शिखर सम्मलेन में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी को भारत जी 20 की अध्यक्षता सौपी गई। जिसका कार्यकाल 1 दिसंबर 2022 से 30 नवम्बर 2023 तक रहेगा।इसकी थीम- वसुधैव कुटंबकम अर्थात एक पृथ्वी, एक परिवार, एक भविष्य! जो महोपनिषद् के अध्याय 6 में उल्लिखित है, से सन्दर्भित है।

मई माह के 'अवाम की आवाज़' रेडियो कार्यक्रम में जम्मू-कश्मीर के उप राज्यपाल श्री मनोज सिन्हा ने कहा- "इस अमृत काल में एक नया, आत्मनिर्भर जम्मू-कश्मीर बनाने का हमारा संकल्प है। जी-20 बैठक का यह ऐतिहासिक अवसर जम्मू-कश्मीर की पीढ़ियों को प्रेरित करेगा और समाज में नए उत्साह, नए आत्मविश्वास को बढ़ाएगा।[1]

इस मेजबानी से जम्मू-कश्मीर की पर्यटन क्षमता, एडवेंचर टूरिज़्म, फ़िल्म उद्योग, कृषि को बढ़ावा एवं यहाँ के युवाओं के लिए रोजगार के अनेक अवसर खुलेंगे।

प्रस्तावना-

भारत जी-20 की अध्यक्षता देश के लिए अपनी उपलब्धियों, चुनौतियों और आकांक्षाओं को दुनिया के सामने प्रदर्शित करने का एक महत्वपूर्ण अवसर है। भारत जिन पहलुओं पर सर्वाधिक प्रकाश डालना चाहता है उनमें से एक जम्मू-कश्मीर की स्थिति है, जो दशकों से भारत और पाकिस्तान के बीच एक विवादास्पद मुद्दा रहा है। भारत ने अपनी संप्रभुता पर जोर देने और क्षेत्र में विकास और शांति पहल के लिए अंतरराष्ट्रीय ध्यान आकर्षित करने के एक तरीके के रूप में, जम्मू-कश्मीर के श्रीनगर में जी-20 के बैठकें आयोजित की। 5 अगस्त 2019 को जम्मू-कश्मीर राज्य के विशेष प्रावधान अनुच्छेद 370 को निरस्त कर राज्य को दो केंद्र शासित प्रदेशों में विभाजित कर दिया गया,जो क्रमशः जम्मू-कश्मीर और लद्दाख हैं।

जम्मू-कश्मीर में जी-20 बैठकें आयोजित करके भारत ने दुनिया को यह सन्देश दे दिया है कि दशकों से अशांत क्षेत्र अब सामान्य स्थिति में वापस आकर ख़ुशहाली की राह पर अग्रसर है। भारत को उम्मीद है कि जी-20 कार्यक्रम इस क्षेत्र में सकारात्मक ध्यान आकृष्ट करने एवं विदेशी निवेश लाने का सुवसर है। साथ ही इसकी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत और प्राकृतिक सुंदरता को वैश्विक पटल पर प्रदर्शित करने का यह महत्वपूर्ण मंच है।

• निवेश के अवसर-

जी-20 शिखर सम्मेलन में विश्व के प्रमुख निवेशकों सहित सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाओं के प्रमुख एकत्र होते हैं। शिखर सम्मेलन के दौरान विश्व की नजरें जम्मू-कश्मीर पर हैं।इसी कारण क्षेत्र में व्यापार के अवसर तलाशने में रुचि रखने वाले संभावित निवेशकों को आकर्षित करना लाजमी है। विश्व व्यापार पर्यटन परिषद के अनुसार, भारत के सकल घरेलू उत्पाद में पर्यटन उद्योग का योगदान साल 2029 तक 460 बिलियन अमरीकी डालर होने की उम्मीद है। जम्मू-कश्मीर प्राकृतिक सुंदरता और समृद्ध सांस्कृतिक विरासत इसे एक आकर्षक पर्यटन स्थल बनाती हैं एवं शिखर सम्मलेन इसे बढ़ावा देने का सही अवसर प्रदान करता है।[2]

• व्यापार और वाणिज्य-

जी-20 शिखर सम्मेलन अंतरराष्ट्रीय व्यापार नीतियों पर संवाद का अवसर उपलब्ध करवाता है, जिससे अप्रत्यक्ष रूप से जम्मू-कश्मीर को लाभ होगा। जम्मू कश्मीर पर्यटन सचिव श्री अरविंद सिंह ने कहा कि 22 और 23 मई को 'आर्थिक विकास और सांस्कृतिक संरक्षण के लिए फिल्म पर्यटन' पर साइड इवेंट का आयोजन किया जाएगा। मई 2023, फिल्म पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए रणनीतियों पर ध्यान केंद्रित कर रहा है।साथ ही उन्होंने कहा पर्यटन स्थलों को बढ़ावा देने में फिल्मों की भूमिका का दोहन करने के लिए एक रोडमैप प्रदान करने के लिए 'फिल्म पर्यटन पर राष्ट्रीय रणनीति' का मसौदा तैयार किया जाएगा।[3]

• पर्यटन को बढ़ावा-

जम्मू-कश्मीर अपनी समृद्ध प्राकृतिक सुंदरता एवं सांस्कृतिक विरासत के लिए जाना जाता है, जो इसे पर्यटकों के लिए आकर्षण का केंद्र बनाता है। जी-20 शिखर सम्मेलन के दौरान प्राप्त अंतर्राष्ट्रीय माध्यम जम्मू-कश्मीर को सुर्खियों में लाने में महती भूमिका अदा करेगा।

इस अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन से वैश्विक जागरूकता बढ़ाने और क्षेत्र के पर्यटन उद्योग पर एक नया दृष्टिकोण प्रदान करने की उम्मीद है। जम्मू-कश्मीर की अर्थव्यवस्था पर्यटन पर बहुत अधिक निर्भर है।इस शिखर सम्मलेन से इस वर्ष आगंतुकों की रिकॉर्ड संख्या का अनुमान है।[4] पर्यटन बढ़ने से स्थानीय व्यवसायों में बढ़ोत्तरी, रोजगार सृजन एवं समग्र आर्थिक विकास में वृद्धि होगी।

• अंतर्राष्ट्रीय पटल पर ध्यान आकृष्ट -

जी-20 शिखर सम्मेलन दुनिया भर के राष्ट्राध्यक्षों और मीडिया समूहों का ध्यान आकर्षित करता है। यह जम्मू-कश्मीर को अपनी प्राकृतिक सुंदरता, सांस्कृतिक विरासत और पर्यटन क्षमता को अंतरराष्ट्रीय मंच पर प्रदर्शित करने का अवसर प्रदान करता है।
उप-राज्यपाल श्री मनोज सिन्हा ने इस वैश्विक आयोजन के संदर्भ में अपनी बात रखते हुए कहा कि 27 देशों के 57 प्रतिनिधि श्रीनगर में जी-20 बैठक में भाग ले रहे हैं और यह भारत की ताकत और वसुधैव कुटुंबकम के हमारे प्राचीन मूल्यों का प्रतिबिम्ब है।[5] पर्यटन कार्य समूह की तीसरी बैठक से ज्ञात होता है कि जम्मू कश्मीर किसी भी अंतराष्ट्रीय कार्यक्रम की मेजबानी करने में सक्षम है।

कश्मीर चैंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री (KCCI) ने ठीक ही कहा है कि यह घटना "क्षेत्र की अर्थव्यवस्था को भारी बढ़ावा देगा।" विशेष रूप से, जी 20 कश्मीर शिखर सम्मेलन भारतीय अर्थव्यवस्था के बारे में आईएमएफ की तेजी को बढ़ाएगा।[6] बढ़ी हुई दृश्यता वैश्विक पर्यटकों के बीच जिज्ञासा और रुचि पैदा करेगी।

• व्यापार के अवसर-

जी-20 शिखर सम्मेलन में हाई-प्रोफाइल अंतरराष्ट्रीय प्रतिनिधियों की उपस्थिति संभावित निवेशकों और पर्यटन हितधारकों का ध्यान आकर्षित कर सकती है। घाटी में विदेशी निवेश की वापसी भी क्षेत्र में शांति सुनिश्चित करने में स्थानीय प्रशासन की सफलता का एक विश्वसनीय उपाय है, जो पर्यटकों की सुरक्षा के लिए एक अपरिहार्य शर्त है। मार्च 2023 में, कश्मीर में 500 करोड़ रुपये का पहला प्रत्यक्ष विदेशी निवेश देखा गया, जिसमें दुबई स्थित एम्मार उद्यम ने एक शॉपिंग और कार्यालय परिसर का निर्माण शुरू किया। इसके अलावा, यूनेस्को के उत्कट समर्थन के साथ, प्रशासन ने राष्ट्रीय स्मार्ट सिटी मिशन के तहत 30 बिलियन रुपये निर्धारित करते हुए श्रीनगर जिले का कायाकल्प शुरू किया, जिसे 2023 में समयबद्ध पूरा किया जाएगा।[7]

• फ़िल्म पर्यटन-

जम्मू कश्मीर सरकार फिल्म नीति 2021 के अंतर्गत फिल्म निर्माण को बढ़ावा देने एवं राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिस्पर्धी बुनियादी ढांचा तैयार करने में सफल रही। सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय में सचिव अपूर्व चंद्रा जी20 की बैठक में कहा- "कश्मीर में बीते कुछ समय के दौरान 404 फिल्मों, टीवी सीरियस और विज्ञापनो की शूटिंग की अनुमति दी गई है। फिल्म पर्यटन में आप कश्मीर की उपेक्षा नहीं कर सकते। हमने एक प्रो-एक्टिव इकोसिस्टम फिल्म पर्यटन व शूटिंग के लिए विकसित किया है। हम फिल्मों को सहायता प्रदान करने साथ-साथ अंतराष्ट्रीय फिल्म यूनिटों के लिए वीजा सम्बन्धी औपचारिकताओं में भी सहयोग करते हैं।"[8]

राजनयिक जुड़ाव-

जम्मू और कश्मीर में जी-20 शिखर सम्मेलन आयोजित करना एक साहसिक और महत्वाकांक्षी कदम होगा, जम्मू और कश्मीर को उच्चतम स्तर पर पहचानने का अवसर, कई राज्यों के प्रतिनिधिमंडलों ने पिछले बीस वर्षों में नियमित रूप से जम्मू-कश्मीर का दौरा किया है। इस सूची में अमेरिकी विशेष राजदूत रॉबर्ट ब्लैकविल भी शामिल हैं,जो श्रीनगर के साथ-साथ सियाचिन ग्लेशियर दोनों के लिए एक रणनीतिक और परिचालन मार्ग बनाने का नेतृत्व कर रहे थे।[9]

• **बहुपक्षीय समर्थन-**

जी-20 शिखर सम्मेलन वैश्विक सकल घरेलू उत्पाद और जनसंख्या के एक महत्वपूर्ण हिस्से का प्रतिनिधित्व करने वाले देशों को एकत्र करता है। इन देशों में जम्मू-कश्मीर जैसी चुनौतियों का सामना करने वाले क्षेत्रों पर प्रभाव डालने और राजनयिक समर्थन प्रदान करने की क्षमता है। द्विपक्षीय और बहुपक्षीय जुड़ाव से शांतिपूर्ण समाधानों की वकालत अधिक मानवीय सहायता और क्षेत्र में विकास पहलों के लिए समर्थन बढ़ने के आसार बनेगें।

श्रीनगर में एक होटल व्यवसायी मुख्तार अहमद ने कहा-

“एंटायर वैली भव्य G20 इवेंट के लिए उत्साहित है। यह पहली बार है जब कश्मीर में ऐसा भव्य आयोजन हो रहा है। इससे पहले, इस स्वर्ग में ऐसा कोई आयोजन नहीं हुआ। हमारे हस्तशिल्प और पर्यटन स्थलों को वैश्विक मंच पर उजागर किया जाएगा।”[10]

• **ट्रेवल एडवाइजरी ख़त्म होने की उम्मीद -**

1990 के दशक में जम्मू कश्मीर आंतक के साए से जूझ रहा रहा था। इसी कारण अमेरिका, इंग्लैंड सहित यूरोपीय देशों ने कश्मीर के लिए एक एडवाइजरी जारी की, जिसमें वहाँ के नागरिकों को कश्मीर जाने पर रोंक लगा दी गई। जिससे कश्मीर के पर्यटन पर बहुत नकारात्मक असर हुआ। अब अनुच्छेद 370 के पश्चात कश्मीर के हालातों पर अमूलचूल परिवर्तन आया है। आतंक और अलगाववाद अब गुजरे ज़माने की बात हो गई। यह जी-20 की बैठक में विदेशी मेहमानों ने प्रत्यक्ष रूप से देखा।

हाल ही में जम्मू-कश्मीर के उप राज्यपाल मनोज सिन्हा ने कहा था कि "उन्हें विश्वास है कि यूरोपीय राष्ट्र और संयुक्त राज्य अमेरिका जल्द ही इस क्षेत्र के खिलाफ जारी ट्रेवल एडवाइजरी ख़त्म करेगा।"[11]

वैश्विक आयोजन के आगामी परिणाम-

मई माह के अंतिम सप्ताह में श्रीनगर में आयोजित जी-20 की बैठक से जम्मू कश्मीर की वैश्विक पहचान बन गई है। यही कारण है कि बैठक हुए दो महीने भी नहीं हुए उसके सुखद परिणाम आने प्रारम्भ हो गए हैं।

जम्मू-कश्मीर पर्यटन सचिव सैयद आबिद रशीद ने कहा कि जी-20 शिखर सम्मेलन आयोजित करना जम्मू और कश्मीर के पर्यटन क्षेत्र के लिए एक अविस्मरणीय क्षण था। हम अब इसके सकारात्मक परिणाम देख रहे हैं, वह आगे कहते हैं कि “हमें उन देशों से बहुत पूछताछ और बुकिंग मिल रही है जो जी 20 शिखर सम्मेलन में नहीं आए थे।"[12] हमें विश्वास है कि आने वाले समय में, हम जम्मू और कश्मीर को एक वैश्विक गंतव्य के रूप में प्रस्तुत करने में सक्षम होंगे।

कश्मीर का खूबसूरत नजारा देखकर ही शायद जहांगीर ने फ़ारसी में कहा था कि ‘गर फिरदौस बर रुए ज़मीं अस्त; हमीं अस्तो, हमीं अस्तो, हमीं अस्त’ अर्थात अगर पृथ्वी पर कहीं स्वर्ग है तो यहीं है, यहीं पर है और सिर्फ यहीं पर है। यही कारण है कि पिछले वर्ष 10 लाख से अधिक पर्यटकों ने कश्मीर की वादियों का दीदार किया। यही कारण है कि 71 वीं मिस वर्ल्ड 2023 प्रेस कॉन्फ्रेंस कश्मीर में आयोजित की गई। इसमें मिस वर्ल्ड आर्गेनाइजेशन की चेयरपर्सन जूलिया मॉर्ले ने घोषणा की कि भारत नवंबर से दिसंबर तक वार्षिक अंतरराष्ट्रीय सौंदर्य प्रतियोगिता के लिए कार्यक्रमों की एक महीने की श्रृंखला की मेजबानी करेगा। उन्होंने कहा उम्मीद है कि कार्यक्रम का एक हिस्सा कश्मीर में आयोजित किया जाएगा। श्रीनगर के दौरे के दौरान मॉर्ले ने पत्रकारों से कहा, "यह पर्यटन के लिए एक शानदार स्थान है। सच कहूं तो मैं बहुत खुश हूँ।हमारे लिए यह भावनात्मक है, ऐसी सुंदरता को देखने के लिए..."[13]

निष्कर्ष-

जम्मू-कश्मीर में जी-20 शिखर सम्मेलन आयोजित हुआ।जिसका उद्देश्य पर्यटन के क्षेत्र में क्षेत्र की क्षमता और अवसरों को प्रदर्शित करना था। साथ ही विभिन्न मुद्दों पर वैश्विक

सहयोग और एकजुटता को बढ़ावा देना था। इस सम्मलेन से जम्मू-कश्मीर को वैश्विक मान्यता मिली।

जी-20 सदस्य देशों के 60 से अधिक प्रतिनिधियों का ध्यान कश्मीर ने आकर्षित किया।साथ ही विश्व ने देखा कि भारत जम्मू-कश्मीर में अर्थव्यवस्था और विकास के नए आयाम तय कर रहा है, जिससे वहाँ के स्थानीय निवासियों के लिए रोजगार, आय और कौशल विकास जैसे आर्थिक अवसर पैदा हो रहे हैं और सरकार यह भी सुनिश्चित कर रही है कि पर्यटन राजस्व भी बढ़े। (15) क्षेत्र की कनेक्टिविटी और पहुंच में सुधार के लिए कई सार्वजनिक-निजी भागीदारी भी शामिल कर रहे हैं, जिससे सड़कें, पुल, हवाई अड्डे का निर्माण किया जा सके।[16]

स्थायी पर्यटन प्रथाओं को बढ़ावा दिया जा रहा है, जो पर्यावरण को संरक्षित करते हैं और स्थानीय समुदायों को लाभ पहुंचाते हैं, जैसे प्राकृतिक संसाधनों की खपत को कम करना, पारिस्थितिक तंत्र के क्षरण को रोकना, जानवरों को नुकसान पहुंचाने या शोषण करने वाली गतिविधियों से बचना, संरक्षण प्रयासों का समर्थन करना, अपशिष्ट और प्रदूषण को कम करना, रीसाइक्लिंग को बढ़ावा देना और नवीकरणीय ऊर्जा स्रोत इत्यादि।

स्थानीय समुदायों की सांस्कृतिक विविधता और पहचान के संरक्षण प्रदान किया जा रहा है जिसमें वहाँ की परंपराओं, भाषाओं, कलाओं और शिल्पों को संरक्षित किया जाना शामिल है। जी-20 देशों के सदस्यों ने स्थानीय कलाकारों, संगीतकारों, लेखकों के मध्य सांस्कृतिक आदान-प्रदान की संस्कृति विकसित की, साथ ही उन्हें पूर्ण सहयोग देने की पेशकश भी की। जलवायु परिवर्तन, शिक्षा, स्वास्थ्य, व्यापार और सुरक्षा जैसे वैश्विक मुद्दों पर एक साथ काम करने के लिए जी-20 देशों ने प्रतिबद्धता व्यक्त की।[17]

भारत जी-20 प्रेसीडेंसी के हिस्से के रूप में, इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय (MeitY) अग्रणी है। जी-20 डिजिटल इकोनॉमी वर्किंग ग्रुप (DEWG), जिसने डिजिटल पब्लिक इन्फ्रास्ट्रक्चर, डिजिटल अर्थव्यवस्था में सुरक्षा और डिजिटल कौशल जैसे तीन प्राथमिकता वाले क्षेत्रों की पहचान की है।[18]

इसी के अंतर्गत जी-20 की बैठक में डिजिटल जम्मू-कश्मीर की तस्वीर पेश की गई।जिसमें अनुच्छेद 370 निरस्त होने के पश्चात आई शांति और सम्पन्नता से विदेशी मेहमानों को रूबरू करवाया गया। इन बदलावों से चीन और पाकिस्तान जैसे पड़ोसी देशों द्वारा फैलाए जा रहे दुष्प्रचारों को भी ख़ारिज किया गया।

जम्मू-कश्मीर में चल रही 400 से अधिक डिजिटल सरकारी योजनाओं से विदेशी मेहमानों को अवगत कराया गया। जिसमें समय-समय पर नागरिकों से ऑनलाइन माध्यम से सुझाव भी लिए जा रहे हैं, जिससे नागरिक और प्रशासन के मध्य परस्पर सम्बन्ध स्थापित हो रहे हैं।

सन्दर्भ सूची -

1. G20 Historic Opportunity To Showcase J-K's Culture, Heritage, Tourism: LG Sinha, Outlook, May21, 2023
2. Dr. Shenaz Ganai, "G20 igniting socio-economic growth in Kashmir: A thriving South Asia beckons", ANI, may 9, 2023
3. Third G20 Tourism meeting to be organized from 22nd to 24th May at Shrinagar, PIB Delhi, May 19, 2023
4. Fareha Naaz, "Kashmir gears up for G20 summit with heightened security, development initiatives", Mint, May16, 2023
5. "पीएम के मार्गदर्शन में जम्मू-कश्मीर शांति और संवृद्धि की राह पर", अमर उजाला, 24 मई 2023 (जम्मू-कश्मीर संस्करण)
6. SAJID YOUSUF SHAH, "India’s G20 Summit in Kashmir Is a Big Deal", May05, 2023, Fair Observer
7. AYJAZ WANI, "G20 in Srinagar: Showcasing the return of peace and Kashmir’s global tourism potential", May22, 2023, orfonline.com
8. नवीन नवाज, "कश्मीर में फिल्म पर्यटन पर विदेशी निवेश पर खुल रही राह", दैनिक जागरण, 24 मई 2023 (जम्मू संस्करण)

9. Anamitra Banerjee, "Kashmir and India’s G20 Presidency",JK Policy Institute, April, 4, 2023

10. ‘G20 meeting set to herald all-round development in Jammu and Kashmir’, Greater Kashmir, May14, 2023

11. Mir Ehsan, Srinagar, "Hopeful of more foreign tourists visit to Kashmir", Aug 29, 2023, Hindustan Times

12. Zulfikar Majid, "After G20 summit, Kashmir sees increase in foreign tourists", July 22, 2023, Deccan herald

13. "कश्मीर में मिस वर्ल्ड प्रतियोगिता के आयोजन की योजना", 30 अगस्त 2023, DW

14. "Kashmir All Set to Host This Year’s Miss World Pageant", August 28, 2023

15. Cherylann Mollan & Sharanya Hrishikesh, "G20: India hosts tourism meet in Kashmir amid tight security", May22, 2023, BBC News

16. Devika Bhattacharya, "How the G20 meet in Kashmir is more than a summit, it's rejuvenation", India Today, May23, 2023

17. Moomin Farooq Lone, "G20 Summit: The possible outcomes for Jammu and Kashmir", January 21, 2023, Kashmir Reader

18. PIB Bengaluru, August 16, 202 com

-विवेक मिश्र
शोध अध्येता,
डॉ. राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, अयोध्या
ईमेल- vivekkumarmishra9990@gmail.com

समकालीन हिंदी कहानी में चित्रित विघटनशील समय

-डॉ. शुभम् मोंगा

प्रस्तावना: आज के इस उपभोक्तावादी व बाजारवादी समय में हम सभी अपनी अस्मिता की पहचान व उसकी रक्षा के लिए संघर्ष कर रहे हैं। हमारा यह संघर्ष भूतकाल की दुखद स्मृतियों से व वर्तमान समय में फैली विसंगतियों से रूबरू होता ही है, साथ ही हमारे अंतःकरण पर भी एक गहरा प्रभाव छोड़ता है जो कि आज के समय में पसरी सभी विद्रूपताओं के चलते क्रमश: असंवेदनशील, उग्र और उन्मादी होता जा रहा है।व्यक्ति का असंवेदनशील होते चले जाना एक क्षणिक प्रक्रिया नहीं है,इसके लिए तमाम प्रायोजित षडयंत्र रचे गए हैं।सत्ता जहाँ केंद्र में अपने वर्चस्व को पुनर्स्थापित करना चाहती है तो वह अपने आसपास ऐसे मूक-बधिर लोगों की भी एक फौज तैयार करती चलती है,जो कुछ भी न सुन पाए व बोल पाने में असक्षम हो;परंतु हाँ... जो भी सत्ता चाहे वो केवल वही सुने और बोले भी, मानो कि वे उनके गुलाम हो! वह अपने इन्ही मंतव्यों की पूर्ति के लिए समाज मे यथास्थितिवादी ताकतों का प्रसार करती है, जिससे ऊपरी तौर पर तो यह दिखे कि वह परिवर्तन के लिए उद्यत है,परन्तु अपने आंतरिक रूप में वह अपनी तानाशाही को बनाए रखने का ही प्रयास कर रही होती है।

परिवर्तनशीलता संसार का नियम है। परिवर्तन ही जड़ से चेतन होने की प्रक्रिया है।चेतना प्रतिरोध को जन्म देती है,यही कारण है कि यथास्थितिवादी ताकतें परिवर्तन के खिलाफ खड़ी रहती हैं तथा वे परिस्थितियों को जो का त्यों बनाए रखना चाहती हैं।सबल वर्ग समाज के एक तबके को हाशिए पर डाल कर उसे निष्प्रभावी बना देता है तथा निरंतर उनका शोषण करता रहता है।जड़ता यथास्थितिवाद को पोषित करती है अतः परिवर्तन के लिए आवश्यक है कि यथास्थितिवाद के खिलाफ एकजुट होकर संघर्ष किया जाए। हाशिए की अस्मिताएँ वह होती हैं, जिन्हें समाज की मुख्यधारा से निकालकर किनारे पर रख दिया जाता है। इन अस्मिताओं को एक व्यवस्थाबद्ध व सोची समझी साजिश के तहत इतिहास

के पन्नों, संसाधनों के समान वितरण, प्रतिष्ठित क्षेत्रों में महत्वपूर्ण संस्थाओं से बेदखल कर दिया जाता है।इन्हें एक सम्मानपूर्ण जीवन जीने के अधिकार की कल्पना तो दूर मनुष्य होने के अधिकार से वंचित रखा गया है।इन्हें प्रकृति से प्राप्त सुविधाओं को भी दूर किया जा रहा है। हाशिए की अस्मिताओं में प्रमुख रूप से दलित, स्त्री, किसान, मजदूर के साथ अल्पसंख्यक, आदिवासी, घुमंतू जाति या या किसी विचित्र रोग से ग्रसित लोग आदि शामिल हैं।

बदलते समय के साथ साथ जैसे-जैसे चेतना का विकास हुआ,इन समुदायों ने भी अपनी चिरस्थाई चुप्पी को तोड़ने की कोशिश की है।समय-समय पर इन्होंने अपने शोषण के खिलाफ (वह चाहे वर्ण,आयु,जाति किसी भी आधार पर किया गया हो)अपनी आवाज बुलंद की है। अपने अधिकारों की मांग की है।अपने आप को पहचानने की कोशिश की है। वर्तमान साहित्य में स्त्री-विमर्श,दलित व आदिवासी विमर्श लगभग पिछले तीन दशकों से तेजी से उभरे हैं तथा हिंदी साहित्य में अपना विशेष जगह बनाते हुए, उन्होंने साहित्य के नए मानक निर्मित किए हैं। "समाज को बदलने की कोई भी सार्थक यात्रा खुद से आरंभ होती है। यह आरम्भ में ही समझ लेना हितकारी होगा कि भारतीय समाज की बनावट ऐसी है कि यहाँ ने धक्कामार ब्राह्मणवाद चल सकता है और न धक्कामार गैर-ब्राह्मणवाद।किसी भी धार्मिक सांस्कृतिक और भाषाई अल्पसंख्यक के विरुद्ध सतत् घृणा के आधार पर कोई दूरगामी रणनीति भारत में संभव नहीं है। यह अल्पसंख्या चाहे मुसलमानों, ईसाइयों की हो, चाहे ब्राह्मणों की।"[1]

उत्तर आधुनिकता का ढिंढोरा पीटते वर्तमान युग में एक तरफ तो सभी की स्वतंत्रता और समानता की बातें की जाती है, तो वहीं दूसरी तरफ चिरकाल से होते आ रहे पीढ़ी दर पीढ़ी शोषण को समाज एक का एक तबका ईश्वरीय न्याय मानकर चुप रहकर केवल सुनने का आदी हो चुका था लेकिन अब वह धीरे-धीरे वस अपनी स्थिति का मूल्यांकन करते हुए, अपनी अस्मिता की खोज में प्रतिरोध की जरूरत समझ रहा है। अपने निवास, संस्कृति, प्राकृतिक जीवन से उखाड़ा जाता जनजातीय समुदाय आज इतना भयभीत है कि उसे नक्सलवाद के रूप में अपनी पहचान बनाने के लिए मजबूर होना पड़ रहा है। इनका मानना है कि- प्राकृतिक आपदा से तो हम

लड़ लेंगे लेकिन सत्ता द्वारा बनाई गई आपदा का क्या करेंगे? वंदना राग अपनी कहानी "हिजरत से पहले" में आदिवासी लोगों की समस्याओं के प्रतिरोध को प्रकट करती है कि कैसे जनजातीय जीवन का आधार प्राकृतिक संसाधनों का विकास के नाम पर तेजी से दोहन किया जा रहा है। ये लोग प्रकृति की पूजा करते हैं और उसी में अपने भगवान का प्रतिबिंब देखते हैं और उसकी रक्षा के लिए अपनी जान तक दांव पर लगा देते हैं- "पेड़ों के आसपास हम लोगों के बड़ादेव हैं। कोई भी गलत काम वहाँ नहीं होना चाहिए। जंगल की रक्षा हमारा धर्म है वरना बड़ादेव नाराज हो जाएंगे।"[2]

कहानी में आदिवासी समुदाय सरकार की नीतियों के खिलाफ लामबंद होते हैं,यही कारण है कि जब उन्हें अपना प्रतिरोध बेअसर होता दिखाई देता है तो भी राजधानी से आने वाले बड़े अफसरों की गाड़ियों को उड़ाने की योजना बनाते हैं। प्राचीन काल से हाशिए पर रहा किन्नर समुदाय भी आज के समाज से बहिष्कृत समझा जाता है तथा नाच-गाकर वह माँग कर अपना पेट भरते हुए,अपने अन्य अपराधों का दंड भुगतने के लिए मजबूर है। आज के युग में विडंबना है कि वह हाशियाग्रस्त अस्मिताएँ अपनी पहचान बनाए रखने की संकट से जूझ रही हैं।

कहानीकार किरण सिंह की कहानी "संझा" में दिखाया गया है कि किस प्रकार एक विशेष अंग से रहित बालक, अपने माता-पिता के लिए सामाजिक भय और शर्म का कारण माना जाता है। पंडित जी के घर जन्मी संझा को अपने ही घर के अंदर बंदी बनाकर रखते हैं। उसे दूसरे बच्चों से दूर रखा जाता है। वह बार-बार अपने पिता से सवाल करती है। वह कहती है "मैं बाहर निकलना चाहती हूँ-बाऊदि।मैं औषधि की पत्तियाँ छूना चाहती हूँ।बहता पानी...गीली मिट्टी... जंगल आसमान देखना चाहती हूँ। बाऊदि! मैं दौड़ना चाहती हूँ।खूब जोर से हँसना चाहती हूँ।सबके जैसे जीना चाहती हूँ। आपके कहने से मैं ऐसे रह तो जाऊँगी लेकिन दो-चार दिन की ही रह जाऊँगी।बाऊदि।"[3]

भले ही हम 21वीं सदी में प्रवेश कर चुके हैं लेकिन हमारी मानसिकता आज भी बीमार असाध्य रोग से ग्रसित है। किरण सिंह कहती है "मामा अपने घर के दरवाजे पर खड़े होकर... जुगल किशोर,उनके पौरुष पर ऐसा कलंक है, जो दिन रात

उसकी आँख के आगे नाचता रहता है। जुगल भैया अपना उभरा सीना छुपाने के लिए झुकते चले गए।"[4] लेकिन संझा अपनी वास्तविकता को दूर रख कर एक नई कहानी रचना चाहती है और बहुत हद तक वह इसमें सफल भी होती है उसके पिता जब उसे कहते हैं कि तुम वंश नहीं बढ़ा सकती तो वह प्रतिक्रया में कहती है "गाँव में ऊसर औरतें भी तो हैं, मान से रहती हैं अर्थात् वह अपने आप को किसी भी कारण से किसी से भी कम नहीं समझती और अपनी सूझबूझ और अपने कार्यों के दम पर अपने महत्व पर प्रतिष्ठित भी कर देती है। नपुंसक होने की सच्चाई जब उसके सामने आती है तो वह पूरे गाँव का डटकर मुकाबला करते हुए कहती है "न मैं तुम्हारे जैसी मर्द हूँ। न मैं तुम्हारे जैसी औरत हूँ।मैं वह हूँ जिसमें पुरुष का पौरुष है और औरत का औरतपन। तुम मुझे मारना तो दूर,अब मुझे छू भी नहीं सकते क्योंकि मैं एक जरूरत बन चुकी हूँ,सारे गांव की ही नहीं आसपास के शहर तक एक मैं हूँ जो तुम्हारी जिंदगी को बचा सकती हूँ। अपनी औषधियों में अमृत का सिफत मैंने तप करके हासिल किया है।मैं जहाँ जाऊँगी मेरी इज्जत होगी। तुम लोग अपना सोचो। तो मैं चैगांव से निकलूँ या तुम लोग मुझे खुद बाउदी की गद्दी तक ले चलोगे।"[5]

समाज में इन लोगों को उस अपराध की सजा दी जाती है जो इन्होंने किया ही नहीं होता क्योंकि किसी की शारीरिक संरचना में किसी का कोई दोष नहीं हो सकता। ऐसे ही दर्द को बयान करती अखिलेश की "अंधेरा" संकलन में "ग्रहण" कहानी है,जिसमें विपद व बटुली का लड़के राजकुमार को जन्मजात गुदाद्वार ना होने के कारण पेटहगना नाम से संबोधित किया जाता है। वह बार-बार हर जगह प्रताड़ित होता है एक तो दलित वर्ग से संबंधित ऊपर से ऐसे अनसुने में रोग से ग्रसित राजकुमार दोहरे शोषण को भोग रहा है। जब विपद उसे स्कूल में पढ़ने भेजता है तो शिक्षक राजकुमार पर गर्जता है "साले एक तो तू कुजात उस पर से पेट हजना, चार अक्षर पढ़ लेगा तो किसी ठीहे लग जाएगा। रिजर्वेशन तो तुम हरामियों के लिए है ही।"[6]

पढ़ते समय कक्षा में राजकुमार के साथ बुरा व्यवहार की तो किया ही जाता है व इसके साथ अन्य स्थानों पर बार-बार उसे स्वर्ण समाज की हिंसा का सामना

करना पड़ता है। जब वह पानी पीने के लिए चांपाकल चला कर पानी पीने की कोशिश करता है तो गुरुजी पीछे लात मार देते हैं जिससे उसके मुँह से खून बहने लगता है। गुरु कहते हैं-"इसलिए मैंने मारा कि कहीं इस पेट हगना की टट्टी चंपाकाल को अपवित्र ना कर दे।"[7]

हाशियाग्रस्त अस्मिताओं के साथ किया गया यह व्यवहार ही एक दिन इन शोषितों में क्रोध की अग्नि भड़काकर प्रतिरोध को जन्म देता है। गुस्साया राजकुमार भी अपने अपमान का बदला लेने के लिए पुरोहित के लड़के मुन्ना को मारकर अपनी मृत्यु का प्रपंच रहता है। ऐसे ही पात्र को सत्यनारायण पटेल अपनी कहानी में प्रकट करते हैं जो सवर्ण तो है लेकिन अपनी धब्बों वाली शारीरिक बीमारी के कारण सवर्ण समाज से बहिष्कृत है, साथ ही उसके वास्तविक नाम को बुलाकर उसका नाम कबरया रख दिया जाता है। उसे अपने गाँव से निकाल दिया जाता है और अपने समाज के लोगों द्वारा बहिष्कृत व प्रताड़ित किया जाता है।

वह गाँव के कांकर पर बसे दलितों के साथ रहते हुए सवर्णों के खिलाफ अपनी अस्मिता की लड़ाई का बिगुल बजा देता है व अपने साथ हुए दुर्व्यवहार के कारण वे दलितों के दर्द को समझ पाता है। दबंग जातियों की एकता हाशियाग्रस्त अस्मिताओं के प्रतिरोध को कुचलने हुए,उन्हें हाशिए से मुख्यधारा की तरफ बढ़ने से रोकने का हर संभव प्रयास करती है।

कहा जाता है कि जिस प्रकार साहित्य समाज का दर्पण होता है, उसी प्रकार स्त्री भी समाज का प्रतिबिंब होती है। अगर किसी देश, समाज या राष्ट्र की तरक्की को नापना है तो उसकी अर्थव्यवस्था की स्थिति मत देखिए बल्कि वहाँ की स्त्री की स्थिति का अध्ययन कीजिए और बहुत हद तक यह विचार वर्तमान मानदंडों को भी पूरा कर रहा है। वर्तमान युग प्रगति के पथ पर जितना अधिक आगे निकलता जा रहा है स्त्री को उतना ही अधिक हाशिए पर धकेला जा रहा है।जिस समाज में पुरूष व स्त्री दोनों के समान मानव-श्रृंखला में होते हुए भी दोनों के लिए अलग-अलग मानदंड बनाए गए हो वह समाज कैसे प्रगति कर सकता है? जिस समाज में एक स्त्री को केवल एक "देह" के रूप में वस्तु, उत्पाद, घर की शोभा, पति के वैभव

की प्रदर्शनी के रूप में देखा जाता है तो वहाँसमानता की विचारधारा निरर्थक ही प्रतीत होती दिखाई देती है। कहने को तो आज की स्त्री पुरुष कंधे से कंधा मिलाकर काम कर रही हैं। जीवन की हर क्षेत्र में उसकी बराबर की भागीदारी है।अंतरिक्ष को वे अपने कदमों से नाप रही है। वे देश की अर्थव्यवस्था ही नहीं बल्कि पूरे देश व राष्ट्र को शासित कर रही हैं, लेकिन जब हम वास्तविकता देखते हैं तो आज भी हमारी संसद में महिलाओं की उपस्थिति मात्र 14% है जबकि जनसंख्या की दृष्टि में वह कुल जनसंख्या का लगभग 50% है और जहाँ तक आज वह पहुँची है, उसके पीछे भी पितृसत्तात्मक व्यवस्था का एक अनदेखा षड्यंत्र काम कर रहा है, जिसे भेदने की कोशिश में स्त्री स्वयं उस षड्यंत्र का हिस्सा बनती जा रही है।

बाज़ार के बीच स्त्री:

स्वतंत्रता और आत्मनिर्भरता की तलाश में निकली स्त्री आज कहाँ से कहाँ पहुँच गई है,इसका अंदाजा उसकी वर्तमान स्थिति को देखते हुए लगाया जा सकता है। नब्बे के दशक के प्रारंभ में आई भूमंडलीकरण, उदारीकरण और वैश्वीकरण की अवधारणा से उत्पन्न बाजार में वर्तमान स्त्री को आवश्यकता से अधिक प्रभावित करते हुए एक नए रूप में अवतरित किया है। बाजारवाद की चकाचौंध ने स्त्री को रंगीन सुहावने सपने दिखाकर उसे अपनी अस्मिता को भूल कर वास्तविकता से दूर एक उत्पाद बना दिया है। बाजार का मुख्य मकसद है कंपनियों के उत्पादों को आम आदमी तक पहुँचाना और इसके लिए सुंदर है प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता है और उस के माध्यम से दुनिया के सामने जाना माना चेहरा लाया जाता है।विज्ञापनों के लिए इन जाने-माने चेहरों का इस्तेमाल करके बाजार को लोगों तक पहुँचाया जाता है।अरविंद जैन अपनी पुस्तक "औरत होने की सजा" में लिखते हैं "बहुराष्ट्रीय कंपनियों को अपने ब्रांड बेचने के लिए निश्चित रूप से भारतीय मॉडल ही चुनने पड़ेंगे।विश्व सुंदरियाँ भारतीय ग्राहकों को अपना माल आसानी से नहीं बेच पाएंगी इसलिए जरूरी है कि भारतीय सुंदरियों को पहले ब्रह्मांड सुंदरी और विश्व सुंदरी का ताज पहना कर घर-घर में जाना पहचाना नाम और चेहरा बनाया जाए और फिर अपने ब्रांड को बेचने के लिए भेजा जाए यही सुंदरियाँ किसी भी पोज में माल बेचने को मजबूर होंगी क्योंकि पहले ही बहुत से अनुबंध बिना सोचे समझे

साइन कर दिए गए हैं।"[8] इन चेहरों को समय-समय पर बदल दिया जाता है क्योंकि समय परिवर्तन की मांग करता है।एक चेहरा जब पुराना हो जाता है तो नए ग्लैमर के साथ दूसरा चेहरा प्रस्तुत किया जाता है। विज्ञापनों की बदौलत आज झुग्गी झोपड़ियों में रहने वाले दो वक्त की रोटी के लिए मोहताज व्यक्ति के पास भी ब्यूटी प्रोडक्ट्स सैशे के रूप में देखा जा सकता है।

वर्तमान युग में कंपनियों द्वारा अपना सामान बेचने के लिए भारतीय सुंदरियों का जितना प्रयोग किया जाता रहा है,वह बाज़ार के रूप में एक नव समाजवाद का आगमन है।घरेलू जरूरतों के सामानों से लेकर चाहे गाड़ी का विज्ञापन हो, शेविंग ब्लेड, क्रीम, जूते-चप्पल, सौन्दर्य प्रसाधन, बिजली उपकरण, यहाँ तक कि पुरुष बनियान-अंडरवियर के विज्ञापनों में भी भारतीय सुंदरियों का प्रयोग किया जाता है।विज्ञापनों में अर्धनग्न अवस्था में बहुराष्ट्रीय-कंपनियों का सामान बेचती सुंदरियाँ अपनी भाव-भंगिमा द्वारा अनायास ही या ना चाहते हुए भी बाजार की गिरफ्त में आने को मजबूर हैं। बाजार बार-बार हमारे खिड़की दरवाजों पर दस्तक देता है और यह हमारा दुर्भाग्य है कि हम ना चाहते हुए भी उसे अपने घरों में प्रवेश की अनुमति दे देते हैं। आज के युग को देखते हुए यह विचारणीय है कि आज करवा चौथ सहित अनेक नए नए व्रत व त्यौहार हमारी संस्कृति का हिस्सा क्यों बनते जा रहे हैं। वैलेंटाइन डे, रोज डे, ब्रदर डे, फादर डे, मदर डे आदि की बहार पिछले लगभग 15-29 सालों से ही क्यों बढ़ती जा रही है। आज गिफ्ट-रिटर्न गिफ्ट के बिना कोई त्यौहार क्यों नहीं मनाया जा रहा है?इन सब प्रश्न का उत्तर एक ही मिलेगा क्योंकि बाजार यह चाहता है।

आज के इस बाजारवाद के युग में सब कुछ बिकाऊ है। बाजार की इस खरीद-फरोख्त से जो सबसे अधिक प्रभावित है वह है- स्त्री। आज भले ही वह अपने अधिकारों के प्रति जागरूक दिखाई देती है लेकिन बाजार के समक्ष वह केवल उत्पाद है,एक वस्तु है। सौंदर्य के प्रति रुझान ने स्त्री सौन्दर्य को बिकाऊ माल बना दिया है। बाजार स्त्री की सुंदरता को जरिया बनाकर अपने माल की खपत करने के हजारों रास्ते तलाश कर रहा है। बाजार स्त्री को आर्थिक समृद्धि व आत्म निर्भरता

का सपना दिखाकर,उसे देह के रूप में प्रस्तुत कर उसका शोषण कर रहा है और स्त्री इस षडयंत्र को समझे बिना बाजार द्वारा इस बनाए हुए जाल में उलझती ही जा रही है।गीताश्री की "आवाजों के पीछे-पीछे" कहानी की नायिका "निशा" को जब एक लिफाफा गार्ड द्वारा थमाया जाता है, जिस पर लिखा था "हस्बैंड ऑन रेंट"तो वह असमंजस में पड़ जाती है कि वह यह काम करें या ना करें। आर्थिक हालात निशा को अपनी सुरीली आवाज को बेचने के लिए लालायित कर रहे हैं। गीताश्री लिखती हैं "जब उसने लिफाफे के अंदर लिफाफा देखा तो और चौक गई। यह क्या मायाजाल है भाई। ऊपर-ऊपर कितनी राहते और अंदर लिफाफे मे जिंदगी का तिलिस्म जिसमें घूमने पर कम जोखिम और ज्यादा पैसा दिखाई पड़ रहा है। वह लिफाफा निशा को सुनहरे सपनों की दुनिया में लेकर जाता है और वह अपने भीतर के द्वंद को अनेक तर्कों द्वारा शांत करती है। अपनी कमाई! भिखारियों की तरह हाथ फैलाने से मुक्ति! छोटी-छोटी ख्वाहिशें पूरी कर सकूंगी! और बिना खर्च के काम!घर बैठे, कहीं आना ना जाना गोपनीयता की गारंटी तो है ही।इसमें क्या बुराई है,न हम खर्च होंगे, ना वह खर्च होंगे। बस एक आवाज का जाया होना है।"[9]

दूसरी तरफ ऐसा ही लिफाफा निशा के पति सुनील को मिलता है,जिसे वह निशा से छुपा कर रखता है। जब सुनील उस लिफाफे को खोलता है तो उसमें ब्लैक एंड व्हाइट दो पेपर थे, जिस पर अनेक फोन नंबरों के साथ रोमन में लिखा था- "हेलो दोस्त।मेरा नाम वसुंधरा है। मैं एक कॉल सेंटर में एजेंट हूँ। मेरा सपना है कि अपनी जिंदगी मे मुकाम हासिल करूँ। मुझे पसंद है, लोगों से उनके जीवन के बारे में जानना। अपनी जिंदगी के अनुभव के बारे में बताना। नए लोगों से मिलना और उनसे बहुत सारी बातें करना मुझे अच्छा लगता है...आपकी कॉल का इंतजार करूँगी।"[10] लिफाफे के साथ में सुंदर युवा उत्तेजक भंगिमा वाली लड़कियों की फोटो डाली गई थी।बाजार ने स्त्रियों के अपने मानसिक नियंत्रण को समाप्त कर उनकी स्वतंत्र अस्मिता व पहचान को अपनी चकाचौंध में गुम कर दिया है।

लोकतंत्र का चौथा स्तंभ कहे जाने वाला मीडिया भी बाजार के प्रकोप से अछूता नहीं रह सका है। एक तरफ मीडिया ने स्त्री अभिव्यक्ति को स्वतंत्रता के लिए एक नया मंच प्रदान किया है तो वहीं दूसरी तरफ समकालीन दौर की स्त्री मीडिया में

अपने वस्तु के समान हो रहे प्रयोग से अनभिज्ञ दिखाई देती है। मीडिया में स्त्री की जो छवि उभर कर सामने आई है,वह बाजार की चालाकी का परिणाम है। वह नारी की मोहक छवि का आदि हो चुका है ताकि उस छवि को बेचकर अधिक से अधिक मुनाफा कमा सके। विज्ञापनों, फिल्म इंडस्ट्री में छोटे पर्दे की अतिरिक्त आज न्यूज़ चैनल भी यह विशेष ध्यान रखते हैं कि उनकी खबरों को प्रसारण करने वाली एंकर लोगों को कितना प्रभावित कर पाती है। उसकी छवि वर्तमान मांगे अनुसार हो। "छबीला रंगबाज शहर" कहानी अरुप और ऋषभ आपस में बहस कर रहे थे तो ऋषभ स्कूल के प्रिंसिपल के बारे में कहता है प्रिंसिपल कहते हैं "मीडिया में समस्या नहीं अब आनंद है।आभासी यथार्थ के मायने भी मुझे बताएं और यह भी कहा कि अनुभव और स्वार्थ हस्तांतरित हो रहे हैं। यह खतरनाक दौर है।"[11]

इसी कहानी की स्त्री पात्र तन्वी अपनी सूझबूझ व मीडिया के इशारे पर चलते भुजंगनाथ के झूठे फुटेज के बल पर एक ब्रांड के रूप में बन जाती है और बरखा दत्त सम्मान से नवाजी जाती है। न्यूज़ चैनलों में एंकर की खूबसूरती के साथ-साथ उसके कपड़े वह बोलचाल के ढंग भी विशेष मायने रखते हैं। प्रवीण कुमार तन्वी एंकर के बारे में लिखते हैं "तन्वी का शरीर कुछ भर आया था। आँखों में मोटा-मोटा काजल था और आँखें चमक रही थी।चपटे गाल अब हल्की आँच में पके हुए पुए की तरह चिकने होकर फूल गए थे और लिबास में स्थनिक लुक था। यह राज्य का सबसे नामी न्यूज़ चैनल था। आखिरकार वह वहाँ पहुँच गई, जहाँ जाना चाहती थी। उसके पतले पतले होंठो से एक-एक शब्द मोतियों के समान टपक रहा था।"[12] तो सच्चाई यह है कि मीडिया वाले अपने व्यवसायिक हितों की पूर्ति के लिए व अपनी टीआरपी बढ़ाने के लिए केवल स्त्री के शरीर के प्रदर्शन पर जोर देते हैं। बहुत सारे विज्ञापनों में जहाँ स्त्री की कोई आवश्यकता नहीं होती उन विज्ञापनों में भी उन्हें एक देह के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। पैरों में पहनने वाले जूतों या कलाई पर बाँधी जाने वाली घड़ी के विज्ञापनों को प्रस्तुत करने वाली सुंदरी कम से कम कपड़ों में दिखाई जाती है, जिसका उद्देश्य केवल स्त्री-देह को परोस कर अपने माल को अधिक से अधिक खपत करना है। बाजार की इस मायाजाल ने सौंदर्य की दूसरी परिभाषा को अनावृत शरीर व देह प्रदर्शन की परिभाषा में तब्दील कर दिया गया है।

समकालीन दौर में बाजार ने स्त्री को स्त्री का प्रतिद्वंदी बना दिया है। वे एक-दूसरे से आगे निकलने की चाह में किसी भी सीमा को पार करने के लिए बेचैन है। अत्यधिक सुंदर आकर्षक व स्लीम दिखने के लिए खाने के स्थान पर सप्लीमेंट लेती है। यहाँ तक कि नशे की आदी हो चुकी है।वे अपने सौन्दर्य व आकर्षण के कारण भी मीडिया पर छाई रहती हैं और मीडिया को इनसे अपनी खुराक मिलती रहती है, लेकिन मीडिया हाथी की तरह है। उसकी खुराक बड़ी है। थोड़े में उसका पेट नहीं भरता।वह खबरों को सनसनीखेज बनाने के लिए निरंतर नया मसला ढूँढता रहता है, जिसके लिए उसकी नजरें स्त्री पर छाई रहती हैं और मीडिया को इनसे अपनी खुराक मिलती रहती है। इस बात में कोई दो राय नहीं है कि सोशल मीडिया ने स्त्री को एक नया मंच प्रदान किया है था उसे अपने अनुभव को प्रकट करने का साहस भी दिया है लेकिन फिर भी मीडिया द्वारा स्त्री का एक वस्तु की तरह ही प्रयोग होता है।

सन्दर्भ-

1.पुरुषोत्तम अग्रवाल: संस्कृति वर्चस्व और प्रतिरोध, भूमिका।

2.वंदना राग: हिजरत से पहले, पृ-128

3.किरण सिह: यीशू की कीलें, पृ-179

4.वही-पृ-196

5.वही-पृ-197

6.अखिलेश: यक्षगान, पृ-111

7.वही-पृ-119

8.अरविंद जैन: औरत होने की कथा, पृ-141

9.गीता श्री: स्वप्न, साज़िश और स्त्री, पृ-107

10.वही-पृ-109

11.वही-पृ-114

12.प्रवीण कुमार: छबीला रंगबाज का शहर, पृ-63

डॉ. शुभम् मोंगा

अस्सिटेंट प्रोफेसर(हिंदी)

J. V. M. G. R. R. COLLEGE

चरखी दादरी(हरियाणा) 9996884112

शन्नो का फैसला

भाभी जब भी कहती, "स्पर्श से मैली होती हो ननंद जी, कोई कामदेव ही खोजना होगा," तो शन्नो के चंपई गालो पर सैकड़ो गुलाब झर पड़ते और सच ही एक दिन गोरे अंगों वाले सुदर्शन युवक से उसका विवाह हो गया था। दिन पंख लगा कर उड़ने लगे। हर पल एक खुमारी में डूबी रहती शन्नो। उसकी दुनिया आकाश तक सिमट गई थी। दोनों एक-दूसरे के पूरक! दो दिन के लिए पीहर जाती, तो भावजें हँसती, "पल्लू से बंधे चले आते हैं, दो दिन के लिए भी जुदा नहीं हो सकते बहनोई जी।"

शन्नो भाव-विभोर हो उठती। उसके हाथ जुड़ जाते, "हे भगवान, सब सुरक्षित रखना।"

भाभियों का हक था सो मजाक कर लेती, पर उसने कभी यह नहीं जाना था कि मां और भाभी दो अलग रिश्ते होते हैं। बड़ी भाभी ब्याह कर जब इस घर में आई, तो उनकी गोद में फूफी सास ने दो साल की इस शन्नो को बिठाते हुए कहा था, "लो बहू आज से इसे अपनी ननंद नहीं बेटी समझ कर छाती से लगाना। बड़ी अभागिन है जन्म लेते ही इसकी माँ चल बसी। तब से यहां-वहां पलती रही। फूल सी बच्ची क्या जाने माँ का प्यार?" भाभी ने जैसे फूफी की बात गांठ बांध ली थी।

आसक्ति की हद तक चाहत और पत्नी की हैसियत से पूरा मान-सम्मान मिला था उसे पति से। आकाश की सुबह शन्नो के जागने से और रात उसके पलक झपकने से होती थी। आकाश इंजीनियर है दिन-रात मेहनत करके अपनी काबिलियत के बल पर खूब नाम और पैसा कमा लिया है। अभी उम्र ही क्या है, पर महत्वाकांक्षाएं आकाश छू लेने को मचल पड़ती है। एक दिन लाड़ में आकर कहने लगे, "बहुत जल्द शन्नो रानी यह फ्लैट छोड़कर बड़ी कोठी में जाने वाली है।"

"बड़ी कोठी?" वह चौंकी थी, "यह बड़ी कोठी का ख्याल कैसे? हम दो के लिए यह फ्लैट कुछ कम है क्या?"

"कम ही तो है। दो ही रहेंगे क्या? और फिर खूबसूरत शन्नो के लिए बाग-बगीचे वाला एक खूबसूरत बंगला भी तो होना चाहिए ना।"

ऐसे ही अवसरों पर आकाश की उस चाहत को मैं अपने अंदर के खास कोने में छुपा लिया करती और खुद चंचल नौका सी इधर-उधर डोलने लगती।

फिर एकाएक ऐसा क्या हो गया कि उसके शबनमी आंगन की नरम धूप को अकस्मात घिर आई घटाएँ निगल गई और उसे आभास तक नहीं हो सका। सारा सच झूठ में कैसे बदल गया? प्यार की नींव इतनी कमजोर कैसे हो गई कि पुख्ता इमारत एकाएक हिलने लगी?

छह महीने में नई कोठी बनकर तैयार हो गई थी। गृहप्रवेश हुआ, मेहमानों से कोठी के वास्तुशिल्प की प्रशंसा सुनकर आकाश गदगद हो रहे थे।

दूर के रिश्तें की किसी बहन का ट्रांसफर साल भर पहले मुंबई में हुआ था। वे सब और जयपुर से शन्नो के भाई-भावज और बच्चे सभी आए थे। बरसों बाद उसके घर में ऐसी हलचल हुई थी। स्वर्ग के वैभव की बातें उसने पुस्तकों में पढ़ी जरूर थी, पर यहां तो सब कुछ जैसे आंखों की समक्ष था। हवनकुंड से उठती हुई धूप की सुगंध से संपूर्ण परिवेश सुवासित हो रहा था। एक कमरे से दूसरे और दूसरे से तीसरे में आ-जा जाकर आकाश बंगला दिखा रहे थे। ड्राइव वे के फर्श का यह पत्थर आगरा से मंगवाया है, लकड़ी हिमाचल से और मार्बल अयोध्या से कि तभी दूर की वह बहन हाथ घुमा कर बोली, "किसके लिए यह सब तामझाम है भैया, घर में बच्चे हो, तो सब अच्छा लगता है।"

"बच्चे भी होगें, वक्त आने दो।"

"लो! और सुनो इनकी,बारह साल हो गए अभी वक्त ही नहीं आया।"

"बारह साल? लगता है अभी कल की ही तो सहरा बाँधा था।"

उस दिन वह चली गई, पर महीने दो महीने के अंतराल पर उसके चक्कर लगने लगे। बात में से बात उठाने वाली चतुर स्त्रियों के मन की थाह विधाता भी नहीं ले सका, तो साधारण मनुष्य की तो बिसात ही क्या?

छुट्टी के दिन किसी बहाने कभी बच्चों को उनके यहां छोड़ देती, तो कभी दोनों मियां-बीवी, "इधर से गुजर रहे थे सोचा मिलते चले," के बहाने जब-तब आने लगे। आकाश को उनके बच्चों के साथ खेलने में ऐसा रस आने लगा कि जरूरी काम छोड़कर कभी उनके लिए टॉफी और चॉकलेट लेने से बाजार दौड़ पड़ते, तो कभी कपड़ों की परवाह किए बिना उसके लिए घोड़ा बन जाते। उसके जाने के बाद अक्सर कहते,"बच्चे से घर जन्नत हो जाता है।"

"सो तो है," शन्नो बुदबुदाती। दोनों में से किसी ने भी इस विषय को कभी गंभीरता से नहीं लिया था। पर पिछले एक वर्ष से सैकड़ो तरह के टेस्ट, दाइयों, डॉक्टरों से सलाह-मशविरा, जिसने जो कहा, जहां भी जाने की सलाह दी, सब कुछ किया... और फिर यह पता चल गया कि बच्चे होने की संभावना नहीं है। दौड़ में हारे हुए प्रत्याशी की भांति आकाश मायूस हो गए थे।

उन्हें तो यह एहसास अब हुआ था, पर शन्नो को तो विवाह के चार-पांच वर्ष बाद ही चिंता व्यापने लगी थी। पर मौज मस्ती के आलम में आकाश को कुछ सुनने की फुर्सत ही कहां थी। अब एकाएक पति की आंखों में उतरती उदासीनता और उनकी बाहों की पकड़ में जो ठंडापन वह देख रही थी, उससे वह दोहरी टूटने लगी थी। कुछ खोजती सी शन्नो की भयभीत आंखें जब-तब बादलों से भर-भर आती, पर उन आंसुओं की आवाज सुनने वाला तो उससे कुछ दूर सा होने लगा था। फिर भी उसने हिम्मत नहीं हारी थी। उसका हृदय उसे सांत्वना देता... वह स्वयं भी तो उसी नाव में सवार है, जिसमें उसका आकाश है। मिलकर खेह लेंगे। एक-दूसरे का दर्द बांट लेंगे। फिर और भी तो बहुत से रास्ते हैं...जिसे छाती से लगा लो, जिगर का टुकड़ा हो जाता है।

आकाश उसके साथ है, तो उसे और क्या चाहिए? पर क्या सचमुच आकाश उसके साथ है?

दूर के रिश्ते की यह बहन कोई खेल खेल रही है, इसका कुछ आभास उसके तिरिया चरित्र से शन्नो को हुआ तो था, किंतु आकाश की चाहत पर भरोसा न करने का अर्थ था खुद पर भरोसा ना रखना। वह सिर झटक कर फिर कहती... आकाश उसके साथ है बस! उसे और क्या चाहिए? और बस यह भरोसा ही उसे छलता रहा। वह जान नहीं सकी थी कि हरा-भरा दिखने वाला यह वृक्ष भीतर ही भीतर सूखने लगा है। घर के स्वामी का हक लेकर पैदा होता है पुरुष... स्वामिनी और अर्धांगिनी तो स्त्री भी बनती है, पर अनचाही स्थितियां पैदा नहीं हुई कि पद और अधिकार हमेशा उसी के छिनते रहे हैं।

जी बड़ी कोठी को घर बनाने में उसका एक-एक पल बीत रहा था, उस घर से उसका इतना ही संबंध जुड़ सका था? किस घर पर नाज करती है स्त्री? कोई घर उसका होता भी है? घर तो पुरुष का होता है। वह तो झूठे ही एक भ्रम पाल लेती है और फिर उस भ्रम को हकीकत बनाने में पूरा जीवन डरते-डरते काट देती है।

शन्नो के साथ भी तो यही हुआ था। उस दिन की एक-एक बात स्फटिक शिला में दिखते अक्स की तरह उसके सम्मुख तैरती रहती है। उसी दिन तो वह इस अलिखित भाग की लिपि से रूबरू हुई थी। पूरे सुकून, ठंडक की वह एक गुलाबी सुबह थी। रक्षाबन्धन आने में अभी तीन-चार दिन बाकी थे। डॉक्टरी पैसे से थोड़ा सा वक्त चुरा कर शन्नो के भाई परिवार सहित इस दिन बहन-बहनोई के घर आते थे।

"क्यों ना इस बार रक्षाबन्धन भैया के यहां मनाएं?" आकाश ने कहा था।

"नेकी और पूछ-पूछ! इससे अच्छा और क्या हो सकता है।" फौरन शन्नो ने चलने की तैयारी शुरू कर दी थी, "फोन मत करना, सबको सरप्राइस देंगे?"

कार में कुछ गड़बड़ी आ रही थी। दोनों दोपहर की ट्रेन से चले गए। कुछ घण्टों बाद जयपुर आ गया।

थोड़े बहुत यात्री उतरे थे। तांगे और रिक्शावालों ने यात्रियों को घेरा। कहीं टैक्सी ना देख शन्नो को एक तांगे में बैठाकर और सूटकेस रखवा कर आकाश बोला," बच्चों के लिए तो कुछ लाए ही नहीं। फल, मिठाई तो ले लें। ऐसा करो तुम चलो, मैं मार्केट से होकर पहुंचता हूं, दूर ही कितना है?" और तांगेवाला शन्नो को लेकर आगे बढ़ गया।

भाई का क्लीनिक घर से सटा हुआ है। हमेशा की तरह मरीजों की भीड़ थी। चारों तरफ नाम है, लंदन में पढ़ा हुआ है। कस्बेवालों के लिए यह बहुत बड़ा बात है। पैसा और शोहरत विरासत में मिले हैं।

भतीजा बाहर खेल रहा था। बुआ को आई देखकर अंदर भागा और उसके साथ भाई-भावज बाहर निकल आए। नौकर ने दौड़कर सूटकेस थामा। भाभी ने आगे बढ़कर शन्नो को गले लगाया। भैया ने तांगेवाले को रुपए दिए।

"अरे ना कोई फोन ना खबर, अकेले कैसे? आकाश कहां है? नहीं आए क्या?"

"मिठाई और फल खरीदते हुए आ रहे हैं साले साहब के लिए।"

"अरे! उसकी क्या जरूरत थी शन्नो, कहां उतरे थे, गाड़ी भेज दूं।" भाई ने ड्राइवर को आवाज दी।

"रहने दो भैया, आते ही होंगे। एक दिन रिक्शा या तांगे में ही सही।"

भाभी ने चाय का पानी चढ़ा दिया था और नाश्ते के सामान से मेज सज गई थी।

"शन्नो बेटी, हाथ मुंह धो लो बहनोई जी भी आते ही होंगे।"

बातचीत में आधा-पौन घन्टा बीतने को हुआ था। भाई क्लीनिक से उठकर आए, "आकाश अभी तक नहीं आए। लक्ष्मण जा देख तो कहां रह गए।"

"जगतगुरु की दुकान तक जाने की बात हुई थी।" शन्नो के चेहरे पर चिंता की रेखाएं उभरी।

लगभग आधा घन्टा बाद लक्ष्मण अकेला लौटा था।

"दामाद साहब तो वहां दिखाई नहीं दिए।"

"तूने ठीक से देखा तो था?"

"हां भैया, एक ही तो सीधा बाजार है देखता ही आ रहा हूं।"

"बीस-पच्चीस साल पुराना नौकर है, उससे गलती नहीं हो सकती।" वे खुद स्कूटर उठाकर निकल गए।

जगतगुरु ने बताया कि दामाद साहब तो दुकान पर आए ही नहीं। सारा कस्बा छान मारा। सबकी सांस ऊपर की ऊपर, नीचे के नीचे, सौ-सौ ख्याल। पैसे वाले हैं, कहीं किसी ने कोई शरारत तो नहीं की।

मुंबई फोन पर फोन मिलाए , कोई उठा ही नहीं रहा था। शन्नो ने बगल के वर्मा साहब का नंबर दिया। दो-तीन बार करने पर नौकर ने फोन उठाया और पूछने पर बताया कि अभी दस मिनट पहले आकाश टैक्सी से उतरते दिखाई दिए थे। रात हो रही थी। तुरंत घर फोन मिलाया, तो नौकर ने बताया कि सब सो रहे हैं। बिना देर लगाए शन्नो के भाई मुंबई रवाना हो गए।

दूसरे दिन सुबह दस बजे के करीब लौटकर उन्होंने जो बताया था उसे सुनकर सबको जैसे लकवा मार गया था। "आकाश दूसरा विवाह करेगा। कहता है कि उसने बहुत सोच समझकर यह निर्णय लिया है। उसे बच्चों की जरूरत है, जो शन्नो पूरी नहीं कर सकती। शन्नो से उसे कोई शिकायत नहीं है। उसके साथ रहना चाहे, तो उसे कोई एतराज भी नहीं है, लेकिन दूसरा विवाह हो जाने के पश्चात। अब आप लोग जैसा उचित समझे करे।" अंतिम बात कहते हुए भाई ने शन्नो की तरफ देखा।

"नहीं! ऐसा नहीं हो सकता... यह झूठ है... मजाक किया है उन्होंने...!" और शन्नो दरवाजे की तरफ लपकी थी।

"कहां जा रही हो?"

"मुंबई।"

"ऐसे कैसे मुंबई जाओगी, पागल हो गई हो क्या। यहां आओ," और भाई ने खींचकर उसे अपने पास बिठाया।

"मजाक नहीं है, यह सच है। दो घंटे उससे मेरी बात होती रही, पर कोई नतीजा नहीं निकला। फल-मिठाई खरीदने वाली बात भी झूठी थी। दरअसल वह तुम्हें यहां तक छोड़ने आया था। रिश्ते की जो बहन है, उसने अपनी चाची की लड़की से उसके विवाह की बात पक्की भी कर दी है। तुम्हारे वहां रहते हुए विवाह में अड़चन थी। आर्य समाज मंदिर में विवाह होगा।" भाई की बात पूरी होने से पहले ही शन्नो मूर्छित हो गई थी।

उपचार होने पर कुछ देर बाद आंख खुली, तो उसने भाभी को अपने सिरहाने बैठे देखा। शायद इंजेक्शन दिया गया था, जिसकी वजह से हाथ दुख रहा था।

कुछ तलाशती हुई भाभी की नजरें शन्नो के चेहरे पर स्थिर थी। कोई किसी से क्या कहें? मन नहीं मानता। पर अगर यह सच है, तो पल भर में क्या से क्या हो गया था, पहाड़ से सीधा खाई में।

महीनों तो उसने इस भ्रम में काट दिए थे कि सच कुछ और है... फिर पूरा सच गले के नीचे उतारने के लिए उसने कितना जहर पिया था। ख्वाहिशों के चलते आत्मीय संबंध कितने बेमानी हो जाते हैं? इतना प्रपंच करने की क्या जरूरत थी? हाथ पकड़ कर घर से बाहर कर दिया होता, तो भी वह क्या कर लेती? शायद इतने बेगैरत नहीं हो सके होंगे। अपनी नजर में कुटिल आदमी भी कुछ साफ दिल बना रहना चाहता है, नहीं तो मन का बोझ कैसे हटे?

शन्नो का मन नहीं माना। भाई ने उसका मन रखने के लिए ही एक दो बार मुंबई जाकर आकाश को समझाने की कोशिश भी की थी कि बच्चा गोद लिया जा सकता है। जन्म होते ही दिलवा दूंगा... कौन जाने फिर अपना हो जाए... ऐसे बहुत से केस हुए हैं... पर सब तर्क और कोशिशें नाकाम हुई थी। रिश्ते की बहन ने बहुत सारा रंग चढ़ा दिया था। कहते हैं रिश्ते जीवन को संपन्न करते हैं, उसे अर्थ देते हैं... जरूर देते होंगे...पर अर्थपूर्ण रिश्ते बनाना जैसे हर पल पहाड़ पर चढ़ने जैसा है और टूटना छोटी से कंकड़ से चूर-चूर हो जाने वाले कांच के उस आईने की तरह है जो टूटकर ऐसा

बिखर जाता है कि बटोरने के लिए एक जिंदगी कम पड़ जाती है। शन्नो का जो अपमान हुआ था सो हुआ था, भाई भी कम अपमानित नहीं हुए थे। उसका रुतबा और अहं दूर तक आहत हुए थे। अनायास इस सारे घटनाक्रम का सूत्र उन्होंने अपने हाथों में थाम लिया और तब शुरू हुआ एक दूसरा सिलसिला।

आकाश की ओर से डाइवोर्स का दबाव पड़ रहा था। साल भर इसी उधेड़बुन में बीत गया और एक दिन शन्नो ने डाइवोर्स के पेपर पर साइन करा कर उसके भाई ने आकाश के मुंह पर दे मारे थे।

और फिर... दो बच्चे वाले एक विधुर डॉक्टर के साथ शन्नो की दूसरी शादी की बात चलाई गई।

"वह समझता क्या है अपने को... मैंने भी उससे पहले शन्नो का विवाह करके ना दिखाया तो मेरा नाम नरेंद्र नहीं?"

शन्नो के हृदय और दिमाग को धो-पोंछकर वहां भावी पति के रूप में किसी एक विधुर डॉक्टर युवक की तस्वीर चस्पां करने की जिम्मेदारी भाभी ने ओढ़ी थी।

"अट्ठाइस की उम्र ही क्या होती है? आजकल तो इस उम्र में लड़कियों का विवाह होता है। वह तो जल्दी विवाह हो गया था इसका, तो इतनी सी उम्र में यह दुख आन पड़ा वर्ना... राज करेगी हमारी शन्नो रानी, तकदीर की अच्छी है, जो तुरंत की तुरंत ऐसा योग्य वर मिल गया।"

यह सब शन्नो की उपस्थिति में कहा गया था, लेकिन उसने भाभी की बातों का कोई जवाब नहीं दिया।

भाभी ने सोचा ऐसी जल्दी भी क्या है! वक्त गुजरने के साथ सब ठीक हो जाएगा। लेकिन वक्त गुजरता गया। शन्नो की तरफ से कोई जवाब न पाकर एक दिन भाभी ने चिंतित होकर कहा,

"शन्नो बेटी क्या कहती हो, तुम्हारे हित को देखते हुए हमने यह कदम उठाया है। उसके बच्चों को एक माँ मिल जाएगी और तुम्हें तुम्हारा एक घर। हम आज है कल नहीं। जमाना अकेली औरत को इज्जत से जीने नहीं देता।"

वह जानती थी कि भाई-भाभी का यह अतिरिक्त प्यार है, जो उन्हें इतना संवेदनशील बना रहा है। पर यह दुलार उसे इतना कमजोर भी कर रहा था कि अपनी जिंदगी के फैसले करने का अधिकार भी उससे छीन रहा था।

मंजिल पर पहुंचने से पहले ही राहों ने उसे पीछे धकेल दिया था। उसे लगा था कि उसका भविष्य उलझे हुए धागों की तरह हो गया है कि सिरा ढूंढते-ढूंढते सैकड़ो गांठें पड़ती जा रही है। बहुत कहने पर भी उसने इस नए रिश्ते के लिए हामी नहीं भरी थी।

आखिर भाभी ने चांदनी को बुलावा भेजा था। वह बीमार मां को देखने आई थी। शन्नो की यह खबर सुनी, तो उसे विश्वास नहीं हुआ। दोनों बचपन की सहेलियां थी। तभी भाभी का बुलावा भी आ पहुंचा। उन्होंने सभी बातें चांदनी के सामने रखी और कहा, "अब तू ही समझा इसे। इतना योग्य पर मिल रहा है कि जैसे इसी के लिए बना हो... जाने क्या पढ़ने की बात कह रही है, इतना ही आसान है क्या?"

आज भी याद है चांदनी को, विवाह तो हो ही गया था शन्नो का, पर बीए का फॉर्म भरने के लिए उसने उसे कितना समझाया था। उस समय शन्नो ने यह कहकर कि जो पाने के लिए पढ़ा लिखा जाता है वह तो मिल गया, बात हवा में उड़ा दी थी।

"भाभी ने जिस लिए मुझे बुलाया है, क्या सोचा उसके विषय में?"

शन्नो चुप थी।

"भाई-भाभी दोनों तुम्हारे हित की बात ही तो कह रहे हैं।"

"पता नहीं मेरा हित किसमें है? जो हुआ वह इस तरह होगा, और अब कल क्या होगा.. कुछ भी मेरे बस में नहीं है। तू ही बता क्या करूं?"

"बस में तो शन्नो किसी के भी कुछ नहीं है। जो घट जाता है, हमें तो उसे मान लेने भर का अधिकार है। मैं तो तुम्हारे सामने हूं।"

दो वर्ष पहले चांदनी के पति की मृत्यु एक एक्सीडेंट में हो गई थी। वह तो कहो कि चांदनी तो पहले से ही सर्विस में थी। पति के असमय देहांत से उपजा दर्द परिवार की जिम्मेदारियों में दब कर रह गया और अब परिवार ही जीवन का एकमात्र लक्ष्य...।

"तू किस सोच में पड़ गई चांदनी?"

"कुछ नहीं.. बीते हुए समय की दुखद बातें पीड़ा दे जाती है।"

शन्नो ने उसके कंधे पर हाथ रखा था।

"क्यों अपने को दुखी करती है रे! कम से कम तुम्हारी जिंदगी किसी मकसद के लिए तो पिस रही है। वह मकसद दो कदम आगे बढ़ने की हिम्मत तो देता है। मेरी नियति तो पहाड़ी ढलान के लुढ़कने जैसी निरुद्धेश्य हो गई है। खाई के सिवा कुछ दिखाई नहीं देता।"

"क्यों! फूलों की घाटियां भी तो आंचल पसारे खड़ी है।"

"और कांटे? वे भी तो कहीं होंगे। इस रास्ते मुझे जाना ही नहीं है। एक सम्मानित जीवन जीने की लालसा में हमेशा स्त्री ही क्यों अटकती आई है? कुछ अनचाहा हुआ नहीं कि रिश्तो के रंग उसकी चूनर से बादलों से उड़ जाते हैं। दोष आकाश का होता, तो क्या मैं उससे इस तरह नाता तोड़ लेती? ममत्व की सबसे ज्यादा जरूरत तो स्त्री को ही होती है, पर वह तो पुरुष के दोष को भी अपने सर ओढ़ कर उसकी छांव बने रहना स्वीकार कर लेती है। ऐसा नहीं हो सका, तो अब दूसरा कुंठित जीवन जीने की मजबूरी क्यों स्वीकार करूं?"

"लेकिन शन्नो, जीने का कोई मकसद तो होना चाहिए ना! तुम जैसी लड़की जरूर निभा लेगी।"

"नहीं चांदनी, रिश्ते निभाए या ढोए नहीं जाते। रिश्तो को जिया जाता है। ढोए या निभाए जाने की स्थिति में वे धड़कना बंद कर देते हैं और नासूर बन जाते हैं। किसी ताकतवर पेड़ की छाया तलाशते रहना जरूरी है क्या? खुद भी तो पेड़ बना जा सकता है। आकाश को बच्चे की जरूरत है, मेरी नहीं। डॉक्टर के पास दो बच्चे हैं, उसे उनके

लिए एक मां की जरूरत है... रिश्तो के ऐसे दायरों में बहुत सी मजबूर शन्नो खड़ी होती आई है, पर यह शन्नो अब सिर्फ एक जरूरत भर नहीं बन सकती।"

चांदनी हैरान थी। यह दब्बू और शर्मीली लड़की एकाएक इतनी निर्भीक कैसे हो गई है। कुछ तो है जो उसे लीक पर चलने से हठात रोक रहा है। एक आहत मन इतना स्वाभिमानी भी हो सकता है, जो भविष्य को इतनी कड़ी चुनौती दे डाले?

खामोश हो गए लम्हों को चांदनी ने जबान दी, "हकीकत और जज्बात में बहुत दूर का रिश्ता होता है शन्नो... फिर भी तूने जो सोचा है, उसमें यह चांदनी तेरे साथ है।"

उसका यह निश्चय देखकर भाई-भाभी ने इतना ही कहा था, "अगर तेरा यही फैसला है, तो तेरे खाने-पहनने से यहां के कुएं नहीं खाली हो जाने वाले। तेरा भाई तुझे जीवन भर राजकुमारी की तरह रख सकता है। शन्नो के दुख ने उन्हें भीतर तक तोड़ दिया था। वे उसे खुश देखना चाहते थे।

पल भर के लिए शन्नो कुछ नहीं कह सकी। उनकी भावना को ठेस पहुंचाने से पहले वह मर जाएगी। फिर साहस बटोर कर उसने कहा था, "मैं कितनी नसीबवाली हूं कि मुझे आप मिले। पर भैया-भाभी जिंदगी के थोड़े से हिस्से के बारे में सोचने का अधिकार मुझे भी दे दो। मुझे आपका सहारा नहीं, साथ चाहिए।"

जवाब में दोनों ने उसके कंधे थपथपाकर भरे हृदय से कमरे के बाहर चले गए। इससे पहले कि उसके भविष्य की किताब का पहला पन्ना गलने लगे, रलमल करती हुई आंखों को शन्नो ने हथेलियां से पोंछ डाला था।

सम्पर्क- पूजा गुप्ता
भगवानदास की गली
आदर्श स्कूल के सामने
गणेश गंज, मिर्जापुर (उत्तर प्रदेश), पिन कोड - 231001
फोन नंबर - 7007224126
ईमेल - guptaabhinandan57@gmail.com

राजकुमार कुम्भज की कविताएँ

राजकुमार कुम्भ, 12 फ़रवरी, 1947

अनेक महत्वपूर्ण तथा चर्चित कविता-संकलनों में कविताएँ संकलित/ देश की लगभग सभी महत्वपूर्ण, श्रेष्ठ पत्र-पकत्रकाओं में रचनाओं का निरंतर प्रकाशन।

सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' द्वारा सम्पादित चौथा सप्तक के कवि/ अभी तक पांच दर्जन से अधिक स्वतंत्र कविता-पुस्तकें प्रकाशित

संपर्क: 331, जवाहर मार्ग, इंदौर, 452002 (म.प्र.) फ़ोन: 0731-2543380

ईमेल : rajkumarkumbhaj47@gmail.com

मनुष्य होने के शिल्प

सवाल अनगिनत हैं
और अनगिनत हैं सलीक़े भी
ज़िंदगी के, कविता के, भाषा के
लेकिन मनुष्य होने के शिल्प भी कोई कम नहीं
जो आते हैं तो कविता से ही।

माँ ने सिखाया

माँ ने बर्तन माँजना सिखाया
मैंने शब्दों को माँजना सीख लिया
माँ ने मिर्च पीसना सिखाया
मैंने दुःख को पीसना सीख लिया
माँ ने कपड़े धोना सिखाया

मैंने घृणा को धोना सीख लिया
माँ ने घर बुहारना सिखाया
मैंने शत्रु को बुहारना सीख लिया
माँ ने आग पूजना सिखाया
मैंने आग से खेलना सीख लिया
वह सिखाती गई, मैं सीखता गया
माँ ने दिखाई दुनिया, मैं देखता गया
उसने समझाया मुझे, मैं समझता गया
फिर एक दिन माँ ने बताया मुझे
कि चारों तरफ़ बढ़ गया है अन्याय
अब, छोड़कर माल-असबाब सब
घर के लिए, कविता के लिए, लड़ना होगा
और मैं लड़ने लगा।

माँ ने कहा है

माँ ने कहा है
कि हत्यारे को हत्यारा
और नंगे को नंगा कहने का
यही, सही वक़्त हुआ जाता है
तो अब, हत्यारे को हत्यारा
और नंगे को नंगा कहना ही होगा
और मैं कहने लगा।

वे होंगे कुछेक ही फिर-फिर

वे होंगे कुछेक ही फिर-फिर
जो समर्थक या भक्त कहलाएंगे
और जो नहीं होंगे भक्त या समर्थक
दुश्मन क़रार दे दिए जाएंगे
वे, सुबह-सुबह काम पर जाएंगे
और जब शाम होने पर लौटेंगे घर
घर की जगह देखेंगे जो कुछ भी
उस सब से भीतर तक डर जाएंगे
डराएंगे वे कुछेक ही फिर-फिर
इधर से घुसेंगे, उधर निकल जाएंगे
उधर से घुसेंगे, इधर निकल आएंगे
और फिर उजालों में उजालों की तरह
देखते ही देखते ग़ायब हो जाएंगे
डंडे लहराएंगे, झंडे फहराएंगे,
चमकाएंगे तलवारें तमतमाते चेहरे लिए
कोई भी उनसे पूछ नहीं पाएगा सवाल
मलाल होगा सभी को होगा मलाल
दूध में दरार, पानी में प्रहार देखेंगे सब
लेकिन नहीं मुनासिब कुछ भी कर पाएंगे
जाएंगे, जाएंगे, सुलगती भट्टियों की तरफ़ जाएंगे
आह भर-भरकर आँसू बहाएंगे
समर्थक या भक्त होंगे जो भी
इन्हीं-इन्हीं लोगों की हँसी उड़ाएंगे फिर-फिर
और नाचते-गाते हुए ढोलक बजाएंगे

हराएंगे वे ही जो दुश्मन कहलाएंगे
वे होंगे कुछेक ही फिर-फिर।

सिर्फ़ सुनो, बोलो नहीं

सिर्फ़ सुनो, बोलो नहीं
और सच तो बिल्कुल भी नहीं
क्या आप जानते नहीं हैं
कि आप निगरानी में हैं?
मुनादी है कि बादल बरसेंगे
और प्यासे फिर-फिर तरसेंगे
मुनादी है कि रोटियाँ पेड़ पर लगेंगी
और भूखे फिर-फिर सपना देखेंगे
मुनादी है कि विकलांग दौड़ेंगे
और एवरेस्ट फ़तह कर लेंगे
आरामकुर्सी पर आराम करेंगे मगरमच्छ,
सभाओं में प्रवचन देंगे और आँसू बहाएंगे।

नहाएंगे ख़ून से साधू-संत, भद्र-अभद्र,
संगीतज्ञ होड़ मचाएंगे राग-दरबारी के लिए
कै करेंगे विचारक, हक़लाएंगे
लोहार सभी हो जाएंगे हलवाई
छोड़कर हुनर अपना जलेबियाँ बनाएंगे
फिर भी होंगी कहीं वे स्त्रियाँ भी होंगी
जो सुई में धागा डालती रहेंगी
सिर्फ़ सुनो, बोलो नहीं।

चेहरे पर चेहरा

-महाराज कृष्ण भरत

फेसबुक !
शायद तुम सब कुछ जानते हो
जो भी घटता है मानव के साथ
या फिर जो घट रहा होता है
पर क्या सही में तुम
सब कुछ जानते हो
एक बात स्वीकार करनी ही पड़ेगी
तुम्हारा कद रिश्तों से भी बड़ा है।

घर से किसी गंतव्य के लिए
प्रस्थान करने वाले
किसी और स्थल से चुपके
लाइव हो जाते हैं
आजकल बच्चे रिश्तों से अधिक
फेसबुक में
सुरक्षित पाते हैं
संवाद हो न हो
लाइक्स का अंक गणित
मायने रखता है।

फेसबुक !
तुम महान हो महान

तुम्हारी कीर्ति के झंडे
जग ज़ाहिर है
इन दिनों
दिल बजे यां न बजे
अंगूठा बजना चाहिए।

अतीत के झरोखे से

कभी कभी अतीत
ऐसे ही बोल उठता है
जैसे बरसों के बिछड़े
किसी अनजान सफ़र पर
चलते हुए टकराए
जैसे आस मिलन की हो
और मीत खो जाए
जैसे वापस आ पाना संभव न हो
कोई तार मिल जाए।

यह वक्त की लड़ियां हैं श्रीमन् !
टूटती बिखरती हैं
फिर जुड़ जाती हैं
वक्त तो अपना इतिहास
लिख देता है
वहीं कहीं धुंधलके में
होती हैं हमारी स्मृतियां

सब कुछ रेत की तरह छूट जाता है।

हम क्या कहें

समय ने हमें छला है
या
हम समय की धड़कनों को
महसूस नहीं कर सके
जो जहां था जैसा था
हमने किसी को छुआ नहीं
किसी को कुछ कहा नहीं
चलते गए इस पार उस पार
हमें क्या पता था
किसने हमें रोका, किस ने हमें टोका।

नदी की धार हो
या पर्वतों की श्रृंखलाएं
कंदराएं
खाइयां
समुद्र का गरजता वेग
हमने तो प्यार ही बांटा
अंधेरा हो या प्रकाश
हर जगह आवाज़ को गले लगाया है
पलक पांवड़े बिछाएं हैं
हमें क्या पता

पानी बह चुका है
सब कुछ ढह चुका है।

कंदराएं
खाइयां
पट चुकी हैं
समंदर का वेग शांत हो गया है
किस को आवाज़ दें
पर्वतों से टकरा कर
वापस लौट आती हैं
हम जहां कल थे
हम जहां कल होंगे
हम तो वही हैं जहां थे
जहां हमें होना था
बस मील के पत्थर बदल चुके हैं
नेम प्लेटें लग चुकी हैं
अंदर आना मना है।

-महाराज कृष्ण भरत

मेरी कश्मीर यात्रा एक : कश्मीरायण

(यात्रा वर्णन)

प्रो. प्रकाश शंकरराव चिकुर्डेकर

यात्रा मेरे जीवन का अहम अनुभव है। बचपन से लेकर अब तक की जीवन यात्रा में मुझे यात्रा के प्रति अकथनीय जिज्ञासा रही है। यात्रा में मुझे अनेक विध अच्छे और बुरे अनुभव आए हैं। हिंदी के प्रसिद्ध यात्रा कार महापंडित राहुल सांकृत्यायन जी ने सही कहा है–

"सैर कर दुनिया की गाफिल जिंदगानी फिर कहां।
जिंदगी गर कुछ रही तो नौजवानी फिर कहा।।"

फिलहाल जन्म एक ही बार होता है और जवानी भी केवल एक ही बार आती है। साहसी और मनस्वी तरुण,तरुणीयों को इस अवसर से हाथ नहीं धोना चाहिए। महापंडित जी कहते हैं कि– हे जवानों कमर बांध लो और संसार तुम्हें तुम्हारे स्वागत के लिए बेकरार है, घुमक्कड़ हो जाओ, यात्रा पर निकलो।

यात्रा पर निकलने की तैयारी चल रही थी उसी दरमियान दोबारा कश्मीर यात्रा पर निकलने के लिए मन कर रहा था तभी एक मराठी गीत रेडियो पर सुनाई दिया।

"हे चिंचेचे झाड दिसे मज,
चिनार वृक्षापरी
दिसशी तू नवतरुणी काश्मिरी"

इस ब्लैक एंड व्हाइट मराठी फिल्म में अभिनेत्री उमा भेंडे, अभिनेता काशीनाथ घाणेकर और गायक महेंद्र कपूर की पहाड़ी आवाज की संगत हाल ही में सुना था। मन को आश्चर्य हुआ कि "चिनार" का पेड़ इतना सुन्दर क्यों है…….!

मैं बचपन से इस युगल गीत को रेडियो पर सुनता आ रहा हूं, लेकिन कभी इसकी व्याख्या करने की कोशिश नहीं की। जब मैं और मेरा परिवार कश्मीर गए तो

कश्मीर की खूबसूरती और चिनार के पेड़ देखकर मेरा मन समझ गया कि “चिनार” का पेड़ और कश्मीर की खूबसूरती को।

चिकुर्डेसांगली के- "विशाल सागर टूर्स एंड ट्रैवेल्स -" कंपनी ने कश्मीर के मेरे सपने को साकार किया। कंपनी के प्रबंधक भी अपने पूरे परिवार के साथ हमारे साथ आए थे। चूंकि टूर में ज्यादातर लोग शिक्षक थे, इसलिए कब वे आपस में उलझ गए, उन्हें पता ही नहीं चला। फ्लाइट के टिकट बुक होने के बाद से तैयारियां जोर शोर से शुरू हो गई। कश्मीर जाने-से पहले मेरे मन में कई सवाल थे। उदाहरण के लिएण कैसे किया होगाहमारे पूर्वज ऋषि कश्यप ने कश्मीर का निर्मा :? हवाई यात्रा का मेरा पहला अनुभव.......वास्तव में स्वर्ग या जन्नत क्या है? कश्मीर से धारा 370 और 35ए हटाने के बाद कैसा होगा कश्मीर? क्या कश्मीर सचमुच वैसा ही है जैसा कई फिल्मों में दिखता है? ऐसे कई प्रश्न मेरे मन में थे।

आरंभ में हमने अपने गांव से निजी स्लीपर कोच बस से कोल्हापुर किनी वाटरसुबह हमारी कार मुंबई एयरपोर्ट के पास -मुंबई तक की यात्रा की। सुबह - पहुंची लेकिन एयरपोर्ट हम समय से पहले पहुंच चुके थे। इसी कारण हमें प्रवेश द्वार पर ही सुबह आठ बजे तक इंतजार करना पड़ा। आपको आपकी यात्रा से पहले दो या तीन घंटे से अंदर जाने के लिए नहीं दिया जाता।हवाई जहाज के उड़ान से पहले आपको दो घंटे से पहले ही अंदरजाने की इजाजत है। उसी दरमियान हमने देखा कि अनेक यात्रियों को ले जाकर आने जाने वाली अनेक कार गाड़ियां, बस गाड़ियां आती और जाती रही। सही समय के बाद हमने अपनी बैगों कीडिजिटल मेटल डिटेक्टर द्वाराजांच करवाई। एक व्यक्ति के लिएट्रैवल बैग 15 किलोग्राम और छोटा पर्स या शबनम 05-07 किलोग्राम सामान तक ले जाने की इजाजत है। उससे अधिक 05 किलो तक सामान के लिए 3000 अधिक भरने पड़ते हैं। सही समय पर हमें अंदर जाने दिया।

मुंबई के भव्य दिव्य हवाई अड्डे को देखकर मेरा दिल भर आया। इंडिगो” कंपनी का विमान हमें ले जाने के लिए तैयार था। प्रमुख द्वारा से हवाई अड्डे के दफ्तर और वहां से हमें हवाई जहाज तक वातानुकूलित बस से छोड़ा गया। दरवाजे पर फ्लाइट अटेंडेंट, पायलट और एयर होस्टेस ने मुस्कुराते हुए हमारा स्वागत

किया। विमान में चढ़ने के बाद मैंने सबसे पहले कॉकपिट में देखा। बैठने की व्यवस्था सिनेमा थिएटर के सीट नंबर की तरह थी। प्रारंभ में, हवाई सुंदरी ने हवाई जहाज उड़ान संबंधी कुछ सूचना और जानकारी दी। अपनी राष्ट्रीय भाषा में कम लेकिन सटीक शब्दों में निर्देश दिए। विमान ने रनवे छोड़ दिया। हमने तुरंत अपनी सीट बेल्ट कस ली, विमान आसमान में उड़ गया। मन रोमांचित हो गया। जैसे ही विमान ऊपर चढ़ा, मुंबई शहर की विशाल इमारतें बक्से जैसी दिखने लगीं। हवाई यात्रा के दौरान मैंने कुछ चीजों पर ध्यान दिया। हवाई सुन्दरियाँ न केवल सुन्दर होती हैं, बल्कि वे अपनी जिम्मेदारियां वह बखूबी से निभाती है। एक बात को बारीकियां से देखा कि हवाई जहाज़ पर पानी के अलावा कुछ भी मुफ़्त नहीं है। हवाई अड्डे पर 100 में एक कप कॉफी या चाय 100 में पीने के पानी की बोतल,साफ सुथरापन और आपकी यात्रा की सारी सुविधाएं भी वहां आपको मिलती है। हमारे हिसाब से काफी महंगी चीज थी लेकिन हमारे आस पड़ोस में बैठे अमीर लोग अधिक पैसों को नहीं देखते, वह खरीदते थे। कोल्ड ड्रिंक 500 में बर्गर पिज़्ज़ा 750 से लेकर 1000 रुपए तक हवाई जहाज में बेचा जा रहा था। इन्हीं दरों पर काम अधिक मात्रा में हवाई अड्डे पर भी सुविधा मिलती है।

कोहरे के बीच तीन घंटे की यात्रा के बाद विमान की बंद खिड़की से बाहर देखने पर बर्फ से ढके पहाड़ों की चोटियाँ दिखाई देने लगीं। हवाई जहाज की खिड़की से बाहर झांकने के बाद मन उल्हासित हुआ। सामने शुभ्र दिखने वाला आकाश और दिल की बढ़ती धड़कन एक अलग प्रकार का आनंद दे रही थी। तभी विमान की गति कम हो गई। यहाँ तक कि जब हम मेला यात्रा में लगे झूलेपालने से - नीचे आते हैं ठीक वैसी स्थिति होती हैमुझे अपने पेट में एक डर का गोला ... -श्रीनगर हवाई अड्डे पर पहुँच गए। हमने देखा की जगह महसूस हुआ। हम सुरक्षित जगह मिलिट्री के सैनिक,गार्ड, पुलिस मौजूद थे। सुरक्षा बहुत कड़ी थी। सबसे पहले मैं शो केस में रखे बड़े लकड़ी के हंटर की ओर आकर्षित हुआ।श्रीनगर हवाई अड्डावहां की प्राकृतिक सुंदरतारंगी बिरंगे गुलाब के फूलों ने मन मस्तिष्क को प्रसन्न कर दिया। एयरपोर्ट से निकलने से पहले हमने मोबाइल फोन में कश्मीर का एक अस्थायी सिम कार्ड लगाया। ट्रैवल कंपनी द्वारा बुलाई गई 20 सीटर वाली

मिनी लग्जरी बस और ड्राइवर इमरान हमारे स्वागत के लिए उपस्थित था । हवाई अड्डे से हम होटल के लिए निकल पड़े।

रास्ते में हमने प्रसिद्ध झील "दल सरोवर" का चक्कर लगाया और निजी वाहन से लॉज में रुकने से पहले "निशात बाग" देखने गए। बर्फ से ढकी पीर पंजाल श्रृंखला के नीचे एक विस्तृत झील "डल झील" है। निशात बाग पूर्व में डल झील के किनारे स्थित है। निशात का अंग्रेजी अर्थ 'हैप्पी गार्डन' है। सम्राट जहाँगीर और बेगम नूरजहाँ ने इस उद्यान का दौरा किया था। निशात बाग चिनार और सरू के पेड़ों की कतारों से घिरा हुआ था। अनेक रंग, (फूलों पर बैठी तितलियाँ भी पहचानी नहीं जा सकीं।छोटे झरने -। छोटेविभिन्न आकृतियों के फूल बगीचे की शोभा बढ़ा रहे थे (और ठंडे पानी के फव्वारे मन को आकर्षित कर रहे थे। बगीचे से बर्फ से ढकी चोटियाँ आसमान में सफेद बादलों की तरह लग रही थीं। निशात बाग कश्मीर का सबसे बड़ा मुगल उद्यान है। बगीचे में वनश्री को देख कर मन मोहित हो गया।

श्रीनगर में हम रात के लिए "लोन पैलेस लॉज" में रुके। जब हम वहां पहुंचे तो हमारा बहुत अच्छा आतिथ्य सत्कार किया गया। लॉज पूरी तरह से लकड़ी से बना है। कश्मीर के बंगले वास्तव में वास्तुकला के अद्वितीय उदाहरण हैं। बिल्कुल

तस्वीरों की तरह दिखते हैं बंगलेलीन बिछा कमरे में फर्श पर पूरी तरह से का !... हुआ था। ओढ़ने के लिए गद्दे जैसी मोटी रजाई दी गई थी। लकड़ी का नक्काशीदार दीवान कश्मीरी शिल्प कौशल का आभास करा रहा था। कश्मीर के हर हस्तशिल्प उत्पाद में चिनार के पेड़ का एक पत्ता होता है। बाथरूम में 24 घंटे गर्म पानी था, रात में हमने पनीर मसाला और मिक्स वेज खाया। तीन मंजिला लॉज की सबसे ऊपरी मंजिल पर मालिक स्वयं श्रीमान थे। इरशाद भाई रहते थेबड़े दिल वाला . आदम ीबड़ी -अपार धन लेकिन वाणी में संयमित। कश्मीर के सभी घरों में बड़ी ! रंगीन कांच की खिड़कियाँ होती है और खिड़कियों को ढकने के लिए त्रिकोणीय बिरंगी खिड़कियाँ वास्तुकला की सुंदरता -का उपयोग किया जाता था। ये रंग टोपियों में चार चांद लगा देती हैं। सड़क पर आवाजाहीबहुत कम थी। हालाँकि, आंतरिक सड़कें बहुत संकरी थीं और हमें कोंकण की सड़कों की याद दिलाती थीं। प्रत्येक घर की परिसर की दीवारें ऊँची हैं। हर घर में एक बड़ा लोहे का गेट होता है। साथ ही वहां सभी का अपना घर भी है। किराये के मकान में कोई नहीं रहता। हर घर के बाहर का बगीचा और बगीचों में गुलाबों से लदे पेड़ कश्मीरी खूबसूरती का नजारा पेश कर रहे थे।पहला दिन हवाई जहाज यात्रा और श्रीनगर की बहुत ही सुन्दर मुगल गार्डन के कारण यादगार रहा।

श्रीनगर की सुबह बहुत सुहावनी थी। नाश्ता ख़त्म करके हम ट्रेवलर गाड़ी में बैठ गये। दिलचस्प बात यह है कि मालिक ने हमें सात दिनों तक घूमने फिरने के - लिए एक बिल्कुल नई टेम्पो ट्रैवलर गाड़ी दी थी। कार के ड्राइवर श्री समीर भाई भी साथ थे। कश्मीर के अधिकांश पुरुष मुझे एक जैसे ही दिखते थे। कश्मीरी युवा गोरे रंग, लंबे, लाल गाल, काले बाल, दो भौंहों से बढ़ती हुई तीखी नाक, गालों पर भरी दाढ़ी और अपने धर्म को पहली प्राथमिकता देने वाले लोग होते हैं। इसमें कोई शक नहीं कि कश्मीरी महिलाएं भी बेहद खूबसूरत होती हैं।उद्योग व्यवसाय व्यापार में और रास्ते पर कश्मीरी पुरुष ही दिखाई देते हैं महिलाएं घर से बाहर तक कहीं कहीं ही दिखाई देती है।

खास बात यह है कि आज तक किसी भी कश्मीरी (अपवादों को छोड़कर) या डोगरी भाषा बोल एक्ट्रेस ने बॉलीवुड में कदम नहीं रखा है। कश्मीरी लोग पश्तून

नई जानकारी मिल रही थी। वह मधुमेह से -रहे थे। ड्राइवर समीर भाई से हमें नई पीड़ित थ, क्योंकि वह दिन भर मेंवल कश्मीरी मूली और खीरा ही खाता था।

गुलमर्ग, श्रीनगर से 80 किलोमीटर दूरी पर ट्रैवलर गाड़ी से हम पहुंचे। गंडोला रोपवे और साइड सीन देखने को मिले। यहां एक अनोखी चीज खोपरा खाने की मिठाई बेहतरीन लगी। (कोकोनट पेढा) यात्रा के पहले दिन की योजनाबद्ध यात्रा 'गुलमर्ग' की यात्रा गुलमर्ग समुद्र तल से 14 हजार फीट की ऊंचाई पर पूरी तरह से बर्फ से ढकी हुई जगह है। किंवदंती है कि गुलमर्ग की बर्फ से ढकी चोटी का नाम "गोंडोला या गंडोला" यह नाम एक ब्रिटिश अधिकारी की प्यारी बेटी के नाम पर पड़ा। जहाँ हमने अपनी गाड़ी पार्क की; वहां एक शिव मंदिर था। चारों ओर अध भरे बर्फ से भरी पर्वत शृंखलाएँ थीं। मंदिर के चारों ओर हरियाली थी। हमें बताया गया कि इसी जगह पर 'जय जय शिवशंकर, काटा लागे या कंकर' गाना सुपरस्टार राजेश खन्ना और मुमताज पर फिल्माया गया था।

'गंडोला' के शीर्ष पर जाने के लिए 2500 रुपये का टिकट देकर रोप वे का सहारा लेना पड़ता है। उसके लिए बहुत बड़ी कतारें थीं फिर हम रोपवे पर चढ़े और फेज वन पर पहुँचे। लेकिन बर्फ नहीं थी। फेज दो पर वापस जाने के लिए रोप वे का इस्तेमाल किया और गंडोला पहुँचे, रास्ते में कुछ बर्फ के साहसिक खेल भी देखे।" गंडोला में जहाँ तक नज़र जा रही थी, बर्फ ही बर्फ थी। मुझे लगा था कि पाकिस्तान की सीमा नजदीक होगी, लेकिन ऐसा नहीं था। बचपन में जिस स्नोबॉल को इतनी जोर से खींचना पड़ता था; लेकिन अब हमारे पैर बर्फ और कीचड़ में ही थे। हम अधाशा की तरह बर्फ में खेले। हाथ पैर बहुत ठंड के मारे हिल रहे थे। मैंने जर्किन्स या गम बूट नहीं पहने थे। ऐसे बदलते और अप्रत्याशित वातावरण में इंद्रधनुष दिखाई दिया मैंने अपने जीवन में पहली बार बर्फीले क्षेत्र (क्कर जैसादूध में घी श) से इंद्रधनुष देखा। इंद्रधनुष के इस नज़ारे को तो बसमैं देखता ही रह गया । हम सचमुच भाग्यशाली थे। बर्फ पर बिताया हर पल एक सपने जैसा लगता था। एक स्थानीय हिंदी टीवी चैनल के प्रतिनिधियों ने हमारे समूह के साथ एक साक्षात्कार आयोजित किया और उस साक्षात्कार को 05 जून यानी 'पर्यावरण दिवस' पर

प्रसारित भी किया। कश्मीर ‘कश्मीरायण’ के पहले ही दिन हमें यह महसूस हुआ कि हमारी यात्रा का पूरा पैसा वसूल हुआ।

सोनमर्ग, श्रीनगर से 95 किलोमीटर दूरी पर ट्रैवलर गाड़ी से हम पहुंचे। सिंधु, सतलज और लीडर इन तीन नदियों के साथ साइड सीन देखने को मिले। यहां भी एक्सप्रेसवे बनाने की प्रक्रिया तेज गति से शुरू है। 09 किलोमीटर लंबा बर्फीली पहाड़ों के भीतर से, अत्यंत खतरेला, पहाड़ की ऊंचाई पर सुरंग/ "टनेल" से बनाया जा रहा है। इससे आने वाले कुछ दिनों के बाद यात्रियों का करीब 01 घंटे तक का समय बचने वाला है। “सोनमर्ग” की प्राकृतिक सुंदरता देखने के लिए निकल पड़े। रास्ते में हम एक जगह फल खरीदने के लिए रुके। वहां हमने सेब, केले, लीची, स्ट्रॉबेरी, चेरी बेरी, बड़े अंगूर, कश्मीरी आम और अन्य अनाम फल खरीदे। यहां देखा गया कि, फल खरीदते समय हमारी तरह मोलभाव नहीं किया जाता। इसी दरमियान हमने देखा कि जगहजगह पर लोकस-भा चुनाव का माहौल गरमाया है।

प्रचार का आखिरी दिन होने के कारण प्रचार अपने चरम पर पहुंच रहा था है। तभी उमर अब्दुल्ला की विशाल रैली हमारे सामने से गुजरी। रास्ते में चलते समय हमने सिन्धु, सतलुज, लीडर आदि नदियाँ ग्रीष्म ऋतु में लबालब बहती देखीं। मुझे इन नदियों से बहुत ईर्ष्या हुई थी। नदी का पानी गर्जना कर रहा था और तेजी से आगे बढ़ रहा था, पानी सफेद चमक की तरह चमक रहा था। जानवरों को नहलाना, कपड़े धोना, शरीर को साबुन से नहलाना आदि कोई नहीं था है। सड़क के किनारे न हीं पान तंबाकूमावा की टपरिया थीं और न चाय की छो-टीछ-ोटी दुकान थी। अधिकतर होटल ही थे। शहर में कहीं भी देशी शराब की दुकान या राशन की दुकान नहीं दिखी।

कश्मीर में भी जगहर्य अग्रसर होता नजर जगह विशाल सड़क निर्माण का- आ रहा था। केंद्रीय मंत्री जो कि महाराष्ट्र के हैं मान्यवर नितिन गडकरी साहब की याद यहां भी आ गई। कश्मीर में भी हर जगह सड़क पुल का निर्माण (रोडकारी) बड़ी शालीनता के साथ मजबूती से चल रहे थे। रास्ते में हमें एक सुरंग भी मिली। यात्रा के दौरान सड़क के एक तरफ विकराल, ऊबड़खाबड़ पहाड़ थे तो दूसरी तरफ - घाटी में गहरी बहती नदियाँ मनमोहक लग रही थीं, माहौल पलपल बदल रहा था। - तेज और बर्फीली पहाड़ से निकलती ठंडी चुभने वाली हवा,पल में ही सूर्यदेव का दर्शन,धूल मिट्टीभरी तूफान, तो पल में ही बारिश का आना यात्रियों के लिए एक अद्भुत और अनाकलनीय, सुंदर और मनमोहक नजारा दिखता था। आधे घंटे के बाद फिर पूर्ववत सब कुछ एकदम फ्रेश हुआ। हमारे गाड़ी के ड्राइवर ने इस कश्मीरी प्राकृतिक सौंदर्य और वातावरण को लेकर एक मजेदार टिप्पणी की उन्होंने कहा, “बॉलीवुड का फैशन और कश्मीर का माहौल पर कोई भरोसा नहीं कभी भी बदल सकते हैं।” सोनमर्ग घाटी की प्राकृतिक सुंदरता बेहद खूबसूरत है। बर्फीले हरे भरे पहाड़, बीच में विशाल मैदान और चारों ओर बर्फ से ढके पहाड़ पहाड़ ही पहाड़ थे। हमें बताया गया कि इसी स्थान पर हिंदी फिल्म "बजरंगी भाईजान" शूटिंग हुई थी। पहाड़ के भीतर तक पहुंचाने के लिए हमें वहां घोड़े की सवारी करनी पड़ती है, लेकिन घोड़े की लिद की दुर्गंध असहनीय होती थी।

इस स्थान पर एक छोटी टेकड़ी पर एक मूर्ति ने मेरा ध्यान खींचा जो एक सैनिक की मूर्ति थी। जो अपने घायल साथी सैनिक को ले जा रही थी, उसे देखकर मैं भावुक हो गया। हमें बताया गया कि कुछ पाकिस्तानी गद्दारों ने इस मूर्ति को नष्ट करने की कोशिश की थी। इस कश्मीर की सुंदरता को देखते हुए हम अपने सैनिकों के बलिदान को नहीं भूले, सड़क मरम्मत के कारण से हम सोनमर्ग में "जीरो पॉइंट" तक नहीं जा सके। वहां जाने के लिए कोई अच्छी सड़क नहीं थी। बाद में पता चला कि वहां अखरोट के बगीचे हैं। इस स्थान पर पर हमने बहुत सारे अखरोट खरीदे। अखरोट को देखने के बाद मुझे लगा कि इसकी मानव मस्तिष्कभेजा - जैसी प्रतिकृति है। सोनमर्ग से श्रीनगर लौटते समय रास्ते में हमने हस्तशिल्प का सामान खरीदा। कश्मीर में जैकेट, टोपी, मफलर, खिलौने और शॉल बहुत सस्ते हैं।

यात्रा का हर दिन हंसी मजाक से चल रही थी। चौथा दिन पहलगाम जाना तय हुआ था, श्रीनगर से 90 किलोमीटर दूरी पर ट्रैवलर गाड़ी से हम पहुंचे। जगह-जगह कश्मीरी सफरचंद के बगीचे, अखरोट के पेड़ घाटी, कश्मीरी

बकरियां,घोड़े,नदी झरने और यहां का प्राकृतिक सुंदर नजारा देखतेदेखते हम - पहलगाम पहुंचे। यहां हमारा दो दिनों का प्रोग्राम रहा। सिंधु, सतलज के साथ मुख्य रूप में लीद्दरलीडर इन तीन नदियों/ के साथ साइड सीन जगहजगह देखने का - यहां भी एक्सप्रेस वे बना है पिछली बार जब हम अनुभव किया।08 साल पहले गए थे तब करीब 09 घंटे लगे थे। अब 04 घंटे का सफर करते ही पहलगाम पहुंच गए। पहलगाम न केवल भारत का स्वर्ग है, बल्कि पृथ्वी का भी स्वर्ग है। श्रीनगर से पहलगाम तक 90 किमी लंबी सड़क है। श्रीनगर के रास्ते में, हमने कश्मीर के शासकों और राजवंशीय उत्तराधिकारियों, श्री उमर अब्दुल्ला, मुफ्ती मोहम्मद सईद के अत्यधिक संरक्षित बंगले देखे। हम राजभवन के पास पहुंचे लेकिन भारी यातायात के कारण हम महत्वपूर्ण स्थान "लाल चौक" नहीं जा सके।

रास्ते में भारतीय सेना के बड़ेप देखने मिले। यहां हमारे भारतीय बड़े कैं- जगह देखने -जवानों द्वारा खड़े होकर भारत माता की रक्षा करने का दृश्य भी जगह को मिला। यहां हम एंबुलेंस के सायरन की आवाज लगातार सुनते हैं, जैसा कि कश्मीरश्रीनगर में भी है-, लेकिन ये सायरन सैनिकों की कारों के होते हैं। हमें सड़क के दोनों ओर सेब के बगीचे देखने को मिले। सेब के बगीचे में अभी भी छोटेछोटे - हरे सेब लगे हुए थे। हम पंपोर गाँव के पास रुके जहाँ एक विशाल पठार पर केसर का खेत था और दोनों तरफ केसर और सूखे फलों के शोरूम थे। सड़क के किनारे . वहां हमें कश्मीरी चाय यानी "कावा" आयुर्वेदिक चाय पीने मिली। हमें तमाम महंगे सूखे मेवों के नमूने चखने को मिले और साथ ही असली केसर का स्वाद चखने का तरीका भी सीखने को मिला। हममें से कुछ लोग ड्राईफुट खरीदने के बजाय वहां सैंपल लेने गए। वहां हमने केसर खरीदे। मैं भी केसर के खेतों में घूमा लेकिन मौसम की कमी के कारण मुझे केसर का एक भी फूल देखने को नहीं मिला। इसके बाद आगे जाने पर हमें सड़क के दोनों तरफ लकड़ी से बल्ले बनाने वाली फैक्ट्रियां दिखीं और वह दुकान भी देखने को मिली जहां से सचिन तेंदुलकर ने बल्ला खरीदा था। बारामूला, उरी पठानकोट के गांव सड़क के किनारे थे लेकिन आप इन गांवों को सिर्फ वहां हुए बम धमाकों की वजह से जानते हैं। चूँकि कश्मीरी लोगों का स्वास्थ्य अच्छा है, इसलिए वहाँ अधिक अस्पताल नहीं हैं, रास्ते में हमें एक सुंदर गुरुद्वारा

दिखाई दिया, जहाँ से पहाड़ों का पानी सुंदर लग रहा था। झरने का पानी बहुत साफ़, ठंडा और चिकना था। इसलिए बिसलेरी पानी पीने की कोई जरूरत नहीं थी।

हमने सेब के बगीचे में बने होटल में दोपहर का भोजन किया। आसपास की प्रकृति को देखना मतलब एक फिल्म देखने जैसा था। पहाड़ियों पर हरियाली और ऊंचेटी से होकर बहती थी। ऊंचे पेड़ आसमान को छू रहे थे। लीडर नदी घा-पहलगाम जाने के बाद हमें एक अलग ही दुनिया में प्रवेश करने का आनंद मिला। पहलगाम पहुँचकर हमने नदी के किनारे बड़े अक्षरों में "आई लव पहलगाम" लिखा एक बोर्ड देखा, जहाँ सभी लोग तस्वीरें लेते नज़र आ रहे थे। मुझे ऐसा लगा जैसे पर्यटकों को 'फोटोफोबिया' हो गया हो। ऊपर उर्दू में लिखा था (बाएं से दाएं), "अगर धरती पर स्वर्ग है तो उसकी पहचान भी तुरंत हो गई। बर्फ से ढकी चोटियां भी यहीं थीं।" कई बार सूरज के तेज किरन के कारण पिघलती हुई बर्फ को भी देखने का अनुभव है। हरीभरी हरियाली-, सुंदर फूल, ऊँचे वृक्ष आदि स्वर्गीय आनंद दे रहे थे। हमारा प्रवास पहलगाम के एक ऊंचे स्थान पर "शबाना पैलेस लॉज" में था। यह महल प्रकृति की गोद और पहाड़ पर स्थित था। रास्ते में हमने भोलेनाथ शिवजी का प्राचीन मंदिर देखा, जहाँ हमने सिर झुकाया और लॉज में आराम किया। पहलगाम जैसी शांतिपूर्ण जगह मुझे पहले कभी महसूस नहीं हुई। यदि आप चौथे दिन उठते हैं और खिड़की से बाहर देखते हैं; ऊंचेऊंचे बर्फीले पहाड़ों-, सिस्तापर्णी, देवधर, देवदार के पेड़ों के बीच से झांकते सूर्योदय को देखा। वहां सूर्योदय आमतौर पर शाम 5:30 बजे होता है। सुबह के सन्नाटे में अनायास ही मस्जिदों से निकलने वाली अजान से अरबी भाषा के स्वर हमारे कानों पर पड़े तब माहौल बड़ा मनमोहन था।

हम पहलगाम पहुंचते ही प्राइवेट कार कार गाड़ियों से निकलेलोकल - साइट सीन देखन‍े के लिए। करीब 25 -30 किलोमीटर के भीतर प्रति व्यक्ति 300 से 500 खर्च आता है। 1. आरुव्हॅली 2. चंदनवाड़ी 3. बेताब व्हॅली इन तीन स्थानों को देखा।ये सभी स्थान कश्मीर के सबसे दर्शनीय स्थानों में से (अवश्य देखने योग्य) हैं। अरु घाटी का जो दृश्य हमने360 डिग्री के कोण से देखा वह प्राकृतिक सौंदर्य का अद्भुत चमत्कार था जिसे अनुभव करना बिल्कुल असंभव है मेरे जैसे नवयुवक को वर्णन करने के लिए। इस स्थान पर "कश्मीर की कली", बजरंगी भाईजान, कर्मा

आदि फिल्मों की शूटिंग की गई थी। बेताब घाटी भी अरु घाटी का एक दर्शनीय स्थान है, जहां फिल्म बेताब के "जब हम जहां होंगे जाने कहां होंगे" की शूटिंग की गई थी सनी देवल और अमृता सिंह के साथ तैयार गाना आंखों के सामने आ गया। विशेष रूप से उस फिल्म में घर की झोपड़ी को अभी भी बरकरार देखकर मुझे अपने व्यस्त कॉलेज के दिनों की याद आ गई, विशेष रूप से, मैंने घने पेड़ों से घिरे स्थानों को देखा, जिनके नाम कश्मीर में फिल्मों के नाम पर रखे गए थे, मुझे अपने पसंदीदा गायक किशोर कुमार की आवाज याद आ गई। "तेरे बिना जिंदगी से कोई शुक्कू नहीं" फिल्म "आंधी" का यह अविस्मरणीय गाना सुचित्रा सेन और स्वर्गीय संजीव कुमार पर फिल्माया गया था। बाद में चंदनवाड़ी में हमें फिर से बर्फ को छूने का मौका मिला। रास्ते में बेताब वैली के पास से गुजरते हुए हमने एक जगह देखी जगह जहां भारतीय सेना की गाड़ी दुर्घटनाग्रस्त होकर घाटी में गिरी थी और कई जवानों को शहीद होना पड़ा था। रास्ते में पहाड़ी पर शंकराचार्य का प्रसिद्ध मंदिर था, लेकिन हमने भारी थकान के कारण नीचे से ही दर्शन किये। सफर के दौरान मेरी ड्राइवर समीर भाई से बात होती रहती थी। मैं उनके साथ कई विषयों पर चर्चा करता था, मूलतः मेरी रुचि कश्मीर के अध्ययन में थी और मैंने समीर भाई से कश्मीर के इतिहास, भूगोल, संस्कृति, रीतिकी। रिवाजों और परंपराओं के बारे में गहन चर्चा-बातों में -विशेषकर आतंकवाद के मुद्दे पर मेरी उनसे खुले मन से चर्चा हुई। बातों सीधे जवाब-उन्होंने मेरे कई प्रश्नों के सीधे'नहीं' दिया। मैंने यात्रा के दरमियान अनुभव किया कि कश्मीरी लोग बहुत विनम्र और ईमानदार होते हैंवह पर्यटकों कादिल नहीं दुखातेअधिक से अधिकबेहतर सेवा देने मेंतत्पर रहते हैं पोशाक।

पहलगाम से मिनी स्वीटजरलैंड यहां से करीब है, घुड़सवारी का अनुभव यहां भी ले सकते हैं। 1000 से लेकर 2400 तक एक व्यक्ति एक घोड़ा लेकर आप वहां पहुंच सकते हैं।यहां से अमरनाथ यात्रा के लिए भी आप निकल सकते हैं। करीब 25 किलोमीटर पैदल और घुड़सवारी के आधार पर आप जा सकते हैं। फिल्म 'बजरंगी भाईजान' का अधिकतर चित्रिकरण इसी क्षेत्र में हुआ है। मिलिट्री का सख्त और कड़ा पहरा यहां लगा रहता है लेकिन हम लोगों के लिए ही वे खड़े हैं, बाकी कोई दिक्कत या परेशानी नहीं होती। पहला दिन हमारा यहां समाप्त

हुआ। कश्मीर में कहीं भी आप जाए आपको खाने में मिक्स वेज, पनीर सब्जी, और दाल चावल ही मिलेंगे। दो रोटी बहुत ही छोटा आकार वाली। नॉनवेज में आपको अधिकतर चिकन ही मिलेगा। चाय के साथ ब्रेड और नाश्ते में उबला हुआ अंडा या आमलेट ब्रेड या पोहा का ॅमन रहता है। चूँकि हमें होटल में कश्मीरी व्यंजनों के नाम नहीं पता थे इसलिए हमने इशारा करके खाना खरीदा और उसका स्वाद चखा। जब हम वहां थे तो शाम के 7:30 बज रहे थे, लेकिन 8:00 बजे सब कुछ साफ और स्पष्ट दिखाई दे रहा था सूरज बहुत देर बाद डूबता है यह भी अनुभव किया।

पहलगाम के लीडर नदी किनारे रंगबिरंगे फूलों से लड़े बगीचे में हमने - कश्मीरी पोशाक पहनकर तस्वीरें खिंचवाई। कुछ पलों के लिए हम कश्मीरी और फिल्मी हीरो हीरोइन जैसे ही लग रहे थे जगहजगह पर लोग तस्वीर खींचने में व्यस्त - खिंचवा कर देना और फिल्मी दिखते थे कश्मीरी पोशाक किराए पर देना और फोटो गीतों के आधार पर रिल बनाकर देना भी यहां के लोगों का एक व्यवसाय है।

पहलगाम में ही हमने चाय नाश्ते के बाद हम कुछ ही दूरी पर स्थित मार्केट चले गए। वहां स्वेटर, जैकेट, मफलर, लेडिज के लिए पांचों, ट्रैवलर बैग खरीदे। यहां आपको मोलभाव करके ही सारा सामान खरीदना पड़ेगा। ढाई हजार, 2000 का स्वेटर हमने 700 -1000 में, 1500-1800 का स्वेटर 300-500 में भी मिलता है। कुछ लोग यहां से ही मिनी स्विट्ज़रलैंड देखने के लिए चले गए वहां घुड़सवारी से ही जाना पड़ता है। जगह जगह आपको अखरोट-1 किलो 400, 500 के भाव में बेचनेवाले युवा लड़के मिलते हैं लेकिन यहां भी आपको परखकर ही खरीदना पड़ेगा। पुराना माल भी यहां मिक्स करके बेचा जाता है। दोपहर खाना खाने के बाद खरीद किया सामान होटल पर छोड़ दिया। पहलगाम में एक शिवजी का भी मंदिर है जो काफी पुराना माना जाता है। जहां हम शबाना पैलेस में रुके थे, बराबर उसके करीब ही वह मंदिर था। वहां से एक झरना भी बहता है। देर रात खाना खाया और सुबह 9:00 बजे फिर श्रीनगर की ओर प्रस्थान किया।

हमारे यात्रा प्रबंधक ने पहलगाम में ठहरने की अवधि बढ़ा दी। महिलाओं ने इसका भरपूर फायदा उठाया, खरीदारी के लिए बाजार जाते समय महिलाएं खाली बैग और भरे पर्स लेकर धावा बोल देती थीं। भारी खरीदारी की गई। शॉपिंग करते

समय मुझे पता ही नहीं चला कि मेरे पैर इतने दर्द कर रहे हैं इस सबका नतीजा यह हुआ कि रास्ते में हमारे सामान में एक बैग और जुड़ गया। कुछ लोगों ने ठंड से राहत पाने के लिए आवश्यक उत्तेजक और गर्म पेय खरीदे। होटल में रात्रिभोज के बाद, दोपहर में हमने घोड़े पर सवार होकर "मिनी स्विट्जरलैंड" का दौरा किया। यह बहुत ही अविस्मरणीय अनुभव था। मेरे घोड़े का नाम 'बादल' था और मैंने उस घोड़े को बिना किसी की मदद के चलाया। मुझे ऐसा महसूस हुआ जैसे मैं किसी पुरानी फिल्म का हीरो हूं। मिनी स्विट्ज़रलैंड अपने नाम के अनुरूप ही पहाड़ की चोटी पर स्थित एक खूबसूरत जगह है।

पहलगाम अमरनाथ यात्रा का प्रारंभिक बिंदु या पगतल है। पहलगाम से अमरनाथ तक पहाड़ी घाटियों से होकर 32 किमी लंबी और मुश्किलों से भरी यात्रा है। घोड़े पर जाने में दो दिन और पैदल चलने में तीन दिन लगते हैं। वास्तव में, पहलगाम को स्वर्ग का प्रवेश द्वार भी कहा जाता है। शायद महाभारत के पांडवों ने अपने जीवन की अंतिम यात्रा करने के लिए स्वर्ग की यात्रा इसी स्थान (हिमालय) । इस तरह हम दो दिन तक पहलगाम की जन्नत में रहे।से शुरू की थी

यहां हम पहलगाम से वापस फिर श्रीनगर, आए। रास्ते में जगहजग-ह अकरोड के साथ ड्राय फ्रुट के दुकानों को भी देखा। कश्मीर की शा ॅल भी प्रसिद्ध है। कावा- मसालेदार चाय, सुगंधित चाय का अनुभव लेते हम श्रीनगर पहुंचे। यहां ट्युलिप गार्डन बहुत प्रसिद्ध है लेकिन अप्रैल महीने में ही वह खुली रहती है। यहां राज्यपाल का निवास स्थान है इसी कारण वहां जाने के लिए मना है। कश्मीर में अनेक प्रसिद्ध बागीचे अर्थात गार्डन है। इनमें से एक है मुगलकालीन "चेसमाशाही)शाही झरना(", या शाहजहां गार्डन भी कहा जाता है। कश्मीर के गवर्नर का निवास स्थान की ओर यहां से रास्ता जाता है। कारण आपको लोकल रिक्शा या कार गाड़ी से सवारी करनी पड़ती है। 50 तक हर व्यक्ति के लिए चार्ज लगाते हैं। बहुत ही सुंदर गार्डन है। रंगदिष्ट है।उसके बिरंगे फूल और प्राकृतिक झरना और झरने का जल स्वा-बाद श्रीनगर में ही कुछ ही दूरी पर स्थित बोटैनिकल गार्डन पहुंचे। सचमुच दुनिया के अलग-अलगपेड़ पौधे और प्राकृतिक नजारा देखने लायक ही था।

करीब करीब 34 किलोमीटर दूरी तक पहले दल लेकप्रसिद्ध दल सरोवर / प्रसिद्ध के किनारे किनारे से चक्कर लगाते दुनिया का'हजरतबल दरगाह', भी हमने देखा। यहां हिंदू लोग भी शांति से प्रार्थना कर सकते हैं। यहां मोहम्मद पैगंबर साहब का एक दाढ़ी का बाल रखा हुआ है, जिस से लाखों लोगों की आस्थाएँ जुड़ी हुई हैं। कश्मीरी भाषा में 'बल' का अर्थ 'जगह' होता है, और हज़रतबल का अर्थ है 'हज़रत की जगह (मुहम्मद)'। हज़रतबल दल झीलदल सरोवर की बाई ओर स्थित है और / इसे कश्मीर का सबसे पवित्र मुस्लिम तीर्थ माना जाता है।

सब कुछ देखते देखते शाम के-5:00 बज गए थे और दल सरोवर के किनारे हम पहुंच गए। यहां हम शिकारा पहुंचे। एक शिकारे में दो या तीन अधिकतर चार आलीशान कमरे बने रहते हैं। दल सरोवर के किनारे हजारों शिकारों में लोग रहते हैं। पानी के भीतर रहना एक अलग अनुभव महसूस करते हैं। आपको सारी सुविधाएं यहां मिल जाती हैं। यहां तक की कश्मीर की सारी चीजें बेचने के लिए लोग अपनेपास आते हैं। ठंडी हवा के अपने शिकारों को लेकर आपके शिकारे के-साथ आकाश में चांद चम रहा था और रात का मनमोहक दृश्य मन को अधिक सुकून देता था।'दल' झील में शिकारा राइड करना और पानी में हाउस बोट पर रात बिताना। एक ऊँचे पहाड़ पर एक "शहीद स्थल" था। शाम को हमने 'हाउसबोट', की सवारी की और पानी में हाउस बोट पर रहने चले गये।" हाउस बोट" का अर्थ है पानी में तैरता हुआ घर। यह घर लकड़ी की नक्काशी का एक अनूठा उदाहरण था। रसोईघर, स्नानघर, शयन कक्ष, भोजन कक्ष आपके घर की तरह ही विशाल हैं। आपकी सेवा में एक नौकर भी है। डल झील में हाउसबोटों का एक गाँव स्थित है। किराने का सामान, स्टेशनरी, सब्जियाँ शिका से खरीदी जाती हैं। वहाँ रहने के बाद मुझे लगा कि हर व्यक्ति को अपने जीवन में कम से कम एक बार इस हाउस बोट का अनुभव करना चाहिए। डल झील में लिली और कमल के फूल झील की सुंदरता में चार चांद लगा रहे थे। मैंने इस हाउसबोट पर मछली पकड़ने की कोशिश की, लेकिन सौभाग्य से और मेरे लिए दुर्भाग्य से, एक भी मछली नहीं पकड़ी गई, रात में हाउसबोट के मालिक के साथ बातचीत करते समय 'डल झील' में फव्वारे देखने लायक थे हाउसबोट की कीमत तीन करोड़ रुपये तक है। कश्मीर में लोग चीनी

वाली चाय नहीं पीते। सुबहसुबह अरबी अजान से अपने आप जाग उठते हैं। जब - मैं बाहर आया तो मैंने ‘डल झील’ का मनोरम दृश्य देखा, तभी मैंने "हरे राम हरे कृष्णा" की धुन सुनी और मुझे आश्चर्य हुआ और एहसास हुआ कि हम भारत में हैं।

एक रात 'दल लेक' शिकारा में बीतने के बाद चाय नाश्ता के पश्चात हम अपना सारा लगेज इकट्ठा कर और वापस आने की तैयारी में जुट गए। आखरी बार शिकारा में बैठे करीब 01 घंटे तक हमनें शिकारा राइड किया। बहुत ही सुंदर नजारा था। चारों ओर पहाड़, पहाड़ों पर दिखती बरफ, करीब 34 किलोमीटर लंबा दूर पर फैला, दल सरोवर, सरोवर के किनारे किनारे बसे हाउसबोट और बीचबीच से सफर - करने वाले यात्रियों का दृश्य मोहक था। हमने भी अनुभव किया, एक बेहतरीन अनुभव रहा। आपके शिकारे के पास अन्य कुछ शिकारों को लेकर कुछ कश्मीरी लोग अपनी चीजों को बेचने के लिए, छोटेछोटे व्यापारी आपके शिकारे के पास - टअलग फ्रू-आते हैं। अलग,नक्शीदार लकड़ी की चीजें, शो पीस, अखरोट, मिठाई, महिलाओं की बनावटी गहने, शाल, स्वेटर, जैकेट बहुत कुछ।

अंत में, हमने श्रीनगर में "हज़रत बल" के पवित्र स्थान का दौरा किया, यह एक भव्य मस्जिद थी, जो मुगल वास्तुकला का एक बेहतरीन उदाहरण थी। अत्यंत शांत वातावरण और पास की झील की ठंडी हवा ने मन प्रसन्न कर दिया। वहां मुस्लिम धर्म के संस्थापक पैगंबर मुहम्मद की दाढ़ी का एक बाल रखा हुआ है। उस स्थान पर बैठकर कुछ देर सोचा और सोचा कि यह तीर्थ तैंतीस करोड़ देवताओं में से एक होगा, तभी मेरी नजर एक शोकेस में रखी एक बड़ी किताब पर गयी। वह किताब अरबी कुरान की नकल थी। यह औरंगज़ेब की लिखावट में कुरान था। जब मैंने इसे बहुत सुंदर लिखावट देखी तो मुझे विश्वास नहीं हुआमैंने सोचा कि इंसान ! च ाहे कितना भी बुरा क्यों न हो, हर इंसान में कुछ न कुछ अच्छाई जरूर होती है। अंत में, हमने श्रीनगर के सभी निवासियों से विदाई ली। हमने उन सभी सेवकों को पुरस्कृत किया जिन्होंने हमारी बहादुरी से सेवा की और हम हवाई अड्डे के लिए रवाना हो गए। यह दिल्ली से जम्मू होते हुए था। दिल्ली पहुंचने के बाद अंतरराष्ट्रीय हवाईअड्डे पर आंखें नम थीं। दिल्ली हवाई अड्डे पर चाय पीने का मन था लेकिन एक कप चाय की कीमत 360 रुपये सुनकर चाय की चाहत खत्म हो गई। हम रात

को दिल्ली से मुंबई सुरक्षित पहुंच गए लेकिन हमारे कुछ साथियों के बैग वहीं छूट गए और अगले दिन वो सब आए कूरियर द्वारा। बैग घर पर सुरक्षित पहुंचाए गए। हम मुंबई से वैभव ट्रैवल के स्लीपर कोच से पहुंचे। मुझे रात को नींद नहीं आ रही थी, कश्मीर की प्रकृति मेरी आँखों से ओझल नहीं हो रही थी। क्या पहाड़ हैक्या !!! ...सब कुछ कैसे है झक्कास !!!क्या झाड़ी है !!!वह बर्फ क्या है !!!घाटी है?

सचमुच यादगार रही दोबारा कश्मीर यात्रा। एक नए अंदाज और एक नए अनुभव के साथ। सातवें और आखिरी दिन हमने पूरा श्रीनगर देखने का फैसला किया। इसमें कश्मीर के सभी मुगल गार्डन देखे गए, जिनमें मुगल गार्डन, चश्मे शाही गार्डन, इंदिरा गांधी बॉटनिकल गार्डन, ट्यूलिप गार्डन आदि शामिल हैं। प्रत्येक उद्यान में प्रवेश शुल्क है। कश्मीरी उद्यान ईस्टमैन कलर के फूलों से भरे हुए थे और कोई भी गुलाब के पेड़ों को बैठकर देखना चाहता था क्योंकि एक गुलाब के पेड़ में कम से कम 70/80 पूर्ण खिले तांबे के फूल और इतनी ही संख्या में कलियाँ होती थीं। इसलिए मुझे अपने बगीचे में गुलाबों को लेकर बहुत दुख हो रहा था। ऐसा लग रहा था जैसे प्रकृति ने अपने मुक्त हाथों से रंग बिखेरे हों, सचमुच कश्मीरी बगीचे धरती पर स्वर्ग हैं। उस सफ़ेद मिट्टी का गुण क्या हैमैंन !!!े ऐसा सोचा था; बॉटनिकल गार्डन में जाने के बाद, मैंने फिल्म "सिलसिला" के रोमांटिक गाने "देखा एक ख्वाब तो सिलसिले हुए" के सामने डांस करना शुरू कर दिया, जिसमें सुपरस्टार अमिताभ बच्चन और रेखा थे, लेकिन दुर्भाग्य से हम ट्यूलिप का आनंद नहीं ले पाए ट्यूलिप का कोई मौसम नहीं। संक्षेप में, रेखा के साथ अमिताभ बच्चन का सपना और ट्यूलिप गार्डन का हमारा सपना टूट गया। लेकिन हमारे दिल वहां ! कई अनजाने फूलों से भर गए। शहर में मुगल उद्यानों की सुंदरता देखकर सचमुच दरअसल !थक गया हूँ, अच्छे बगीचे देखने की आदत डालनी होगी।

आखिरकार हमने श्रीनगर को बाय बाय कर हवाई अड्डे पर पहुंचे।-08 साल पहले हम श्रीनगर गए थे और इस साल भी गए तो एक फर्क निश्चित रूप से दिखाई दिया कि अब कश्मीर पूरी तरह से खुला हुआ है काफी भीड़ भरे रास्ते, यातायात के साधनों की भरमार हमने देखी। हमारा कुल 25 लोगों का ग्रुप था। चार विमानों में से अलगअलग समय पर हमें मुंबई पहुंचना था। श्रीनगर में भी देखा -

पानी की बोतल की हवाई अड्डे पर 100, सैंडविच 350 रुपए, चाय सौ रुपए पर मिलती है। अपने परिवार जनों के लिए स्वेटर, पांचों, जैकेट आदि खरीदने के कारण हर एक के पास चारचार बॅग हुए थे। ध्यान रहें हवाई जहाज में सिर्फ एक व्यक्ति के - लिए15 किलो का लगेज और हैंडबैग में अधिकतर 05-07 किलो तक ही समान आप ले सकते हैं। उसके आगे आपको एक्स्ट्रा एक किलो से लेकर 5 किलो तक के लगेज के लिए 3000 रुपए देने पड़ते हैं। हवाई जहाज का अनुभव बेहतर रहा। श्रीनगर से मुंबई सीधा प्रवास 3 घंटों से अधिक रहता है। चेकिंग के लिए दो, ढाई तीन घंटे चले जाते हैं। लगेज में आप अलगअलग प्रकार के सामान रख सकते हैं - लेकिन ज्वलनशील,हथियार, ब्लेड, चाकू, छुरी आदि नहीं रख सकते। हैंडबैग में हमने कश्मीरी तीखा मसालालिया था। अंजानवश ध्यान में (कश्मीरी लाल चटनी) नहीं आया। हवाई अड्डे पर पुलिसवालों ने उसे मेटल डिटेक्टर द्वारा चेक करने के बाद निकाल कर फेंक दिया। ध्यान रहे की हैंडबैग में तीखा और नुकीला, हथियार या बॉडी स्प्रे जैसी चीज़ ले जाने के लिए मना है। हवाई यात्रा का अनुभव भी एक अलग रहता है। हवाई जहाज बहुत ऊंचाई पर पहुंचता है तब सिर्फ खिड़की से झांकने के बाद सफेद नीला, बर्फीला समूह आकाश दिखता है है। मुंबई पहुंचने के बाद फिर हवाई अड्डा से निकलकर प्राइवेट टैक्सी से ट्रैवल स्थान पर पहुंचे और स्लीपर कोच लग्जरी गाड़ी से वाठार कोल्हापुर और वारणानगर सुबह 9:00 बजे घर वापस पहुंचे।

इस यात्रा वर्णन को पढ़ने के बाद हर किसी को कश्मीर घूमने की इच्छा जरूर होगी तो दोस्तों आपको बिना झिझक कश्मीर जाना चाहिए। जिंदगी को जन्नत बनाओ जैसे जिंदगी मुंबई। हर किसी को ये महसूस होना चाहिए कि सिर्फ कश्मीर मेरा है। भारत के लिए कश्मीर उतना ही महत्वपूर्ण है जितना मोर के सिर पर कलगी। मैं यात्रा संयोजक, मेरे सभी सहयोगियों और मेरी भाग्यशाली साथी और परिवार जनों को भी धन्यवाद देता हूं क्योंकि केवल उनके कारण ही मैं वास्तव में अपने सपनों के कारण ही कश्मीरायन कर सका।

संक्षेप मे कश्मीर यात्रा एक बार हर व्यक्ति को करनी चाहिए। कश्मीर के लोग प्रचंड मेहनती, पुरुष ही अधिकतर रास्तों पर मेहनत करते हैं। घर परिवार में

महिलाएं। रास्तों पर या उद्योग व्यवसाय करने वाली एक भी महिला बाहर दुकान या रास्तों पर दिखती नहीं। छोटेछोटे बच्चे स्कूल जाते नजर आए उसमें बच्चियां भी - थी। कश्मीर अब खुला होने के कारण काफी भीड़ लोगों की और यातायात साधनों अलग जगह टनल- पर दिखती है। कश्मीर में भी अब अलगकी रास्तों, रास्ते बनाए जा रहें हैं। अधिकतर कश्मीरी लोग गोरे चिट्टे, नुकीली सरल नाक वाले, ऊंचा कद, सपाट पेट वाले। अधिकतर लोग इमानदार। लेकिन हर चीज खरीद के लिए आपको उनके साथ बारगेनिंग करना पड़ेगा। खाने में अधिकतर सादा खाना खाते हैं। व्हेज खानें में दाल रोटी, मिक्स सब्जी, फ्रूट, जूस, पनीर सब्जी आदि। नॉनवेज में अधिकतर 80% लोग चिकन ही खाना पसंद करते हैं। मांग करने के बाद आपको कश्मीरी बकरी का मांस भी मिलता है। अंडामलेट,पोहा, वेज, नॉन वेज एक साथ खाते हैं। खाने में मसाला, तेल, तिखा, नमक ना के बराबर रहता है। इसी कारण महाराष्ट्रीयन लोगों को यह खाना एकदो दिन के बाद खाने के लि-ए कठिन लगता है। कश्मीर में आप कहीं भी पानी पिए आपको साफ सुथरा ही मिलेगा। बिसलेरी, फिल्टर वॉटर की जरूरत ही नहीं पड़ती। इसी कारण हम दोबारा यात्रा सफल कर पाएं। सच है कश्मीर हर इंसान के लिए स्वर्ग तो है हीं जन्नत से भी कम नहीं है।

संपर्क:

हिंदी विभाग अध्यक्ष एवं शोध- निर्देशक,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर, संलग्न,
वारणा विश्वविद्यालय, अंतर्गत
यशवंतराव चव्हाण वारणा महाविद्यालय,
वारणानगर-416113, जिला- कोल्हापुर, (महाराष्ट्र)
ई - मेल -drprakashchikurdekar@gmail.com

कश्मीर में शिवरात्रि (26 फरवरी 2025 के अवसर पर)

डॉ. शिबन कृष्ण रैणा

हमारा देश सांस्कृतिक दृष्टि से एक समृद्ध देश है। इसकी वैविध्यपूर्ण संस्कृति हमारे विभिन्न त्योहारों और पर्वों में झलकती है। यहाँ होली, दीवाली, दशहरा, पोंगल, महाशिवरात्रि, क्रिसमस, ईद इत्यादि अनेक त्योहार मनाए जाते हैं। भारतवासी ये त्योहार पूर्ण उत्साह और धूमधाम से मनाते हैं। हमारे इन सभी त्योहारों और पर्वों में महाशिवरात्रि का त्यौहार विशेष महत्व रखता है। हिन्दू-कैलेंडर के अनुसार यह त्योहार प्रतिवर्ष फाल्गुन मास के कृष्णपक्ष की चतुर्दशी को मनाया जाता है। शिवरात्रि अथवा महाशिवरात्रि भगवान शिव पर आस्था रखने वाले भक्तजनों के लिए एक बहुत बड़ा दिन होता है। महाशिवरात्रि न केवल भारत में, अपितु नेपाल, बांग्लादेश और श्रीलंका में भी मनाई जाती है।

कश्मीर में शिवरात्रि को 'हेरथ' कहते हैं और यह त्योहार वहाँ के सभी त्योहारों में अपना एक विशेष महत्व रखता है।मनाने की विधि भी तनिक भिन्न और अनूठी है।घाटी से पंडितों के निर्वासन के बावजूद कश्मीरी पंडित, जो जहां भी हैं, पूर्ण उत्साह,आस्था और श्रद्धा के साथ इस पर्व को मनाते हैं। पौराणिक मान्यताओं के अनुसार 'हेरथ' शब्द संस्कृत शब्द हर-रात्रि यानी शिवरात्रि से निकला है। एक मान्यता यह भी है कि यह फारसी शब्द हैरत का अपभ्रंश है। कहते हैं, कश्मीर घाटी में पठान शासन-काल के दौरान कश्मीर के तत्कालीन तानाशाह पठान गवर्नर जब्बार खान ने कश्मीरी पंडितों को फरवरी में यह पर्व मनाने से मना कर दिया था। अलबत्ता उसने यह पर्व जून-जुलाई में मनाने की अनुमति दी थी। खान को पता था कि इस पर्व का हिमपात के साथ जुड़ाव है। शिवरात्रि पर जो गीत गाया जाता है, उसमें भी शिव-उमा की शादी के समय सुनहले हिमाच्छादित पर्वतों की खूबसूरती का वर्णन किया जाता है। इसलिए उसने जानबूझकर इसे गर्मी के मौसम में मनाने की अनुमति दी लेकिन गवर्नर समेत सभी लोग उस समय हैरत में पड़ गये जब उस वर्ष कश्मीर में जुलाई में भी भारी बर्फबारी हो गयी। तभी से इस पर्व को कश्मीरी में हैरत यानी 'हेरथ' कहते हैं।(आगे इस कहानी को और विस्तार से समझाया गया है।)

एक और जनश्रुति भी प्रचलित है कि एक दिन दक्ष प्रजापति ने महायज्ञ रचाया। इस यज्ञ में शंकर को नहीं बुलाया गया। शंकर की पत्नी सती से अपने पति का यह अपमान सहा न गया।वह हवन-कुण्ड में कूद गयी। तब शिव ने पुनर्विवाह न करने

का निश्चय किया।उधर, सती ने हिमालय के पर्वतों में एक बार फिर जन्म लिया। वयस्क होने पर उसने शंकर को पाने के लिए घोर तपस्या की। बहुत समय व्यतीत हो जाने के पश्चात शंकर ने हिमालय-पुत्री पार्वती को तपस्या में और निमग्न रखना उचित नहीं नहीं समझा। वे उस जंगल में गये जहां पार्वती तपस्या कर रही थी। ज्योंही उन्होंने जंगल में प्रवेश किया और पार्वती को देखा तो उनके मुंह से सहसा निकल पड़ा : 'हे रते!' पार्वती ने जब यह सुना, तो उसने आनंदित होकर आँखें खोलीं और उसकी पहली नजर पास में रखे हुए हुए कलश पर पड़ी जिनसे कुछ 'बटु'(ब्रह्मचारी) पैदा हुए। ये 'बटु' बाद में वटुकनाथ भैरव कहलाये, जिनकी पूजा शिवरात्रि के दिन होती है। शिवरात्रि के लिए कश्मीरी शब्द 'हेरथ' 'हे रते!' शब्द का ही परिवर्तित रूप प्रतीत होता है।

कश्मीर में प्रायः हर कश्मीरी पंडित के घर में एक पूजागृह हुआ करता था जिसे 'ठोकुर कुठ'(ठाकुर-द्वारा) कहा जाता था। शिवरात्रि की पूजा यहीं पर होती है।शिवरात्रि से कई दिन पहले पूरे घर की साफ-सफाई करके पूजास्थल पर शिव और पार्वती के दो बड़े कलश समेत बटुक भैरवनाथ और पूरे शिव परिवार समेत करीब दस कलशों की स्थापना की जाती है। पहले कुम्हार खास तौर पर इस पूजा के लिए मिट्टी के कलश बनाते थे लेकिन अब पीतल या अन्य धातुओं के कलश रखे जाते हैं। फूल मालाओं से सजे कलश के अंदर पानी में अखरोट रखे जाते हैं।अखरोट को चार वेदों का प्रतीक माना जाता है। कश्मीर में हेरथ अर्थात् शिवरात्रि का पर्व प्रतिवर्ष फाल्गुन कृष्णपक्ष की द्वादशी/त्रयोदशी को मनाया जाता है जबकि शेष भारत में अगले दिन यानी चतुर्दशी को महाशिवरात्रि मनाई जाती है। कश्मीरी विद्वान अगनिशेखर के अनुसार "कश्मीर की शैवी परंपरा में शिवरात्रि के अवसर पर प्रमुख रूप से 'वटुक भैरव' की ही पूजा होती है। वटुक भैरव के साथ-साथ शक्ति और अन्य भैरवों की पूजा त्रयोदशी से विसर्जन तक चार-पाँच दिनों तक नियमित रूप से चलती है। फाल्गुन मास की इन विशेष तिथियों का शिव के 'हर' रूप से जोड़कर नाम लिया जाता है। जैसे 'हुर्य ओकदोह' यानी हर-संबंधी प्रतिपदा, 'हुर्य द्वितीया, हुर्य तृतीया इसी तरह हर तिथि के साथ 'हुर्य' उपसर्ग लगता है। त्रयोदशी के दिन निश्चित मुहूर्त पर विशेष कर प्रदोषकाल अर्थात् सन्ध्या के समय वटुक भैरव की विस्तृत पूजा शुरू की जाती है। पूरे भारत में महाशिवरात्रि पर प्रमुखता से देवी-पुत्र वटुकनाथ भैरव की पूजा शायद कश्मीरी पंडित ही करते होंगे।" अगनिशेखरजी आगे कहते हैं: "कश्मीर के स्थानीय दुर्लभ ग्रंथ 'नीलमतपुराण' में फाल्गुन मास में शिवरात्रि मनाए जाने के नियम, पदार्थ और विधि के बारे में जानकारी मिलती है। शिवरात्रि के अवसर पर

उपवास, पूजा और भक्तिपूर्वक रात्रि-जागरण में गीत, नृत्य व संगीत से इसे भरपूर उत्सव की तरह मनाने के स्पष्ट निर्देश हैं। एक जगह (श्लोक ५३१-५३३) तो यहाँ तक लिखा है कि भले ही सालभर आप अपनी इच्छानुसार महादेव शंकर की पूजा करें या न करें, फाल्गुन की कृष्ण चतुर्दशी को उनकी पूजा अवश्य करें:

"तस्मिन् मासे ध्रुवं पूज्यो देवः चतुर्दशीम्" (श्लोक ५३२)"

चूँकि वटुकनाथ जल कुम्भ से प्रकट हुए थे इसलिए यहां महाशिवरात्रि के दिन जलकुम्भ (मिट्टी का कलशरूपी बर्तन, जिस में अखरोट तथा अन्य सूखे मेवे डाले जाते हैं) की पूजा होती है। साथ ही वटुकनाथ के अन्य सहकारी भैरव (जिन को कश्मीरी में 'सनिवारी' कहते है) की पूजा भी शास्त्रोक्त विधि के अनुसार की जाती हैं। सनिवारि का शाब्दिक अर्थ है सात भैरव बताया जाता है जो जलकुंभ के आमने-सामने मिट्टी के छोटे-छोटे सात बर्तनों के रूप में रखे जाते हैं। पूजा-स्थल पर वटुक भैरव का मांगलिक कलश सजता है। पूजा के दौरान इस वटुकराज भैरव के कलश में जल, अखरोट, मिश्री, दूध और फूल चढाए जाते हैं। फिर "रामगोड" (शिव ही का रूप) छोटे घड़े को स्थापित किया जाता है। इसी क्रम में वैष्णव ऋषियों के रूप में एक पात्र 'डुलिज' तथा दीया और रतनदीप आदि कई पात्र अपने-अपने निश्चित स्थान पर रखे जाते हैं। प्रत्येक पात्र को गेंदे की फूलमालाओं से, सिन्दूर के तिलक से, मौली और बेलपत्र से सश्रद्धा सजाया जाता है। शिवरात्रि अर्थात त्रयोदशी या द्वादशी-त्रियोदशी से अमावस्या तक प्रतिदिन वटुकनाथ भैरव और इनके अन्य सहकारी भैरवों की पूजा पूरी श्रद्धा के साथ की जाती है।सभी पात्रों का जल नियमित रूप से बदला जाता है। अमावस्या के दिन वटुक-भैरव के कलश को वितस्ता के किनारे पर ले जाकर पूजा में चढ़ाई गयी सामग्री का विसर्जन किया जाता है। इस के बाद कलश रूपी बर्तन/गगरी को गृहस्वामी अपने घर लाते हैं। घर के पहले से बंद दरवाजे को खटखटाया जाता है। दरवाजे के भीतर(गृहस्वामिनी) और बाहर वाले(गृहस्वामी) व्यक्ति के बीच यह वार्तालाप होता है :

कौन हैं ?
मैं हूं रामब्रोर।
क्या ले कर आये हो?
अन्न, धन और रोजगार।
साक्षी कौन है?
भैरवरूप वटुकनाथ।

इसके बाद दरवाजे को खोला जाता है। घर के सभी सदस्य प्रसन्न होकर कलश में डाले गये अखरोटों को तोड़ कर प्रसादस्वरूप खाते हैं। बाद में अपने सगे-सम्बन्धियों को नैवेदय-स्वरूप ये अखरोट बांटे जाते हैं। विशेषकर विवाहिता बहनों और बेटियों को अनिवार्य रूप से अखरोट प्रसाद के तौर पर भेजे जाते हैं।

पूर्व में कहा जा चुका है कि महाशिवरात्रि को कश्मीरी में 'हेरथ' कहते हैं। हेरथ के अगले दिन एक अनुष्ठान और होता है जिसे 'सलाम' कहते हैं।'सलाम' का प्रयोजन अथवा इस रीति की क्या पृष्ठभूमि है?यह जानना ज़रूरी है।

1817 के आसपास जबारखान नाम का एक अफगान कश्मीर का हुक्मरान हुआ करता था।एक दिन इस हुक्मरान का मनचला बेटा कश्ती पर सवार होकर जेहलम नदी की सैर कर रहा था।एक घाट पर उसने देखा कि कुछ बालाएँ खड़ी हैं जिन में से एक सुंदर-बाला मिट्टी से अपने हाथ धो रही थी। कश्ती पर सवार अफगान हुकुमरान के साहबजादे ने मन में सोचा कि यदि मैं मिट्टी होता तो मुझे इस बाला के कोमल शरीर को छूने का मौक़ा मिलता। साहबजादा लडकी को घूरते हुए धीरे-धीरे आगे निकल गया।लड़की ने फब्ती कसी "तुझे कोढ हो!" प्रभु की कृपा से ऐसा ही हुआ।खानजादे को कोढ़ की बीमारी लगी।वैद्य-हकीम कोढ़ को ठीक करने में असमर्थ रहे।जबारखान को जब पता चला कि उस का बेटा कन्या के अपवचन/शाप से पीड़ित हुआ है तो वह क्रोध से तिलमिला उठा और उस कन्या को दरबार में पेश किया गया।डर के मारे कन्या ने साहबजादे की करतूत/बुरी नजर के बारे मे जानकारी दी।कन्या को कत्ल करने का हुक्म जारी किया गया।कन्या ने निवेदन किया कि यदि मेरे 'पुलहोर'(घास की जूती) को जला कर उस की राख को कोढ़ पर मला जाय तो निश्चित ही कुष्ठ-रोग ठीक हो जाएगा।कन्या के कहने पर ऐसा ही किया गया तो खान के बेटे का कोढ़ ठीक हो गया।कन्या से जब इस वाक्-सिद्धि के बारे में पूछा गया तो उत्तर मिला कि जब 'हेरथ' के दौरान बर्फ से मन्त्र-पूजा की जाती है तो वाक्-सिद्धि प्राप्त होजाती है।जबारखान ने कश्मीरी पंडितओ की इस मंत्र-शक्ति को समूल नष्ट करने की ठान ली तथा हेरथ/महाशिवरात्रि को आषाढ़-मास में मनाने का फरमान जारी कर दिया क्योंकि इस महीने में न तो हिमपात ही होगा और न कोई मन्त्र-सिद्धि ही होगी।आदेश का कठोरतापूर्वक पालन कराया गया।

कश्मीरी पंडितों को विवश होकर आषाढ़ मास की कृष्ण-त्रयोदशी की रात्रि को हेरथ/महाशिवरात्रि की पूजा करनी पड़ी।सभी शिवभक्तों के मन-प्राण अवसादग्रस्त और व्यथित थे।सजल नेत्रों से शिव/आशुतोष का भजन-पूजन कर रहे थे।उधर, भैरव और

उनके स्वामी देवाधिदेव महादेव अपने भक्तों की सुध लेने के लिए प्रयासरत थे।प्रभु की लीला देखिए! सारी रात हिमपात हुआ।प्रातःकाल लोग बर्फ देखकर आश्चर्यचकित हुए।बर्फ गिर रही थी और थमने का नाम न्हीं ले रही थी। चहुँ ओर तबाही का दृश्य था।फसल से भरपूर खेत-खलिहान बर्फ में समो गये थे जिन्हें देख-देख जनता त्राहि-त्राहि करने लगी।जबारखान को लोग कोसने लगे।मारे खौफ और अकुलाहट के अफगान शासक जबारखां अपने दरबारियों से इस दैवी आपदा/त्रासदी का समाधान ढूंढने के लिए मशविरा करने लगा।तय किया गया कि तुरंत भगवान् शिव के पास जाकर माफी मांगी जाए जो इस समय पंडित-घरों में विराजमान हैं। पंडितों/हिन्दुओं के घर जा-जाकर शासक जबार खां ने 'सलाम' किया तथा अपने किये की माफी मांगी। शेष मुसलमानों ने भी ऐसा ही करते हुए पण्डित घरों के द्वार पर जा-जाकर भगवान् शिव एवं पार्वती-माता को सलाम करते हुए माफी मांगी।कहते हैं, कुछ देर के बाद ही बर्फ का गिरना बन्द हो गया। तबसे 'हेरथ' के दूसरे दिन पण्डितों के घर जाकर गैर-हिन्दुओं द्वारा 'सलाम' करने की प्रथा/रीति जारी है।अब तो पंडित भी एक-दूसरे को इस दिन 'सलाम' कहकर अभिवादन करते हैं।

जबारखां की इस क्रूरता पर ताना कसते हुए आज भी कश्मीर में ये उक्ति प्रचलित है:-"वुछतोन यि जबार जंदह, हारस ति कोरुन वन्दह" अर्थात 'इस जबार फटीचर की औकात तो देखो,आषाढ़ में भी(प्रभु ने)जाड़ा कर दिया।'

अंत में अग्निशेखरजी की इन पंक्तियों को उद्धृत करना अनुचित न होगा: "शिवरात्रि, वास्तव में, कश्मीरी पंडितों का सबसे बड़ा पर्व है। यह पर्व इनके दार्शनिक, आध्यात्मिक, सामाजिक और सांस्कृतिक डीएनए/धरोहर का बहुमूल्य हिस्सा है। पारंपरिक दृष्टि से वे इसे विषम से विषमतर स्थिति में भी मनाते आए हैं और आज भी उसी श्रद्धानत भाव से मनाते हैं। इसे वे 'रीथ पालुन" कहते हैं अर्थात् घर में चाहे किसी की मृत्यु तक भी क्यों न हो जाए, वे अविच्छिन्न रूप से इस रीति का पालन करेंगे ही करेंगे। 'वटुक/गगरी' भरेंगे ही क्योंकि 'हेरथ' सृष्टि के कल्याण की रात्रि है। शिव और शक्ति के सम्मिलन की रात्रि है। दोनों के विवाह की रात्रि है।"

आशा की जानी चाहिए कि इस बार की शिवरात्रि कश्मीरी पंडितों के लिए सुख-समृद्धि का नूतन संदेश लेकर आएगी।

DR.S.K.RAINA

(डॉ० शिबन कृष्ण रैणा)

MA(HINDI&ENGLISH)PhD

Former Fellow,IIAS,Rashtrapati Nivas,Shimla
Ex-Member,Hindi Salahkar Samiti,Ministry of Law & Justice
(Govt. of India)
SENIOR FELLOW,MINISTRY OF CULTURE
(GOVT.OF INDIA)
WhatsApp No. 8209074186
2/537 Aravali Vihar(Alwar)
Rajasthan 301001
Contact Nos; +919414216124, 01442360124 and +918209074186
Email: skraina123@gmail.com,
shibenraina.blogspot.com
http://www.setumag.com/2016/07/author-shiben-krishen-raina.html